Panj. Ms.
8 H1

5971

427-Ms.

ਸਵੈੱਯੇ ਸੁੰਦਰ ਦਾਸ ; ਅਪੂਰਨ
ਅਸੰ॰ ਪੱਤਰੇ ॥ ਲ॰ ਭ॰ ੧੫ ਪੰ॰ਪ੍ਰ॰ਪ੍ਰ॰

ਹ॰ਲ॰

कोउ दतार घिसिघि कोऊ दतेंन नागि
धिकोऊ देत आरे कछु लाते सीस धुन्यो
[illegible] सुंदर कहत एक दीयो जिन राम नाम
[illegible] द आकहार कोऊ देख्यो है न सुन्यो है:
[illegible]दास [illegible] ॥ गुरु के अनंत गुन कापै कहे जा
हीं की तहे: भूमि हु मीरेनु की तार: आक ऊक
हत है मार हु आठारा कुमतिन को जो पात
है: मेघन की सो ऊ कूप निकही बिचारि
बूंदनि की संख्या ते ऊ आइकें बिलात हैं:
तारनि की संख्या सो ऊ कहीहें पुरान मांहि
रोमनि की संख्या पुनि जितने क गात है: सु
दर जहां लौ जंत सबही को आखें अंत गुरु के
अनंत गुन कापै कहे जात है: ॥२१॥
गुरु की तो महिमा अधिक है गोबिंद तें:
[illegible] गोबिंद के कीये जीव जात हैं रसातल को गुरु

उपदेससुनोछूटेजमफंधतें: गोव्यंद
केकीयेजीवब्रसिपरकरमनिकेगुरके
नीवाजेकुतोफिरतसुछंदतें: गोव्यं
कीयेजीवबूडत भवसागरमेंसुंद
गुरकाटेदुषधंधते: औरकुकहा
कछूकहतकेहूंवनापंगुरकीतामतमांस
धिमहेगोव्यंदतें: ॥२२॥ औसीकों
ननेटगुरदेवआगेराषियेः चिंतामनि
पारसकलपतरुकांमधेनऔरकुअने
कनिधिवारवारनाषिये: जोईकछूदेषि
येसुसकलबिनासवंतबुधिमेंबिचारक
रिबउअनिलाषिये: तातेंअबमनवचक
मकरिकरजोरिसुंदरकहतसीसमेल्हिदीनमा
षिये: वहोतप्रकारतीनोंलोकसबसोधिहेमनमें घे

कौंन भेटमसदेव आगे राखिये ॥२७॥
महादेव वामदेव रू [illegible] कपलदेव व्यास
देवसुकदेव जैदेव नामदेव गुरू रामानंदस
[illegible] कहिये अनंतानंद सुरसुरानंद कू
[illegible] दास देवगुरू रैदास कबीरदासस
[illegible]दास पीपादास धनादास कू [illegible]दास भाव
हीकी रेवगुरू सुंदर सकल संत प्रगट जगति
माहि तिसैं गुरदादूदास लागे हरि सेवगुरू
॥२८॥ गुरदेव सबै परि अधिक बिराजमा
न गुरदेव सबही तैं अधिक गरिष्ट है गुरदे
व दत्तात्रेय नारद सुषादि मुनि गुरदेव ग्या
न घन प्रगट बसिष्ट है गुरदेव परम आनंद
मय देखियत गुरदेव बर बरीयांन कू नारिष्ट है
सुंदर कहत कछु महिमां कही न जाय असे गुर
देव दादू मेरे सिर इष्ट है ॥२९॥ जोगीजैन

जंगमसंन्यासीवनवासी बोध औरकौ
ऊमेषपक्ष सब भ्रमभान्यौहै: तापस
कुवीस्वरै मुनीस्वरकवीस्वरऊसब नि
कौमतदेषितत्वपहचान्यौहै: बे
तंत्रसार सुम्रतपूरानसारग्रंथनिकौ
सोईहिरदै मांहिआन्यौहै: सुंदरकहित
कछमाहिमां कहीनजाय औसोगुरदेवदा
दूमेरैमनमान्यौहै:॥२६॥ जीतेहैंजु
कामक्रोधलोभमोहदूरिकीयेऔरसब
गुननिकौमदजिनिभान्यौहै: उपजैन
कोऊतामसीतत्वस्वभावजाकौसवहीमें
समतासंतोषिउर आन्यौहै: काहसु
नरागदोषदेतसबहीकौपोषजीवतहीं
पायोमोषएकब्रह्मजान्यौहै: सुंदरकहत
कछमहिमांकहीनजाइ औसोगुरदेवदादूमेरै

मनमान्यौं है शास्त्र ॥

रामहरि राम हरि बोल

सवा: तोस तीन्च रब्ज्ञांन प्रबीन अतपरीज
…रै मौल कू आ: पापु अम्बरनमला
…न्व पत्न मन गाइ गोबंद गून जीतज्रवा:
आयु ही आपु आज्ञांन नलनी बंध्यो बिनो
प्रभु बेमूष कै बारम्बुवा: दास सुंदर कहै प्र
भय दतौल है रांम हरि राम हरि बोले सुवा: ॥१॥
रे कतु लकतु बोलतोता: नफससै तांनक्षै
आपनी कै दकर ध्याडु नी मैं पस्याबाहि
गोता: हे गूनह गार जीसूनह हींकरत रहैया
है गामारत बफिरै रौता: जिन तुक्षै खाकसे
आजब पैदाकीया तु उसैं कूं करामो सहोता:
दास सुंदर कहै सरमत बहीस है लकातु लकातु
बोलतोता: ॥२॥ जीतुही जीतुही बोलतु
ती: आब कीबूंद आजूद पैदा कीया नैंन
मुष नासिका कारीसंग्रती: ध्यालआसा

इक्यावन ८ साखी गामहर राम हरि

करैउहीलीयेफिरैजागिकैदेषिक्याकरैस्तु
ती: मूलकुसबसमकौकामतेक्याकीयुा
बेगिदैयादकरिमरिनिपूती: दाससुंदरक
हैसरवसुपतोलहैजीतुहीजीतुहीवो
तुली: ॥३॥एकातुंएकतुंबोलमैनां
वलितुस्वादकेकदमकीयाक होईहरिसबू
गजारसबछोमफैनां: पारदिलदारदि
लमांहितूपादकरिहैतुजीपासतुंदेषिनैनां:
जानमाजानहैज्यंदकाज्यंदहै मसूनका
मसूनकछुसमझिसैनां: दाससुंदरक
हैसकलघटमैरहैएकतुंएकतुंबोलमैनां:
॥४॥ कानमैगयेतेकल
कानश्रैसेहोतमूंढ नैनकेगयेतैंकहानेन
ऐसेपाइहै: नासिकागयेतैंकहाना
सिकासूंगयलतमुखकेगयेतैकहामूष
[illegible] हाथकेग[illegible]हाथ

मनहर॥६८॥

ऐसौकांमह्योतपावकेगएतैंऐसेपाय
कलघाईहैः प्राहीतैंबिन्बारिवेधिसुंदरक
ह्यतोहिदेहकेगयेतैंऐसीदेहनहींग्रा
[illegible] ॥५॥ बारवारकह्योतोहिसावधा
[illegible]नहोहिममताकीमोटासिरकाहे
कौंधरतुहैः मेरोधनमेरोधाममेरोसुत
मेरीवांममेरेपसुमेरेगांम भुल्योंयोंफि
रतुहैः तुतौनपावानरौबिकायगई
बुधितेरीऐसोऋंधकुपगृहताम्मैंतुप
रतुहैः सुंदरकहतातोहिनैंकहूंनऋावै
लाजकाजकौंबिगारिकैंऋकाजकौंक
रतुहैः ॥६॥ तेरैतौंऊपेचपरयोगांठिऋ
तिघुरिगईब्रह्माऋाइछोरैंकौंतौछुटतनज
बहुः तेलसौंनजेइकीन्चीधरालपेट
रायेकूकरकीपूंछसूधीहोईनहीतबहूः
सासूदतसीपबहकीरीकौंगनतजातकह

कछुदिनबीतगयौसबहूं: सुंदरअग्या

नकैसौछमौनहिअनिमानन कसत

प्रानलगचेतमौनहीकबहूं: ॥७॥

बालूमांहितेलनहिनिकसतका...

पाथरनजीजैबहूबरसतघनहै:

केमध्येतैंकहूंधीवनहिपाईपुतकू

कसकेकुरैंनहींनिकसतकंनहै: सूनि

कौंमूगीजरेतैंहाथनपरतकछूऊसरके

बारेकछुउपजतअंनहै: उपदेसऔष

दकवुनविधलागेताहिसुंदरअसाध

रोगजनपौंजाकेमनहै: ॥८॥ बैरीघर

मांहितेरेजांनतसनेहीमेरदारासुतवि

ततेरोबोसियांहिगे: औरऊकुटंबलोग

लूटैंचहूंओरहीतेंमीगीमीगीबातकहि

तोसौंलपूटांहिगे: संकटपरैगोजबकौ

[illegible]

बिजांहिगे: सुंदरकहततातैंकू गोईप्रयन्चय
सुपिनैंकीनांईसबदेषत बिलाहिंगे:॥२६॥
जाइकेमंदिरमांहिमैंगरलोथिर होइगयातहे
...कीआसाकऊदिनिकी: पलपल
...जत घटतजातघरीघरी बिनसतबारक
हाबबरिनाछिनकी: करतउपाइकूठेलैंन
दैंनषानयानमूसाईतउतफिरेताकिरैही
मीनकी: सुंदरकहतमेरीमेरीकरिभूलौ
सठन्चंचलन्चपलमायानइकिनकिनकी:
॥१०॥अबकूंलैजाइकरिनादकीलबेरेपा
सिनैंनवालेजाइकरिकुपबसिकखस्यो
है: नथवालेजाइकरिबकुतसुंघावैफुल
ससनुंलेजाइकरिस्वादमहरूयौहै: न्चरम्रू
लेजाइकरिनारीसोंसयरग्वाकरैसुंदरकोऊक
साधगगनतेंकस्योहै: कामगगक्रोधगग
लोभगगमोहगगगगानिकीनगरीमैंजीव

आपयस्यौहै: ॥१०॥ पायौहै मनुषदे
औसरबन्यौहै आइ असौदेह बारबार
कहौकहांपाये: भूलतहैबावरेतू
बकैसपानौहो हरतनअमोलय
कौंठगाई पे: समझबिचारकरि
कौसंगत्यागगगनाजीदेखिकहूंमनन
भुलाई पे: सुंदरकहततोहिअबसाव
धानहोहिहरिकोभजनकरिहरिमैंसमाई
पे: ॥१२॥ घरीघरीघटतछीजतजात
छिनाछिन भीजतहींगरिजातमांटीकौसौ
मेलहै: मुकतिकैद्वारैआइसावधानू
क्युंनहोइ बारबारचढतन यापाकोसौ
तेलहै: करलेसुकृतहरिभजनअखंड
नरयाहीमैंअंतरपरै यामैब्रह्ममेलहै:
मनुषजनमयहजीतिजावैहारिअबिसुंदर

पे:

कहतयामैंजुवाकोसोप्यालहै: २०॥

देषतहीदेषतबुझायोदीरन्प्रायोहै: जोब
नकोगयोराजश्रोरसबजपोसाजश्रापुन
...आईफेरिदमांमोबजायोहै: २०॥
...प्यारलीयेनेननकीछलदीयेसत
बारनयेताकोतंबूसोतनायोहै: दसन
गयेसुमांनीदरवानईरकीयेजोमरीमरी
मुश्रोरबिछोनांबिछायोहै: सीसकर
कंपतसुसुंदरनिकास्योरिपुदेषतहीदेष
तेबुझायोदीरन्प्रायोहै: ॥१७॥ धीन्व
युवाकटिलैलटकीकंचकुपलटेन्प्रजहुंरे
तेजांमी: दंतजपामुषकेउपरे नषरेनग
पेसुषरोषरकांमी: कंपतदहसनेतसु
हपतिसंपतिजंपतिहेनिसजामी: सुंद
रन्प्रंतहु श्रौंनतज्योंनजज्योंजगवंतसुलौ
नहरांमी: २१॥ देहधरीपगजुमिमकेन
हिन्प्रोलबीपायुनिहाथिलईजु: श्रांषिकुं

नाकपरैमुषतैंजलसीसहलैकटिग्रीव
नईजु: ईसरकौंकबहुंनसंभारतदुष
परेतबआहिदईजु: सुंदरतौहुबिषैसुष
वंछितघोरगपुपैंबगौनगईजु: ॥
पापअमोलिकदेहपहैनरकौन बि...
करैहिलअंदर : कौमहुकीरोघहुमा
हहुलूटतहैदसहूंदिस इंदर : तूअ
बबांछितहैसुरलोकहिकालहूंपापप
रैसुपुरंदर : छाकिकुबुधिसुबुधिहीद
धरिआतमरामभजैकिनसुंदर : ॥१७॥
इंद्रिनिकेसुषचाहतहैसबपाहितैतबे
हुतेदुषपावे: ज्युंजलमैंझषमांसहि
लीलतस्वादबंध्यौजलबाहरिआवे
ज्यूंकपिमूठिनछाडतहैरसनांबसिबं
दिपरयौबिललावे: सुंदरक्यूंपहिले
नसंभारतजोगुरषाईसौकानबिंधावे:

॥१८॥ कौनकुबुधिभईघटअंतरतुं

अपनोप्रभुसौंमनाच्चोरै: चुलिगपौबि
षियासुषमेसठलालच्चलागिरहीअति
घोरै: ज्यूंकोऊच्चंनघारामिलाचतलेके
थरसौंनगफोरै: सुंदरपानरदेलअ
१९ कतीरलगीनवकाकतवीरै: १९॥
देषतकेनरसौंजितहैंजेसेंप्राहिआनूपमके
रीकोठंना: भीतरतौकछुसारनहीपुनिऊ
परिछीलकअंबरढंना: बोलतहैपरिनां
हिकछूसुधिज्यूंबबयारितेंबाजतकुंभां:
सिरहेकपिअंछिनमांहिसुपाहीतेसुंदरहै
तअन्वंभा: ॥२०॥ देषतकेनरदीसतहे
पुनिलकूनतौमसुकेसबहीहें: बोलत
चालतपीवतषातसुवैघरजैबनजातस
हीहै: प्रातगयेंरजनीफिरिआवतसूंदर
पौनिलमारबहीहे: औरतौलकूनआ
ईमिलेसूबपरकैकमीसिरसीगनहीहे: २१॥
प्रेतभयौकिपिसाचभयौकिनिसाचरसौंजि

तहीं तित कौं लै: तुम्म अपनी सुधि भूलि गयौ मु
षतैं कछू ओर की ओर ई बोलै: सोऊ ज़ु पाप
करै जु मरैं पचि बंधन तौ कबहूं नहीं षोलैं: सुं
दर जातन मैं हरि पावत सो तन नास की
ति मौलै: ॥१४॥ पेट तै बाहर होत ही
आइ कै मात पयोधर पीनौं: मोह बढ्यौ दिन
ही दिन और तरुन्न पौ त्रिय कै रस भीनो:
पुत्र पऊ त्र बंध्यौ परवार सु औसी हि भांति
गयौ पन तीनौं: सुंदर राम कौ नाम बिसारि सु
आप ही आप कौ बंधन कीनौं: ॥१५॥ मा
त पिता सुत भाई बंध्यौ जुवती कै कहें कहा
न करै है: चोरी करै बटपारी करै कि रषी
न जी करि पेट भरै है: सीत सहै सिर घाम
सहै कहि सुंदर सौं रन मांहि मरै है: बांधि
रह्यौ ममता सब सौं नर ता ही तै बांध्यौ ई बां
ध्यौ फिरै है: सूनां तेरी ही चानुरी तो हि लै
बोरै: [illegible] [illegible] और को गावत तेरो कै
तो

तौयरऔरईफौरे: आगिलगैसबहीज
हिंजाइसुरदमरीदमरीकरिजौरे: हाकिम
कौमरनांहिनसूकतसुंदरएकहिवारनिचो
[illegible]सरचैनहिआपुनषाइसुतेरीहीचाकरी
[illegible]बोरे:॥२५॥ करतपर
पंचइनपंचनिकैबसियसोपरदारारतजे
नआंनतबुराईको: परधनहरैपरजीवघा
करघातमदिमांसषाइ[illegible]वलेसनभला
ईकौ: हौपुगोहीसबजुबमुषतैनआवै
ज्वाबसुंदरकहतलेषालेतराईराईको:इ
हांतैकीपैबिलोसजमकीनतोहिआसउहांतो
नछुटैकछुराजपोयांबाईको:॥२६॥ दु
नियांकोदौरताहैऔरतिकौलीरताहैऔजरद
कौमोडताहैवटोहीसराइका: मुरगीकोमो
सताहैबकरीकोरोसताहैगरीबौकोआसता
हैबेमिहरमाईका: जुलमकोकरताहै
धनीसौनडरताहैदोजगकोभरताहैषजानां

बलाई क्राः होइ माहि साबत बमुषतोन
आवेज्वाब सुंदर कहत गुन्हगार हे सुदाइ क्राः
॥२७॥ करकर आपौं जब षरषर कोटवे
नारअरनर बाज्यो ढोल घरघर जांन
ददर दौर्यो जाइन नरक आगे दीन
बकत नैंनें कल्माल सान्यो हैः सरसर सोधे
घनतरतरतौ रैपात जरजरकाटत अधिक
मोद मांन्यो हैः फरफर फूल्यो फिरे मरक
रयेन मूछ हरहर हसत सुंदर सकान्यो हैः
॥२८॥ जनम सिरानों जाई भजन बेमुषसब
काहे कौं भवनकूप बिनमीच मारि हैः गहत
आबिद्या जो निसुकनलनी ज्यूं मूढ कर
म बिकर्म करत नहिं मरिहैः आपु ही तें जात
अंधनरक निबारबार अजहूं न सेक मून
मांहि अबक रिहैः दुषकोसमूह लषे कलो
किकैं नत्रास होइ सुंदर कहत नर नागयासि
[illegible]
राम

रामनामकोमकौंनकौंनतनमनधेरिधेरि
मारिये: कूठमूठहठत्यागिजागिजागिसुनि
पुनिगुनिग्यानध्यानध्यानवारिवारिलारि
ये: गहिताहिजाहिसेसईससीसखरनर
... बातहेततातफेरिफेरिजारिये: सुंदरद
रिधोईधोईधोईबारबारसारसंगरंगऔरंग
हेरिहेरिधारिये:॥३०॥ हरजो
गधरौनजातभयोहरिनामबिनांमुखधू
रियरे: सबसोगहरौछुनगातकियाचारि
चामदिनांमुखमुरिजरे: जरभोगपरौग
नयासेतिधियाअरिकामाकिनांसुखखीम
रे: मररोगकरौघनघातहिपायरेरांमतिनां
दुखदूरिकरे:॥३१॥ सुरग्यानगहेमतिहो
ईसुखीमनमोहतजेसबकाजसरे: करछो
नरहेपतिछोईसुखीरनलोहनजेतबलाज
परे: सुरतांनउहेरतिछेईरुषीतनछोहस
जेअबआजमरे: सुरथानलहैमतिधोईदु
खीजनवोहरजैंजबराजकरे:॥३२॥

राम
१३

सुजानचरित

मंदिरमाल बिलाइ इति रौज

ऊंट दमा मे दिनांई कि दो है॥ तात हूं मांत त्रमा सुत बंधव देषि घोयमर होत बिछोहै॥ फ्र... पंच सौं रा चिर सौं सरकार की पूतरी ज्यूं ... मो है॥ मेरी हीं मेरी करै नित सुंदर आषि लगो कहि कौंन कौं को है॥१॥ एमरे देश बिलाई त्य हैं गज एमरे मंदिर पे मरै थाती॥ एमरे मातपिता पुनि बंधव एमर पूत सु एमरे नाती॥ एमरीका मनि केलिक रैं नित एमरे सेवक है दिन राती॥ सुंदर वै सै हि छा कि गयो सब तेल जस्यों रु बुझी जब बाती॥२॥ भूलि कहै नर मेरी हीं मेरी॥ लौं दिन च्यारि बिरांम ली पौ सर तेरु कहें कछू हवै गी तेरी॥ जैसे हि बा पद दाग पे छाकि सु तैसे हि तूं ताजि है पलक फेरी॥ मारि है काल चपेट अचानक होई घरी ... कर्म ... की ढेरी॥ सुंदर लेन चले कछू संग

सुमुत्लिकहैनरमेरीहीमेरी: ॥३॥ कैयह
देहजराईकैछारकियाकिकियाकिकिया
किकियाहे: कैयहदेहजिमीमहियोदिदी
...किदीयाकिदीयाकिदीयाहै: कैयहदे
...दिनचारिजीयाकिजीयाकिजीयाकि
जीयाहे: सुंदरकालअचानकआयली
याकिलीयाकिलीयाकिलीयाहै: ॥४॥
संतसदाउपदेसबतावतकेसतबोसिरिसे
तनपेहे: तूंममताअजहूंनहिछाकतमोति
हंआयसंदेसदीयोहे: आजकिकालिकिच
लैठगिमुखतेरेहिदेषतकेतेगयेहे: सुंदर
कंयूनहिरांमसभारतयाजगमेकहिकौन
रहेहै: ॥५॥ देहसनेहनछाडतहैनरजां
नतहेसगहैथिरएहा: छीजतजाईघटै
दिनहीदिनदीसतहघटकौनितछेहा:
कालअचानकआइगहैकरढाहिगि
राईकरैतनषेहा: सुंदरजांनियहैनिःश्चे
धरिएकनिरंजनसोंकरिनेहा: ॥८॥

तूंकछूऔरबिचारतहैनरतेरोबिचारध
र्योंईरहैगो: कोटिउपायकरैधनकौहि
तआगलिख्योतितनोंईलहैगो: भोरकीसां
झघरीपलमांझसुकालअचानकआ[illegible]
गहैगो: रामजज्योनकीयोकुछसुं[illegible]
दरयोंपछितांईकहैगो: ॥७॥ आलिगयो
हरिनांमकौंतूंसठदेषिधौंकौंनसंजोगबन्यो
है: कालअचानकआईहैपांकैरदोषि
धौऊठोसौतांनोंतन्योहै: छारकौसबचां
मकौलूटैजुआदिकोंऐसेहिजीवहन्योहै:
कोऊनहोतसहायकौकूटैअनांदिकौसुंदर
पासौसन्योहै: ॥८॥ बीतगयेपिछलेस
बहींदिनआवतहैंआगलोदिननेरे: काल
महाबलवंतबडोरिपुसोघिरलोसिरऊपर
तेरे: एकघडीमहिमारिगिरावतलागततो
हिकछूनहिबेरे: सुंदरसंतपुकारकहैस

रंपुनितोहिकहुंअबरे॥१८॥ सोईरख्यो कलाकहागाफिहूकरितोसिरऊपरिकाल दहारे॥ धामसधूमसलागिरह्यौसबआज्या ...कतोहिपछारे॥ ज्यूंबनमैमृगकूदत ...चित्रकलैनपसौउरफारे॥ सुंदर कालमरैजिहकैनरताप्रभुकौंकहिकूंन संभारे॥१९॥ चेततकूंनअचेतनऊंघ नकालसदासिरऊपरिगाजे॥ रोकिरह्यैगढ केसबद्वारनितुंतबकौंनगलीह्वोइजाजे॥ आईअचानककेअगतैजबपाकरिकै पुनितोहिकूंलजे॥ सुंदरकौंनसहायकरै जबमुंमाहिमूकमरामरिबाजे॥२०॥ तुंअतिगाफिलहोयरह्यौसबकुंजरज्यूंकछू संकनआने॥ मापनहींतनमैंअपनैबल मंतभयौबिषयासुखमानै॥ योसतयातसबै दिनबीततअबनितकछूनहिजांने॥ सुंदर केहरिकालमहारिपुदंतउपाड्किंभस्थल

जानै॥१२॥ मातपिताजुवतीसुत बंधव आ
इमिल्यौ इनसौ सनबंधा॥ स्वारथ के अप
ने आपने सब सो पुलजोनतनौ हि न अंधा
करमबी करम करै तिनकै हित भार घ
त आपने के धां॥ अंत बिछोह भपौ सब ता
पुनि याही तैं सुंदर है जग धंधा॥१२॥
करत करत धंध कछू वनु ज्ञाने
अंध आवत निकट दिन आगिलौ चपा
कि दै॥ जैसे बाजतीतर कौं दाबत अ चांन
चक जैसे बक मछरी कौं लील तपाकि दै॥
जैसे मक्षका कौं घात मकरी करत आई जैसे
सांप मूष कौं ग्रसत गपाकि दै॥ चेतरे अचेत
नर सुंदर संभार राम असै तौ हि काल आई
लंगोट पाकि दै॥१०॥ मेरो देह मेरो गेह
मेरो परिवार सब मेरो धन माल मैं तौ ब हु
बिधि भारौ हौ॥ मेरे सब सेवक हुकम कौं

मेरैनांहिमेरीजुवतीकौंमेतौंग्रधिक
पियारौहौः मेरोवंसकुंवामेरेबापदा
दाग्रसेमपैकरतबमाईमेलौजगतग्र
हौहौः सुंदरकहतमेरोमेरोकरिजानै
१९ ऐसैनहिजानैमैतौकालहीकोचारो
हौः ॥१५॥ जबतैजन्मधस्योतबहीतेभू
लियस्योंबालपनमांहिभूलेसमभौन
सुषमेः जोबनमपाहैजबकामबसमयो
तबजुवतीसौंएकमेकभुलिरह्यौसुषमैः
पुत्रपउत्रभयेभुल्यौतबमोहैबांधिचिंता
करिकरीभूलौजानैनहिदुषमैः सुंदर
कहतसूठतीनोंपनमांहिभूल्यौभूल्यौ
जापुस्यौकालहीकेमुषमेः ॥१६॥
छतबैछतकालजागतसोवतकालचलत
फिरतकालकालज्योघेरघस्योहैः कह
तसुनतकालषातपीवतकालकालहीके
गालमांहिरहरहस्योहैः तातमातबंधू

कालसुतदारागृहकालसकलकुटंबकोंब

कालजालफस्योहै: सुंदरकहतएकरांम

बिनसबकालकालहीकोकृतकीयोरंच

तकालग्रस्योहैं जबतैजनमलेतबहीतें

आपुघटैमायतौकहतमेरौबमौहो

आजिऔरेकलिऔरदिनदिनहोतऔरदा

स्योदोस्यौफिरतषेलतअरुषातहै: बाल

पनबीत्योजबजोबनलग्योहैआईजोबन

ऊबीतैंबूढौमोकराढ्यौतहै: सुंदरकह

तऐसैदेषतहींबूझिगयोतेलघटिगयोजैसै

दीपकबुझातहै: ॥१८॥ सबकोउऐसे

कहैंकालहमकाटतहैंकालतौअषंकना

ससबकोकरतुहै: जाकेनपब्रह्मामुनि

होतहैंकयापमानजाकेनैअस्वरस्वरईद्र

ऊमरतहै: जाकेनेपासिवअरुसेषनागतो

नूलोककेऊककलपबीतेंलोमसपरतुहैं:

सुंदरकहतनरगरबगुमानकरेतुतोसगए

कदीपकत्येसरतुहैं

का

कालसौनबलअंतकौउनाहिदेषियतसबकौ
करतअंतकालमहाजोरहै॰ कालहीकोमरसु
निमागयौमूसापैकेंबरजहांजहांजाछुतहोतहै
वाकोगौरिहै॰ कालहैजपानकनैमीतसब
...लोकस्वरगमृत्युपातालमैंकालहीकौ
सारहै॰ सुंदरकालकौकालएकब्रह्महैअ
अंसासौंकालडरैजोईचल्यौउहिवोरहै॰
॥२०॥ बरषानपैतजैसैंबोलतबंमीरीस्वरषे
मनपरतकछूनैकछूनजांनिये॰ जैसैपूंगी
बाजतअषंमस्वरहोतपुनिताकमैंनअंतर
अनेकरागगांनिसे॰ जैसेकोऊगुमीकौन्व
ढावतगगनमांहितिाकूकीतौघूनिसुनिवैसे
हीबषांनिये॰ सुंदरकहतैसैंकालकौप्रन्वेम
हीवषांनिये॰ बेगराहिदयौसचूल्यौजाइअचिरजमांनिये॰
॥२१॥ मायाजोरिजोरिनररायतजतनकरिकर
तहैएकदिनमेरैकामआईहै॰ तोहितौमर
तोकछूबारनहिलागैसंगदेषीहीदेषतबलरूला

सौबिलाइहै: धनतौधर्यौहीरहैचलतनकौ
मीगहैरीतेई हाथनिजैसौआपौतैसौजाइहै:
कीलैसुकृतयुहबरियानआवैफेरिसूदरकह
तपुनिपीछैंपछताइहै: ॥२२॥ बावरौसौमन
यौफिरैबावरीहींबालकरैबावरेज्यूंदेखब[illegible]
गतबौरानौहै: मायाकौउपायुजानैमायाकीच्वी
तुरीठानैमायामैमगनअतिमायालपटांन्यौहै:
जौबनकेमदमातौगनतनकौऊनातौकामब
सिकांमनीकैहाथहीबिकान्यौहै: आतिहीम
यौबेहालसूकतनमांथैकालसुंदरकहतऐ
सौबौरकौदिवानौहै: ॥२३॥ ऋगौधनऋगौ
धामऋगौकुलऋगौकामऋगीदेहऋगौनाम
धरिकैबुलायौहै: ऋगौतातऋगौमातऋगे
सुतदाराभ्रातऋगौहितमांनिमांनिऊठोमन
लायौहै: ऋगौलैनऋगौदैनऋगैसूखबो
लैबैनऋगेऋगेकरिफैनऋगहीकौधायौहै: ऋ
गहींमैरतौभयौऋगहीमैंपचिगयोसुंदरकहत
सांचिकबहूंनआयौहै: ॥२४॥

क्रूरहाथीक्रूरघोराक्रूरस्रागेक्रूरदौराक्रूरगबं
ध्याक्रूरछोराक्रूरराजारानीहै: क्रूरीकापा
क्रूरीमायाक्रूरक्रूरध्यं थ्योयाक्रूरमुवाक्रूर
जीयाक्रूरीयाकीबांनीहै: क्रूरमासौवेक्रूरजा
[illegible]क्रूरमैक्रूरठा मागेक्रूरापीछैक्रूरलामैक्रूर
क्रूरीमांनीहै: क्रूरलापाक्रूरदीणाक्रूरया
पाक्रूरपीयाक्रूरसौदाक्रूरकीपातग्रेसाक्रूर
प्रानीहै: ॥२०॥ क्रूरसौबे ध्योहेल्यालताही
तेंग्रस्तकालकालबिकरालब्यालसबहीको
खातहै: नदीकोप्रवाहचल्योजातहैसमुद्रमां
हितैसैंजगकालहीकैमुखमेसमातहै: देह
कौममत्वताथैं कालकौजेमानतहैतानउय
जेतेवहकालकूंबिलातहै: सुंदरकहतय
ब्रह्महैसदाग्रखंड आदिमध्यिग्रंतएकसो
ईवरहातहै ॥२१॥ कालउपाव
तकालछपावतकालमिलावतहै ॥ हिमांटी:
कालहिलावतकालचलावतकालसिखाव
तहैसब[illegible] कालबुलावतकालजुला

वृतकाल मुल्तावृत है बन घाटी: सुंदर काल
मिटै तब हीं पुनि ब्रह्म बिचार पढ़ै जब पाटी:

।।२७।। ७७।।

बोलत है सुक हांगयौ पंषी: बैस्र
वुनां रसनां मुष बैसै हि बैसै हि नासिका बै[illegible]
हि अंषी: बैसै हि देहपरी पुनि दीसत ए[illegible]
नां सब लागत पंषी: सुंदर कौं कुंन जानि
पकै यह बोलत हौ सुक हांगयौ पंषी: ।।१।।
षेलि गयौ एक षेल सौं ष्याली: बोल
त चालत पीवत षात सु सींचत हौ कुंम कौं जे
से माली: लेत कुं देत कुं देषत रीझत तीरतता
न बजावत ताली: जानहि कर्म बिकर्म कीये
सब हे पुल देह परी अब गाली: सुंदर सो कित
कूं नहीं दीसत षेलि गयौ एक षेल सौं ष्याली:
।।२।। मात पिता जुवती सुत बंधव लागत है
सब कौं अति प्यारो: लोग कुटंब षरौ हित रा
षत होइ नहीं हमतैं कहुं न्यारो: देह सनेह त हो
लगां नहुं बोलत है मुख सबद उचारो: सुंदर
चे

अथ देह आतमा बिछोह कौ अंग: ३ इब छंद:

चेतनिसक्तिगईजबबेगिकरैंधरमांहिनीआरो:

॥३॥ रूपन्नकौतबहीलगदीसतजैलगबोल

तन्चालतत्रागै: पीवतषातसुनैंअरुदेषत

सोईरहैउठकैपुनिजागैः मातपितामईया

... वैतप्यारकरैंजुवतीगरिलागै: सुंदरन्चे

तानसक्तिगईजबदेषततांहिसबैंमरिभागे:

॥४॥ कौनभांतिकरतारकीयौहैस

रीरयहपावककैमधिदेषौपांनीकौगमावनौः

नासिकाश्रवननैनबदंनरसनबेनहाथपाव

अंगनषसिषकोबनावनौ: अजबअनूप

रूपन्चमकदमकऊपसुंदरसोनितअतिअधि

कसुहावनौः जा... हीछिनचेतनासक्ति

तबलीनहोईताहीछिनलगतसबनिकोअभा

वनौः ॥५॥ मृतिकाकौप्यंमदेहताहीमैंजुग

तिभईनाकिकानयुनमुषश्रवनबनायहैः

सीसहाथपावअरुअंगुलीबिराजुमांनअं

गुरीकैआगेपुनिनषभलकायहैः सुंदरकह

तजबचेतनांसक्तिगईवहेदेहजारिबारि

छारिकरिआयेहैः ॥६॥ देहतोप्रगटयहज्यों

१८

भ्रमविध्वंस

कै पिंडकी आनि बकर्षमुकबनुरमनत होनत

वरनजन ... हिवे ...

कीतौ हीजानिपत नैनकेऊरोमेमांहिऊं
कतनदेषियेः नाककेऊरोमेमांहिनैंकुनसु
बासलेतकांनकेऊरोमेमांहिसुनततनलेषियेः
मुषकेऊरोमेमांहिबचनउचारहोलजीभकुं
कौषटरसस्वादनबिसेषियेः सुंदरकहत...
कौंनबिधिजांनेताहिकारौ पीरौकाहू धारजा
तोकुंनपेषियेः ॥७॥ मापुतोपुकारिछातीकूटि
कूटिरोवतहे बापकूंकहतमेरौनंदनकहांगयौः
नईपाकहतमेरीबांहआजटूटिगईबहनक
हतमेरौबीरदुषदेगयौः कांमनीकहतमेरौसी
ससिरताजकहांउनततकालहाथमेंसिधोराहे
लयौः सुंदरकहतताहिकोउनाहिजांनिसके
बोलतहुतौसुयहछिनमेंकहांगयौः ॥८॥ रज
अरुबीरजकौप्रथमसंजोगभयौ चेतनाउस
कितबकोनभांतिआईहेः कोऊएककहे
बीजमाधिहीकीयौप्रवेसकिनहूंकपंचमास
पीछेकेंसुनाईहेः देहकौबिजोगजबदेषत
ही

हींहोयगयौतबकोऊकहै कहांजाइकैसमाईहै॥
पैंकीति ऋषीस्वरतपीस्वरमुनीस्वरऊसुंदर
कहतयहकिनहूंनपाईहै॥ ॥९॥ तबलौं
हीकूयासबहोतहै बिबधिभांतिजबलगघट
पूरहिचेतनाप्रकासहै॥ देहकेप्रासकूमनपैंरूपा
... किजातजबलगस्वासचलैतबलगआस
है॥ स्वासऊथक्यौहैजबरोवनलगेहैंतबसब
कोऊकहैपुतमयौघटनासहै॥ काहूनहिदे
ख्यौकिहिवोरकौनकहांगयौसुंदरकहतयहब
भौईतिभासहै॥ ॥१०॥ देहतौस्वरूपतौलौंजो
लौंहैअरूपीमांहीसबकोऊआदरकरतसनमां
नहै॥ टेढीपागबांधिबारबारहीमरौरैमूछबां
हउसकारैअतिधरतगुमांनहै॥ देसदेसहीके
लोकआईकैहजूरिहौहिबैठिकरितषतकहावे
सुलतानहै॥ सुंदरकहतजबचेतनासक्तिगई
जुहैदेहताकीकोऊमांनतनआंनहै॥ ॥११॥

॥ ६॥

जैंनकीयलहरीपलमेंछिनआधघरीघटिका
जुगईहै॥ जांमगयौजुगजांमगयौपुनिसांझगई

तबरातिनईहै: आजिगई अरु कालि गई परसों। तरसौं कुछ और वईहै: सुंदर असेंहीं आयु गई त्रसनां। दिनहीदिन होत नईहै: ॥२॥ कनहीकनकौं बिललातफिरै सब जाचत है जन ईजनकों: तनहीतन कौं अति सोच करै नर खात रहै अनहीं अनकौं [illegible]

त्रस्नां।

नहीं मन की वृस्नां न मिटी पुनि धावत है धनही धन कौं: छिनहीं छिन सुंदर आयु घटी कबहूं न गयो बनहीं बनकौं: ॥३॥ तेरी तो भूषन कांहूं न गौगी: जौ दस बीस पचास न पै सत होंहि हजार तौ लाख मंगौंगी: कोटि अरब्ब खर्ब्ब असंख्य पृथ्वीपति होंन की चाह जगौंगी: स्वरगपताल कौ राज करौं त्रस्नां अधिकी अति आगि लगौंगी: सुंदर एक संतोष बिनां सठ तेरी तो भूषन कांहुं न गौंगी: ॥४॥ लाय करोरि अर्ब्ब खर्ब्ब निनी लिय अन्न हांल गया टी: जोरि हीं जोरि भंडार भरे सब औररही सुनि मीत रदारी: तौहू न तोहि संतोष भयो सब सुंदर ते त्रसनां नहि काटी: सूझत नां तिन कालसदा सिरमारि

कै

कै धायमिलाइ है माटी: ॥४॥ सूमलीयेंदस
हुंदिस दौरततातहितैं नं कवकुं नअधेहै: सूबन
मारनरैंनहिकैसैंकुं जो धन मेरकु मेरलौंपहै:
तुं अबआगेही हाथमसारततातहितैं हाथकछून
हिअहै: सुंदरक्यां नहितो अकरैंनर धाइ हिआइ
परदौइकसहै: ॥५॥ सूमनचावतरंक हिराज
हिसूमनचाइकैं बिक्षु बिगोई: सूमनचावत
इंद्रसुरासुरऔरअनेकजहांलगजोई: सूमनचा
वतहै अधकूरधतीन कुंलोकगनैंकहाकोई:
सुंदरजाइतहांदुषहीदुषज्ञांनबिनांनककूंसु
षहोई: ॥६॥ हेत्रलाअजकूंनहीधायी: पे
रपसारिदीयौजितहीतितमैं मद मूप कितीयुक
धायी: वोरनछोरकछूनहिआवतमैंवरकूसां
तिजलीबिधिमांयी: देषतदेहमयौ सबजीरन
तूंनितनौतलआहिअद्यापी: सुंदरतोहि सदा
समझावतहे त्रस्नाअजकूंनहिधापी: ॥७॥
हे त्रस्नांअजकूंनअधांनी: तीनकुंलोकअहार
कियौफिरसातसमुद्रपीयौसबपांनी: और

स्वै

जहांतहांताकतमोलतकाछतग्रासिमरावृतप्रा

नीः दंतदिषावतजीभहलावतयातीतैंमैंपलमां

इनजांनीः सुंदरषातजयेकितनेदिनहेतृस्नां

अजहूंनअघांनीः ॥८॥ हेतृस्नांकहूंछे

हनतेरौः पावपतालपरैंगयेनीकासिसीस

गयौअसमांनअघेरौः हाथदसौंदिसकौं[illegible]

पुनिपेटभरैंनसमुद्रसमेरौः तीनहूंलोककली

पेमुषभीतरिआंषिकुंकांनबंधेचहुंफेरौः सुं

दरदेहघस्यौअतिदीरघहेतृस्नाकहुंछेहनतेरौः

॥९॥ हेतृस्नांअबतौकरितोषाः बादिबृथा

भटकैनिसबासुरिदुरिकियौकबहूंनहिधोषा

ः तूंहतयारनिपापनिकोभनिसांचकहूंम

तिमांनहिरोषाः तोहिमिलेतबतैंमयोबंधन

तूंमरिहैतबहीहोइमोषाः सुंदरऔरकहांक

हियेतुहिहेतृस्नांअबतौकरितोषाः ॥१०॥

हेतृस्नांअबतूंमतिमोलैः क्यौंजगमांहिफिरे

कषमारतस्वारथकौंनपरीजिहिजोलैः ज्यूंहरि

हाइगऊनहींमांनतदुघदुल्लोकछूसोपुनिछोलैः

तूं

तूं अतिचंचलहाथिनआवतनीकासिजाइ
नहीं मुखबोलैः सुंदरतोहिकलौबरकेतकहे
रह्यांअबतूमतिडोलैः ॥१२॥ हेरह्याक
हिकैनुहियाक्यौः तैंकौंकांनधरीनहीं ए
कूकूंबोलतबोलतपेटहियाक्यौः हौंकोकु
[illegible]नाइककूंजबतैंतबपीसतहीसबफाक्यौ
ः केतकद्यौसजपेपरमोघततैंअबआगैही
कौंरचहोक्यौः सुंदरसीषगईसबहीचालि
हेरह्यांकहिकैतोहिथाक्यौः ॥१२॥ हेरह्यां
तोहिनैंकुनलाजाः तूंहीअमाइप्रदेसपगावतबू
मतजाइसमुद्रजीहाजाः तूंहीअमापयहारचवछ
वतबादिवृथामरिजाइअकाजाः तैंसबलो
गनचाइनचीबिधिनांचकीयेसबरंककुराजाः
सुंदरतोहिदुषायकहूंअबलैंहेरह्यांतोहिनैंकु
नलाजाः ॥१३॥ ११०॥

पावदिये चलनैंफि
रनैंककूंहाथदीयेहरिकृतकरायौः कांनदीये
सुनियेहरिकौजसनैंनदीयेतिनिमागदिखायौः
नांकदीयौमुखसोभितताकरिजीभदईहरि

कौगुनगायौ: सुंदरसाजदीयौपरमेस्वरयेटदी
यौपरियापत्नगापौ: ॥१२॥ कूपभरै अरुबापु
भरेपुनिताल भरैबरषाऋतुतीनौ: कोठीभर
घटमाटभरैघरहाटभरेसबहीभरलीनौ: अदक
पासबुषारभरै परियेटभरैनबमोदरहीनौं: सुंदर
रीतौहीरीतौरहैयहकौंनषमापरमेस्वरकीनौ
किधौयेट चूल्हा किधौ भागी कि
धौंभारआहिजोईकछू झौंकियेसुसबजरीजा
तुहै: किधौंपेटथल कि धौबांबी कि धौसागर
हैजितौजलपरैतितौसकलसमातुहै: कि
धौपेटदैंति किधौभूतप्रेतराषिसहैषावुषां
वकरैकछूनैकुनअघातुहै: सुंदरकहत
प्रभुकौनयापलगायौयेट जबतेजनमभयौत
बहीकौषातुहै: ॥३॥ बिग्रहतौ बिग्रहक
रतअतिबारबारतंनपुनितनुकनकबद्धअ
घायोहै: घटनभरतकौंहीघटेरोईरहतनि
तसरीररिराईमैंतौकछूवनषायोहै: देहदे
हकहतहीकहतजनमबीत्यौयंझयंमकाजे

नि

निसदिन लल्लचायौ है : मुद्गरलौं गिलत
लतन घूपाति होई सुंदर कहत बपु कौं नया
यौ है : ॥७॥ एक पेट काजैं एक एक आ
पाजी पेट काज कोतवाल कौं आधीन होत
ए बलसु तौ सिकदार आगैं लीन है : सिकदार
दीवान कै पीछैं लग्यौ मोलै पुनि दीवान कूं जाइ
पातिसाह आगौं दीन है : पातिसाह कहै आप
दाइ मुझैं और देइ पेट ही पसारै न ही पेट बसि
कीन्हा है : सुंदर कहत प्रभु क्यूं कूं नाहि भरै पेट
एक पेट काज एक एक कौ आधीन है : ॥८॥
तैं तौ प्रभु दीयौ पेट जगत नचायौ जिनि पेट ही कै
लीयैं घर घर द्वार फिरयौ है : पेट ही कै लीयैं हा
थ जोरि आगैं ठाढौ होइ जोई जोई कहै सोई
सोई उनि कस्यौ है : पेट ही कै लीयैं पुनि मेघ सी
त घांम सहै पेट ही कै लीयैं जाइ रन मांहि मर्यौ
है : सुंदर कहत इनि पेट सब कीये भांड और
गैलछूटी यहि पेट गैल पर्यौ है : ॥९॥ पेट
सौ बली जाकै आगैं सब हारि चलै रावन असूर के
ने

१ए कोकु ही पा तौ

पेटजीतिजीयेहैः कोऊबाघमारतबिदा

कौगु जरकौंऔसेसूरबीरपेटकाजेप्रानदीयेहैः पीपरि

तरे ॥मन्त्रसाधतआराधतमसानजाइपेटआ

गंमरतनिऊरऔसेहीयेहैः देवताऔरस्वरभूतप्रे

ततीनौंलोकपुनिसुंदरकलतप्रभुपेटजेरकीयेहैः

॥७॥ प्रातहीउगतजबपेटहीकीचिंतातब

कोऊजातआपुआपुनेअहारकौंः कोऊअन्न

खातपुनिआमीषभषतकोऊकोऊघासचरत

चरतकोऊदारकौंः कोऊमोतीफलकोऊबास

रसपयांपानकोऊपौनपीवतभरतपेटभारकौंः

सुंदरकलतप्रभुपेटहीभ्रमायसबपेटनुमतदीन्हो

हैजगतहौंनआरकौंः ॥१०॥ पेटसौंऔरनहीकोऊ

पापीः पेटहीकारनजीवतलैबकुपेटहीमासन्न

षेरूस्वापीः पेटहीलेकारिचोरीकराखतपेटहीको

गगरीगहिकापीः पेटहीपासिगरेमहिमारतपेट

हिमारतकूपकुंबापीः सुंदरकाहेकौंपेटदीयोप्र

भुपेटसौंऔरनहीकोऊपापीः ॥११॥ औरनकौं

प्र

प्रभुपेट दीयौतुम्हतेरे तौ पेट काहूं नहीं दीसे: ए
ऊटकाइ दीये दसहूं दिसकौ ऊंकरां घतकोकु
कयीसे: पेट हिकारन नाचत है सबज्यूंघर ही
घरनाचतकीसे: सुंदर आपुनआकु नपीवकूँ
अजारी ईनकुं परिरीसे: ॥१७॥ पेट
नकुतौ तौ प्रभु बैठि हमरहते: काहेकौ काहू
कै आगे जाइ कै आधीन होइ दीनदीन बचन
उच्चार मुखकहते: जिनकै तौ मद अरु अब
गुमान अतितिनके कठोर बचन कबहूं न स
हते: तुम्हारेई भजन सौं अधिक लेलीन अति स
कलकौ त्याग कै एकंत जाइ गहते: सुंदर कहत
यह तुम्हही लगायोपाप पेट नकुतौ तौ प्रभु बैठि
हमरहते: ॥२२॥ पेट ही कै बसि प्रभु सकल
जिहान है: पेट ही कै बसि रंक पेट ही कै बसिराव
पेट ही कै बसि औरखान सुलतान है: पेट ही कै ब
सिजोगीजंगम सन्यासी सेष पेट ही कै बसि बन
बासी आतपांन है: पेट ही कै बसि रूष मुनि
तपधारी पेट ही कै बसि सिधसाधिक सुजान

सुंदरकहतनाहिकाहूकोगुमानरहैपेटहीमें
बसिप्रभुसकलजिहानहै॥१२॥ १२२॥

लोहनि
चिंतकरैमतिचिंतहिचंचदईसोईचिंतकरैगो॥
पावपसारपस्यौकिनसोवतपेटहीयोसोईभरै
गौ॥ जीवजितेजलकेथलकेपुनिपाहन
मैंपहुंचायधरैगो॥ भूषहिभूषपुकारतहैन
रसुंदरतूंकहाभूषमरैगो॥२॥ धीरजधारि
बिचारिनिरंतरितोहिरच्यौसुतौआपुहीअैहै॥
जेतकभूषलगीघटप्राणहितेतकतूंअनपासही
पैहै॥ जौमनमैंहट्लांकरिधावततौतिहूंलो
कनषातअघैहै॥ सुंदरतूंमतिसोचकरैकछु
चंचदईसोईचूंनिकूंदेहै॥३॥ नेकुनधी
रजधारतहैनरआतुरहोईदसोंदिसधावै॥ ज्यूं
पसुषेचितुडावतबंधनजोलगनीरनआवेहि
थावै॥ जानतनांहिमहामतिमूरिषजाधरि
धनीपहुंचावै॥ सुंदरआपकीपीगा

कह्यौनपर

यासरीरताहिज्यौं [illegible] नतहैसुंदरकह
दैवीपुत

तयामैंकोनसुषबास [illegible] ॥१॥ जासरीरमांहि

तूंअनेकसुषमांनिरह्यौताहिनंबिचारियामैंकोन

बातनलीहै: मेदमजामासरगरगनिमांहिरक्त

पेटहूंपिटरीसीमैंगैरगैरमलीहै: हाडनिसौं

मुषमढ्यौहाडहीकेनैंननाकहाथपांवसोऊसब

हाडहीकीनलीहै: सुंदरकहतयाहिदेषिजिनिभू

लेकोईभीतरिभंगारिभरीऊपरतैंकलीहै॥२॥

हाडकोपिंजरचांममढ्यौसबमांहि

भस्यौमलमुत्रबिकारा: धुकरलारपरेमुषतैंपु

निव्याधिनहैसबओरकुंद्वारा: मासकीजीभ

सौंषाइसबैकछूताहितैंताकोहैकौनबिचारा:

ऐसेसरीरमेंपैसिकेसुंदरकैसेंकेकीजियेसुचआ

चारा॥३॥ काहेकौंतूंनरव्यालतटेठौ: थूकलौ

रभरयौमुषदीसतआंषिमेंगीजरनाकमेंसोठौं:

औरऊधारमलीनरहैंअतिहाडकेमासकेंभीतरि

बेठौ: ऐसेसरीरमैंबासकीयौतवएकसेदीस

तबांभनठेठौ: सुंदरगरबकहाइतनेपरकाहेकोर

हूंनरचालतरेछौकाहूकोप्रुनीप्रादि बिचारत
नांही: जादीनगरमें जोगभयौजबतादिनहूं
दछियाकुतीतांही: द्वादसमांसप्रघौमुपकू
लतबूमिरह्योपुनिवाएसमांही: तारजबीज
कीयहदेहसुहूंप्रबचालतनिरषतह्रोंहीं:
सुंदरगरबगुमानकहीसरप्रापुनीप्रादबिचा
रतुनांही: ॥७॥
देहतौमलीनप्रतिबहुतबीकारभरीताहूमां
हिजराव्याधिसबदुषरासीहै: कामनीगे
देहमांनोकहियेसघनबनउहांकोऊजाइसु
तौभूलिकेपरतुहै: कुंजरहैगतिकटिकेहरीको
भयजामैबेनीकालीनांगनीकूंफनकोधरतुहै:
कुचहैपहारजहांकामचोररहैतहांसाधिकैकटा
छसबदनषांडेषाउंरीकरतुहै: बानप्रांनकोहर
तुहै: सुंदरकहतएकप्रौरडरप्रतितामैंराक्षस
बदनषाऊंषाउंहीकरतुहै: ॥१॥ बिषहीकी
भूमिमांहिबिषकेप्रंकुरभयेनारीबिषबेलि
बचीनषसिषदेषियेः बिषहीकेजरमूलबि
ष

सहीकेमारयातबि[illegible] कहौनपरफल्ला [illegible]बे
सेबियेः बिंबकेतंतूपसेनोपुर[illegible]ायेआंटीमारिस
बनरवृक्षकूपरल्लपरेहीलेषिमेःसुंदरकलतकोऊ
एकतरुबांचिगयेतिनकैंतोककूंलताल्लगीन[illegible]
हीयेसियेः॥२॥ उदरमैंनरककनरकअघधार
निमेंकुचनमेंनरककनरकमरीछातीहैः कंठमैं
नरकगाल्लचिबुकनरकबिंबमुखमैंनरकजी
नल्लारफूंन्चुचातीहैः नांकमेनरककआंखिकां
नमैंनरकबहूहाथपावनषसियनरकदिया
तीहैःसुंदरकलतनारीनरककौंकुरुयहनरकमैं
जाइयरैसोईनरकपातीहैः॥३॥ कोमनीको
अंगअतिमालिनमहाअसुधरोमरोममालिन
मालिनसबद्वारहैः हाडमांसमजामेदचांमसौं
लपेटराषेगैरगैररक्तकेभरेई[illegible]नकारहैः मुत्र
ऊपुरीषआंतएकमेकमिलिरहीऔरऊउदमां
हिबिबधिबिकारहैः सुंदरकलतनारीनषसि
षव्यदरूपताहिजेसराहैंतेतोबमेईगवारहैः
॥४॥ रसिकप्रियारसमंजरी

म

[illegible]

औरस्वंगारहि... ...राईकरिबकुतबिधि
बिषैबनाईऔरानि... ...बिषयनिकौंप्यारीजागे
मदनप्रचंडसरांहैनखसिखजारीः ज्यूं रोगीमिष्टा
नखाइरोगहिबिस्तारेः सुंदरयूलगतिहोइजुतौरसि
कप्रियाधारेः॥५॥ रसिकप्रियाकैसुनतहीउपजे
बहुबिकारः जोयामांहैचितदेवहैहोतनरख्वार
ः वहैहोतनरख्वारबारतौकछुवनलागेः सुनत
बिषयेकीबातलहरिबिषहीकीजागेः ज्यूं को
ऊअंधेकुतोलतीपुनिसेजबिछाईः सुंदरऔसी
जोनिसुनतरसिकप्रियानाईः॥६॥ई॥वदा

औरपुनि
नदोषदेखेपरकेऔगुनपयेषेदु ष्टकौसुभावउठिनिंदा
ईकरतुहैः जैसैकाहूमहलसवांरिराख्यौनीकैकरिकी
रीतहांजाइछिद्रढूंढतफिरतहैः भोरहीतेसांझलगसां
झहीतेंभोरलगसुंदरकहतदिनऔसेहीभरतहैः पाव
कैतरोसकीनसूकैआगिमूरखकौंऔरसौंकहतसि
रऊपरिबरतुहैः॥१॥ घातऔरनख

मधुरकैः खगाकोन: मनवरछैः ददबदंदद

रहै उरअंतर दुष्ट न... दुष्ट कौनपर त...ति मीठा: लौट तपोटत ब्याघ्र हि ज्यूं नि... पेरी पूत ज... ता है पुनि ताहि की पीवी: ऊपरतैं छिरके जल आनि सु हेल गाव तजारि अंगीठी: या महि कर कछू मति जांन हूं सुंदर आपुनी औ सिन दीठी: ॥२॥ दुष्ट करन ही कौन बुराई: आपनें काज संवारन के हित और कौ काज बिगारत जाई: आपुनौं कारज होउ न होउ बुरौ करि और कौ मारत जाई: आप कुं षोवत औरकुं षोवत षोई दुवौ घर देत बहाई: सुंदर देषत ही बनि आवत दुष्ट करन ही कौन बुराई: ॥३॥ ज्यूं नर पोषत है निज देहहि आन बिनास करै तिहि बारा: ज्यूं अहि औ र मनुष्यहि काटत वाहि कछू नहि होत अहारा: ज्यूं पुनि पावक जारि सबै कछु आपकुं नास जनावौ निरधारा: त्यौं यह सुंदर दुष्ट सुभावहि जांनि तजौ किन तीनि प्रकारा: ॥४॥ दुरजन संग न लौ जिनि जांनौ: सरप मसे सुन ही कछु ताल कवी छुटि गै सु भलौ करि मांनौं: सिंघ झू षाई तो नांहि कछू कर जो गज मारत तौ न हि हांनौं: आ

तथा
गोजरोजलबूं काहू को ईगिरोकछू मैम
लिख्योनो: सुंदर है सबहींदुषदुरजन
संगमलोजिनिजोनों: ॥५॥ १०॥ १२४१॥

हटाकेहट

क्रिमनराषतजुछिनछिनसटक्रिसटक्रि. च
फूंओरआबजातहे: लटक्रिलटक्रिलल चाई
लोलबारबारगटक्रिकरिविसफलषातहे:
झटक्रिझटक्रितारतोरतकरमहींनमटक्रिन
टक्रिकुंनैकुनआघातुहे: पटक्रिपटक्रिसिर
सुंदरजुमांनीहारिफटक्रिफटक्रिजाईसुषोंको
नबातहे: ॥१॥ मनकीप्रतीतिकोऊकरैसु
दिवानोहै: पलहीमेमरिजातपलहीमेजीव
तहेपल हीमेंपर हाथदेषतबिकानोंहै: पल
हीमेंफिरैनवषंडब्रह्मंडसबदेष्योअदेष्योसुतौयातें
नछिछानोंहै: जातोंनहिजानयतआवतो
नदेषेकछूऔसीसीबलाईअबतासौंपरयो
पानोंहै: सुंदरकहतयाकीगतिकूंनजांनीपरै
मनकीप्रतीतिकोऊकरैसुदिवानोहै: ॥२॥

मन

मनकौस्वभावकछूकह्यौनपरतुहै: धेरियेतौ
धेरयौरहैनआवतहैमेरौपूतजोईप्रमोधियेसु
कौननधरतुहै: नीतिनअनीतिदेयेसुमनअ
सुनयेबेपलहीमैहोतीअनहोतीहूंकरतुहै:
गुरकौनसाधकौनलौकबेदकीसंककाहूकौन
मांनैनतौकाहूतैंमरतहै: सुंदरकहततारिहिधी
जियेसुकौनभांतिमनकौस्वभावकछूकह्यौन
परतुहै: ॥२१॥ मनसौनकोकलमदेख्यौअ
पराधीहै: कांमजबजागैतबगनतनकोकसा
ध्रजानैसबजोईकरिदेषतनमाधीहै: क्रोधज
बजागैतबनैकुंनसंभारसकैअैसीविधिमूल
कीअविद्याजिनिसाधीहै: लोभजबजागैत
बदपतिनकूंहीहोइसुंदरकहतईनिअैसेहीमेब
धीहै: मोहमतवारौनिसदिनहीफिरतरहैमन
सौनकोकलमदेख्योअपारधीहै:॥२२॥ मन
सौनकोकलमजान्योदगाबाजहै: देषिबेकौदौ
रैतौअटकिजाइवाहीठौरसुनिबेकौदौरैतौनधा
पैमहाराजहै: भोगक्रूकौंदौरैतौनृपतिनक्यौं
हीहोइसुंदरकहतयाहिनेकहूनलाजहै: का

कूकौनकछोकूरै आपनीहीं टेकपरैमनसौन
कोऊ हमजान्योंदगाबाजहै॥५॥ मनसो
नकोऊ है अधम याजगतमैं॥ देखैनकुगौर
गौरकलतआरकी औरलीनजाइहोतहाकमास
ऊरगतमैं॥ करतबुराईसर आौसरनजानैकछू
घकाआइदेतरामनामसोलगतमै॥ बाहेसब
अखरबहापेसूबनेबजिनिसुंदरकहतदिन
थालतजगतमे॥ और ऊअनेकअतरायुहीकर
तरहै मनसौनकोऊ है अधम याजगतमैं॥८॥
मनसौनकोऊयाजगतमां हिरिंदहै॥ जिनिगगे
संकरबिधसताइंद्र देवमुनिआपनोऊअधप
तिगयौ जिनिवंदहै॥ और जोगीजंगमसंन्यासी
सेषकौनगनेसबहीकौंगतगगावैनसुछंदहै॥
तापसऊबीस्वरसकलपचिपचिगएकाहूकैन
आवैहाथअैसौयापैबंदहै॥ सुंदरकहतबसकौ
नाबिधि कीजेताहिमनसौनकोऊयाजगतमां
हिरिंदहै॥७॥ मनहीकेनचायेसबजगतनच
तहै॥ रंककौनचावैअभिलाषाधनपाईवे
कीनिसदिनसोचकरिअैसेहीपचतहै॥

राजा हिन त्यागे सब भूमि ही कौ मान लै वृक्षौ रहीं न त्यागी जोई देह सौं रत्न तरे : देव लोकइ स्वर्ग सिद्ध पुन गस कल लोक कीर्ति पसु पं छी कहू कैसे के बच्च तरे : सुंदर कहत कारू संत की कदीन जाइ मनके न त्यायसब जगत नचत रे : ॥२०॥   केतक दौं

सनय संसम भावत नेकुं न मान तले मन दौं दूरू चूलि रह्यौ विषियानु बसमे कछू और न जा नतहै सबदौं दु : आपिन कानन नाक बिना सिर हाथन पाव नही मुष यौं दु : सुंदर ताहि गहै कोउ कूं करि नीकसि जाइ बमो मन लौ दु : ॥२१॥ दौरत है दस हूं दिस कौ सर बाइ लगी तब तै नयौ बै मो : लाजन कानि कछू न हिराष तसील सुभाव जी फोरत मैं मो : सुंदर सीष कहा कहि देइ नि दैन ही बान छि दैन ही गै मो : लौ लन लगि गिमयौ मन बीच रिबार ह बाट अगम रहयै मो : ॥२२॥ स्वान कहूं कि सिगाल क हौं कि बिमाल कहौं मन की मति तैसी : छेछ कहौं कि धौ भूम कहौं कि धौ नाम कहौं कि नमाई दूजैसी :

चौरकूं हौं बटमारकूं हौं ठगजारकूं हौं भ्रममां
कूं कैसी: सुंदर और कहा कहिये अबूझ याः
मनकी गति दीसत अैसी: ॥११॥ कैबर तूं
मनरंक भयौ सब मांगत भीषदसौं दिस भूल्यो:
कैबर तैं मन छत्र धर्यो सिरि कांमनि संगि रहि फो
रनि फूल्यो: कैबर तूं मन छीन भयौ अति
कैबर तूं सुष पाइ र फूल्यो: सुंदर कै बर तोहि
कह्यो मन कौं न गली कि हि मारग भूल्यो:
॥१२॥ इंद्रिनि के सुष चाहत है मन जाल न
लागि भ्रमै सगपौ ही: देषि मरीचि भ्रम्यौ ज
लपूरण धावत है मृग मूरष ज्यौं ही: प्रेत पि
साचनि साचर भोलत भूषमरैन हि धायत
कूं ही: बायु बघूर हि कौं न गहै कर सुंदर दौ
रत है मन त्यौं ही: ॥१३॥ तूं मन कूं न हि आ
पु सम्हारे: है सब कौं सिरमौर तत छिन जौ
अपनि अंतर ग्यांन बिचारे: हाथि कुबधि भ
जै भ्रगवंत हि आपु तिरै पुनि औरकौं तारे: सुं
दर तो हि कह्यौ कित नी बर तूं मन कूं न हि आ
पु संम्हारे: ॥१४॥ रे मन तूं भ्रमि बौ कि नि

हसमै: कौनसुमावपरयौउविदौरलक्रमक्त
हसकिवचौरलहामै: ज्यूंत्रमकीहथनीहग
देसतत्रातुरहोइपरैगजश्रामै: सुंदरतोहिस
दोसमऊवततएककूसीसलगीनहीरामै: बा
दिबृथात्रटकैनिसवासुरिरेमनतूत्रमिबौकि
नहसमै: ॥१५॥ जोमननारीकीश्रोरनिहार
ततौमनहोतहैताहिकौरूपा: जोमनमायुन
काहूसौंक्रोधकरैजबक्रोधमईहोइजातत
रूपा: जोमनमायाहिमायारटैनिततौमनबू
मततमायाकेरूपा: सुंदरजोमनब्रह्मबिचार
ततौमनहोतहैब्रह्मसरूपा: ॥१६॥
कबहूंकहसिउठैकबहूंकरोइदेतकबहूं
बकतकहूंश्रंतहूंनलहिये: कबहूंकपा
पुतौश्रघाइनहींकहूंकरिकबहूंककहैंमे
रेकछूनहींचहिये: कबहूंश्राकासजाइ
कबहूंपाताजजाइसुंदरकहततातहिकैसे
करिगहिये: कबहूंकश्राइलगैकबहूं
उतरिजाएभूतकेसोचिहनकरैश्रैसौमनक
हिये: ॥१७॥ कबहूतौमायकौपरेवा

मनकोअंग

करिदिखावै मनकबहूंक धूरि केन्वोवर करी
लेतहै: कबहूं तो गुटि का उछार तसा कास
वो रकबहूंक रातेपीरे रंगस्यामसेतहै: कबहू
तो सांबकूं उगाइ करिमछीकरै कबहूंतो
सासधारनूदेकरिदेतहै: बाजीगर कोसोख्या
लसुंदरकहतमनसदाई भ्रमतरहै असो ही
उप्रेतहै: १८॥ कबहूंक साधहोत कबहूं
चोरहोत कबहूंक राजहोत कबहूंक रंकसौं
कबहूंक दीनहोत कबहूं गुमानीहोत कबहूं
कसूधौहोत कबहूंक बंकसो: कबहूंक का
मीहोत कबहूंक जतीहोत कबहूं निर्मलहो
त कबहूं कपंकसो: मनमोसरषन्औसोसुंदर
फटिकजैसो कबहूंक सूरहोत कबहूं मयंक
सौ: ॥१९॥ हाथीकोसो कानाकिधौं पीपर
कौ पान किधौ धजाकौ गमान कहाथिरि न
रहतहै: पांनीकोसो घेर किधौं पौन गर जैर
कि

किधौंचक्रकोसौफेरकोउकैसैंकैगहतहै॥ अरहटमालकिधौंचरषाकौष्यालकिधौंफेरी षातबालकहूसुधिनलहतहै॥ धूमकौसौ धमवलाकौंरषिबैकोंचाव असौमनकौसुभा वसुतौसुंदरकहतहै॥ ॥२०॥ सुषमांनैदुष मांनैसंपतिबियतिमानैहरषमांनैसोकमांनै मांनैरंकधनहै॥ घटिमांनैबधिमांनैसुगंध अबुभमांनैलाभमांनैहांनिमांनैमाहीतैंकु पनहै॥ पापमांनैपुनिमांनैउतिममधिममांनै नीचमांनैउचमानैमांनैमेरोतनहै॥ स्वगनर कमांनैबंधमांनमोक्षमांनैसुंदरसकलमांनै तातैंनांवमनहै॥ ॥२१॥ जोईजोईदेषैकछू सोईसोईमनआहिजोईजोईसुनैसोईमन हीकोभ्रमहै॥ जोईसूंघेजोईषायजोईस्पर्षहो इजोईजोईकरैसोऊमनहीकोकमहै॥ जोई जोईग्रहैजोईत्यागैजोईअनुरागैजहांजहां जाइसोईमनहीकोसुरमहै॥ जोईजोईकै रैसोईसुंदरसकलमनजोईजोईकल्पैसुमन

हीकौघरमहे॥२२॥ एकहींबिटपबिस्व
ज्योंकौत्योंहीदेषियतअतिहीसदानताकेपत्र
फलफूलहे॥ आगलेकरतपातनयेनयेहे
तजातअसैंयाहीतरकौअनादिकालमूलहे॥
दसन्चारिलोकलौंपसरिजहांतहांरह्योअघ
पुनिऊरधमूकममअरुथूलहे॥ कोउतौकह
तसतिकोउकहतअसतिसुंदरसकलम
नहींकौभरमभूलहे॥२३॥ तोसोंनकपुत
कोउकतहूंनदेषियततोसोंनसपुतकोउ
देषियतऔरहै॥ तूंहीआपुभूलिमहानीचव्है
तैंनीचहोततूंहीआपुजानैतैंसकलसिरमोरहै॥
तूंहीआपुभ्रमतबभ्रमतजगतदेषैतेरैथिर
भयेसबठौरहीकौठौरहे॥ तूंहीजीवरूपतूंही
ब्रह्महैआकासवतसुंदरकहतमनतेरीसब
दौरहे॥२४॥ मनहीकेभ्रमतैंजगतयहदे
देषियतमनहीकौभ्रमगयेंजगतबिलातहै॥

मन

मनहीकेभ्रमजेवरीमैंउपजैतसांपमनके
बिचारैंसांपजेवरीसमातहे॥ मनहीकेभ्रम
तैमरीचिकाकौजलकहेमनहीकेभ्रमसी
पसूंपौसौदिषातहैः सुंदरसकलयहदीसै
मनहीकोभ्रमभ्रमगयेब्रह्महोइजातहेः॥२५॥
मनहीजगतरूपहोइकरिविस्तर्यौमनहीब्र
ह्मरूपजगतसौंन्यारोहेः मनहीसकलघट
व्यापकअषंडएकमनहीसकलयहजगतपि
यारोहेः मनहींअकासवतहाघनपरतकछू
मनकैनरूपरेषबूधहीनबारोहेः सुंदरकहे
तप्रमारथबिचारैजबमनमिटिजाइएकब्र
ह्मनिजसारोहेः॥२६॥११॥१७॥

जोईजोई

छूटिबेकौंकरतउपाइअन्तसोइसोइदृढकरि
बंधनप्रउहेः जोगजज्ञजपतपतीरथव्रता
दिओरऊंपापातलेतजाइहीवारेगरउहेः
कानकफराइपुनिकेसऊंलुंचाइअंगबिभू
तिलगाइसिरजटाकधरउहे॥ बिनग्यानै

मनहींके
भ्रमग

सुखियोंराकंकोकिंगः
मनहरहांइइः

पायेंनहिछूटत सुंदरकौग्रंथसुंदरकहतयौंही
भ्रमकैमरतुहै॥१॥ निमालाजपतकै
रतधरतब्रतजतसतमनबचक्रमभ्रमकष्ट
सहततनः बलकलबसनअसनफलपत्र
जलकसतरसनरसतजतबसतबनःज
रतमरतनरगरतपरतसंरकौतलहतहयगपु
देतबलधनः पचतपचतभवमपुनटर
तसठधटधटप्रथेटरहतनलषतजनः॥२॥
जोगकरैजागकरैबेदबिधित्यागकरैजपक
रैतपकरैयौंहीआवपूरिहै॥ जमकरैनेमक
रैतीरथकुब्रतकरैपुहमीअटानकरैवृथाखा
सपूरिहै॥ जीवकोजतनमनमैबासनांधरै
पचिपचियौंहीमरैकालसिरकूटिहै॥ त्यौं
रऊअनेकबिधिकोटिकउपायकरैसुंदरक
हतबिनज्ञानन्नहिछूटिहै॥३॥ बुधिक
रिहीनरजतमगुनछादरह्यौबनबनफिरतउ
दासहोइधरतैः कठिनतपस्याधरिमेधसीत

घांमसहै

सहै कंदमूल खाइ कोऊ कामनां के करतें : अ
तिहि भ्रम पाजी नर बिबधि उपाय करै निज रू
प भूलि करि बंधै जाइ परतें : सुंदर कहत भूषी
चोर दिसि देषै भूष लाषु मांहि आरसी न फेर मू
छ करतें ॥४॥ मेघ सहै सीत सहै सीस पर
घाम सहै कठिन तपस्या करि कंद मूल खात है :
जोग करै जग्य करै तीरथ ऊ ब्रत करै पुनि नां
नां बिधि करै मन मैं सीहात है : और देवी दे
वता उपासनां अनेक करै आबन की हौंस
अक मोक कसै जात है : सुंदर कहत एक रवि
के प्रकास बिन जैंगनै की जोति कहा रजनी बि
लात है ॥५॥ देषौ भाई आंधरनि ज्यूं बजा
रलू सौ है : कोऊ फिरै नागौ पाइ कोऊ गूद
री बनाय देह की दसा दिषाइ लोक धूत्यौ है :
कोऊ इछा धारी होइ कोऊ फलाहारी ताप कौ
कोऊ अधोमुख फूलि फूलि धूम घूट्यौ है : को
ऊ नहीं खाइ लौन कोऊ मुख गहै मौन सुंदर कहत
पोही बृथा भुस कूट्यौ है : प्रभु सौं न प्रीत मांहि

ज्ञानसौंपरचैनांहिदयौ माइ ओदारनिज्यूंब

जारलूबोईः॥८॥ आसनमारि

संवारिजटानयतजलअंगिबिभूतचढाइः पु

हमकोकछूदेइदयाकरिइयेरिरहेबहोलोगलुगा

इैः कोऊकउतमभोजनल्यावतकोऊकल्यावब

तयांनमीठाइः सुंदरलैकरिजातभयौसब

मूरखलोगनिमासिधिपाइः ८७॥ करइयपार

अधौमुषकैकरिघूंटतधूंमहिदेहफूलावेः

मेघहुसीतकुं घांमसहैसिरतीनकुं कालमहा

दुषपावैः हाथकछूनपरेकबहूंकनमूरषु

कूकसकूटिजमावैः सुंदरवंछितिबिषैसुषकौ

घरबूमतहैअसकांऊनगावेः॥८८॥ प्रेतलज्यो

पुनिनेहतज्योअसषेहलगाइकैदेहसवारीः

मेघसह्योसिरसीतसह्योतनुधूपसमेंजुपं

चागनिवारीः भुषसहीरहिरूषतरेपुरिसुं

दरदाससहेदुषभारीः मासनछांडिकैका

सनऊपरिआसनमारयौपैआसनमारीः॥८९॥

जोकोऊकष्टकरैबहुभांतनिजातअज्ञाननही

हीमनकेरौः ज्यूंतमपूरिरह्योघरभीतरिकैसैं
कूंदूरिनहोतअंधेरौः लागनिमारिपेवेलिनिको
रिपेअरौरउपाइकरैबहुतेरौः सुंदरसूरप्रकास
भयौजबलोकतकूंनहींदेखिपेनेरौः ॥१०॥

घारबह्योषगघारहयौजलधारसह्योगिरधा
रगिरयोहैः मारलयौबहिमारगयौजममार
देईमनतौनमस्योहैः मारसंच्योधनमार
घरूंकरिमारलयौसिरमारयस्योहैः सार
तज्योंपुरसारपस्योकहिसुंदरकारजकौन
सस्योहैः ॥११॥ कोउकपायपयपानकरै
नितिकोउकषातहैअन्नअलौनाः कोउक
कस्टकरैनिसबासरकोउकबैठिकेसाधत
पौनाः कोउकबादबिबादकरैअतिकोउ
कधारिरहैमुषमोनाः सुंदरएकअज्ञानग
येबिनसिधभयौनहिदीसतकोनाः ॥१२॥
कोउकअंगिबिभूतलगावतकोउकहोत
निराटदिगंबरः कोउकबल्कलसीसज

कोउक ओढत पौ इक कोउक ओढत ठाड कउक ओढत गारौं इकोउ अकड़:

टानष कोऊकबोढतहैजुबद्यंबर: सुंदरयेउ
आग्यानगयेबिनएसबदीसतआलिग्रमंबर
॥१३॥ कोऊकजातपिरागबनारसकोऊगया
जगनाथहिधावै: कोमथुराबदरीहरिद्वारसु
कोऊजपाकुरषेतहिजावै: कोऊकपुष्कर
कैपंचतीरथदौरेइदौरेजुद्वारिकाआवै: सुंदर
बितगयौघरमांहिसुबाहरिढूंढतकूंकरिपावै:
॥१४॥ छाडिजपेनरनांमकेदीनां: आगेक
छूनहीहाथपस्योपुनिपीछेबिगारिगयेनिजज
नोनां: ज्यूंकोऊकामनिकंतहिमारखलीसे
गआरहिदेषिसलोनां: सोऊगयोतजिकेंतत
काळहिकहेंनबनेजुरहीमुषमोनां: तैसेहिसुं
दरग्यानबिनांसबछाडिजपेनरनांमकेदीनां:
॥१५॥ ज्यूंकोऊकोसकयौनहिमारगतेल
कलैघरमैंपसुजोपें: ज्यूंबनियांगयोबीस
केतीसकौंबीसहूंमैंदसहूंनहीहोयें: ज्यूंकोऊ

बोबे

चोबे छबेकौं चल्यौ पुनि होइ दुबे दोइ गांठिके
षोये: तैसेहीं सुंदर और कू यास बरांम बिनां नि
हचै नररोये: ॥१६॥ जौ कोऊ रांम बिनां नर मू
रख औरनके पुनजी मम नौगी: आनकू याग
तें गमवापु निहोतहै भेरिक छूनबनैंगी: ज्यूं
हथ फेरदीषाव लचो चर अंत तौ धूरिकी धूरिछ
नैगी: सुंदर मूलमई अतिसे करि सुतकी नै
सिपकाई जनैगी: ॥१७॥ होइ उदास बिबा
रबिनांनर ग्रेहतज्यो बनजाइ रह्यौहै: अंब
रछारि बाघंबर लैकरिके तपकौ तनकष्ट स
ह्यौहै: आसन मारिसबासन कै मुषमौन
ह्यौहै: आसनमारि सबासन कै मुषमोन
गहीमन तौन गह्यौहै: सुंदर कौन कुबुधि ल
गीकहि प्रमसागर मांहि बह्यौ है: ॥१८॥
जैषघस्यौ परि भेद न जानत भेद लहै बिनबे
दहीपै है: मुषहि मारत नीदनिवारत अन
तजो फल यत्रा निषेहै: और उपाय अनेक

करैपुनितातेहिंहाथकछूनहिआवैहै: मानर
देहब्रिथासठयोवृतसुंदररामबिनापाछितै
है: ॥१९॥ आपनैआपनेथोनमुकौम स॥
हनकौंसबबातभलीहै: जसाब्रतादिकतीर
थदांनपुरानकथाजुअनेकभलीहै: को
टिकअोरउपायजहांलगतेसुनिकैनरबुधि
छलीहै: सुंदरग्यानबिनांनकछूंसुषमूल
नकीबकुभांतिगलीहै: ॥२०॥ कोउकचा
हतपुत्रधनांदिककोउकचाहतबांउजना
यौ: कोउकचाहतधातरसांइनकोउक
चाहतपारूदिषायौ: कोउकचाहतजंत्रनि
मंत्रनिकोउकचाहतरोगगमांयौ: सुंद
ररामबिनांसबहींभ्रमदेषकुभाजगयोमहि
कापौ: ॥२१॥ काहेकौंतूनरभेषबनांवतके
हेकौंतूदसकूंदिसफूलै: काहेकौंतूनरक
षकरैभ्रति काहेकौंतूंमुषतैकहिफूलै: का
हेकौंअोरउपायकरैअबआनकूपाकरि
भातितूलै:

मातिमूलें: सुंदरएकमजैंभगवंतहितौसुष
सागरमैनितफूलें: ॥२२॥ १९८॥

एकब्रह्ममुष
सौंबनाइकरिकहतहैअंतहकरनतौबिका
रनिसौंभस्यौहै: जैसैंगगोबरसौंकूपाज
रिराषैतहैसैंरयांन्वघृतलैकैऊपरज्यौंकस्यौ
है: जैसैंकोऊमांझेमांहिप्याजकौंछिपाइरा
षैन्वीथराकपुरकौलैमुषबांधिधस्यौहै:
सुंदरकहतऐसेज्ञानीहैजगतमांहितिनकौ
तौदेषिकरिमेरौमनभस्यौहै: ॥१॥ देहसौं
ममत्वपुनिग्रेहसौंममत्वसुतदारासौंममत्वम
नमायामेंरहतुहै: धीरतानलहैजैसैंकडूक
यौगोनमांहिकरमनिकैबसिमास्यौढकां
कौंबहतुहै: अंतहकरनसुतौजगतसौंरचि
रह्योमुषसौंबनाइबातब्रह्मकीकहतुहै: सुंदर
अधिकमोहिपाहीतेअचंभोआहिभूमपर
पस्यौकोऊचंदकौंगहतुहै: ॥२॥

विपरीतिग्यानीकौअंग: मनहरछंद

स्यो

॥मुषसौंकहतग्यानग्रंमैंमनइंद्रीप्रांनमा
रगकेजलमैंनप्रतिब्बंबलहिये : ॥ गीतिमैं
नयैकाकोऊनपौरहैसाकूकारबातनिंहीमु
हरुपग्यागनिगहिये: स्वप्नेमैंनपंचामृत
जीमिकैतृनपौजागेतेंमरतभूषषाइबेकों
च्चहिये: सुंदरसुभटजैसैंकापुरमारतगाल
राजाभोजसमकहागांगौतेलीकहियेः॥८॥
संसारकेसुषनिसौंआसक्तअनेकबिधिइंद्री
कूंलोलपमनकबहूंनगह्योहै: कहतहैं
असैंमैंतोएकब्रह्मजांनतहौंताहीतें छोरि
कैसुभकरमनिकोंरह्योहै: ब्रह्मकीनप्राप
तिपुनिकरमसबछूटिगयेदहूंतेंभ्रष्टहोइ
अधबीचबह्योहै: सुंदरकहतताहित्पापि
पेस्वपच्वजैसैंपाहीभांतिग्रथमैंबसिखीज्ञ
कह्योहै: ॥८॥ ज्ञानीकीसीबातकहेमन
तौमलीनरहेबासनांअनेकभरीनेंकुंन
निवारीहै: जेसैंकोऊआभूषनअधिकव

नाइराष्योकलाइ ऊपरकरिभीतरिभंमारि

नगारिहै: ज्यूंमनिआवैत्यूं लीयेलतानिसं

कहोइग्यानसुंनिसीषलयौग्रंथनिबिचारि

हैः सुंदरकहतवाकिअटकनकोऊआहि

जोईवासौं मिलैजाइताहीकौं बिगारिहैः

॥५॥ हंसस्वेतबकस्वेतदेषियेसमांनुदो

ऊहंसमोतीचुगेबकमछरीकौषातहैःपि

कअरुकाकदोऊकैसेकरिजानैंजांहि

पिकआंबमारकाकक्ररंकलिजातहैःसिं

धौंअरुफटकपषांनसमदेषियुतवहतौं

कगौरवहजलमैंसमातहैः सुंदरकहतज्ञां

नबाहरभीतरसुंघताकीपगंतरओरबात

नकीबातहैः॥६॥ १३॥ २०५॥

जाकेघर

ताजीतुरकीनकोतबेलाबंध्योताकेआगें

फेरिकेटिटूवानषाइपेः जाकेषासाम

बचनविवेककोअंगः मनहरछंदः

त्वमलसिरीसाफछेरपरैं: ताकैं आगे आनि
करिवौसईरषाईपे: जाकौंपंचामृतपा।
तषातसबदिनबीतेसुंदरकहतताहिरावरी
च्वषाईपे: चतुरप्रबीनआगैमुरमउच्चारकै
रैसुरजकेआगेजैसें जैगणंदिषाईपे:॥१॥
एकबानीरूपबलभूषनबसनअंगअधि
कबिराजमानकहियतऐसीहैं: एकबानी
फारटूटेअंबरउढायेआनितामांहिवि
परीतिसुनियततैसीहैं: एकबालमृतक
बहुतस्यंगारकीयेलोकनिकौंनीकीलगे
संतनिकौंजैसीहैं: सुंदरकहतबांणीत्रिबि
धिजगतमांहिजांनैकोऊ चतुरप्रबीनजा
कैजैसीहैं:॥३॥ राजाकौकवरजौस्वरूप
कैकरूपहोइताकौंतसलीमकरिगोदलैबि
लाइपे: औरकाहूरंतिकैस्वरूपहोइताकौं
सोमनीकताहूकौंतोदेषिकरिनिकटिबु
लाइपे: काहूकैकरूपकारौकूबरौहोई
अंगहीनताकीवोरदेषिकरिमाथौइहवा।
ईपे:

ई पे: सुंदरकलतक्षके वाकेबापहीकौप्यारौ ले
इ पौं लीजांनिबानीकौबिबेकअैसैमाइ पे:
॥३॥ बोलिपेतौतबजबबोलिबेकीसुधिहोइ
नतौमुखमौंनकरिचुपहोइरहिपे: जोरिपेऊ॥
तबजबजोरिबोऊजांनियरैतुकछंदअरथअ
नूपजांमैंलहिपे: गाईपेऊतबजबगाइबे
कौकंठहोइ श्रवणकैसुनतहीमनजाइमोहि
पे: तुकभंगछंदभंगअरथमिलैनकोइसुंदर
कहतअैसीबांनीनहिकहिपे: ॥८॥ एकनि
के बचनसुनतअतिसुखहोइफूलसेझरतहै
अधिकमनभावने: एकनिकेबचनअसम
मांनौंबरखतश्रवनेकैसुनतलगतअलखाव
ने: एकनकेबचनकंटककटुबिखरूपकर
तमरमछेददुखउपजावने: सुंदरकहतघट॥
घटमैबचनभेद उतम मधिमअरुअधमसु
नांवने: ॥५॥ काकअरुरासिबऊलूकज
बबोलतहैंतिनकेतौबचनसुहातकाहिकौनको
: कोकिलाअरसारौपुनिसूवाजबबोलतहैंस

वकोऊकांनदैसुनतरवुरौंनकौं: ताहीतैंसु
वचनबबेककरिबोलियेतयौं हीप्राकबाक
बकितोरियेनयौनकौं: सुंदरसमझिकैबच
नकौउचारकरिनांहीतरचुपहोइपकरिबैठि
मौनकौं: ६॥ प्रथमहीयेबिचारिछीमसौंनहीं
जैमारिताहीतैंसुबचनसंमारिकरिबोलिये:
सबहीकौं जानैंनकुहेरहेतनावैंतैसीकहिद
तकहियेतौतबजबमनमांहितोलिये: सब
हीकौंलागेदुषकोऊनहीपावैसुषबोलिकैबू
थाहीतातेंछातीनंहीछोलिये: सुंदरसमझि
करिकहियेसरसबाततबहीतौबदनकपा
टगहियोलिये:॥७॥ बचनतौवहैजामैं
पाईयेबिबेकहै: औरतौबचनऐसेबोल
तहैपसूजैसेतिनकेतौबोलिबेमैंछंगहुनएक
है: कोऊरातिदिवसबकतहीरहतऔसजैसी
बिधिकूपमैंबकतमांनोंनेकहै: बिबधिप्र
कारकरिबोलतजगतसबघटघटमुषमु
षबचनअनेकहै: सुंदरकहतातैंबचनबि
चारिलेऊबचनतौएहैजांमैंपाईयेबिबेकहै:

॥८॥

॥८॥ बचनमैंबचनबिबेककरिलीजिये: जैसौहंसनीरकौतजतहैअसारजानिसारजानि षीरकौंनिरालौकरिपीजिये: जैसेदधिमथ तमथतकाढिलेतघृतऔररहीयहीसबछाः: छिछाछिदीजिये: जैसैमधुमहुकासुबासकौं भ्रमरलेलतैसैहीबिचरकरिभिंनभिंनकीजि ये: सुंदरकहततातैंबचनअनेकभांतिबचन मैंबचनबिबेककरिलीजिये:॥९॥ प्रथमही गुरदेवमुषतेंउचारकयोवेईतौबचनआपल गेनिजहीयेहै: तिनकौबबेककरिअंतहकर नमांहिअंतिहीअमोलनगभिंनभिंनकी येहै: आपुकौदरिद्रगयौपरउपकारहेतन गहीनिगलिकैंउगलिनगदीयेहैं: सुंदरकह पहबांनीयौप्रगटभईऔरकोऊसुनिकरिर कजीवजीयेहैं:॥१०॥ बचनतैंदुरिमिलै बचनबिरुधहोइबचनतैंरागबढैबचनतैंदो षजू: बचनतैंज्वालाउठैबचनसीतलहोइब चनतैंमुदितबचनहीतैंरोषजू: बचनतैंप्यारो लगैबचनतैंदुरिभगैबचनतैंमुरझाइबचन

तैंपोषजू: सुंदरकहत्यहबचनको भेद ऐसो
बचनतैंबंधहोइ बचनतैंमोषजू: ॥११॥
बचनतैंगुरसिषबापपूत प्यारौलगैबचनतैं
बकुबिधिहोत उतपातहै: बचनतैनारीअरु
पुरषसनेहअतिबचनतैंदोऊआपुआपुमै
रिसातहै: बचनतैंसबआइराजाकेहजूरिहो
इबचनतैंचाकरऊछोडिकैपरातहै: सुंदर
सुबचनसुनतअतिसुषहोइकुबचनसुनत
हीप्रीतिघटिजातहै: १२॥ बचनबिबेककी
पैंबचनमैंभेदहै: एकतौबचनसुनिकरमही
मैंबहिजातकरतबकुतबिधिस्वरगजमेदहै:
एकहैबचनदृढिईस्वरग्यासनांकेतिनमै
तौसकलहीबासनांकौछेदहै: एकहैबच
नतामैंएकहीअषंडब्रह्मसुंदरकहतयौंबतापै
अंतबेदहै: बचनअनेकहीप्रकारसबदेषि
परतबचनबिबेककीपैंबचनमैंभेदहै: ॥१३॥
बचनतैंजोगकरैबचनतैंजबाकरैबचनतैंतप
करिदेहकौंदहनुहै: बचनतैंबंधनकरतअ
नेक

नेकबिधिवचनलैत्यागकरिबनमेंरहतुहे॥ वचनतेंउरुऊरुसुरऊैवचनहीतेंबचनतेंमांति भांतिसंकटसहतुहे॥ वचनतेंजीवनपौं वचनतेंब्रह्मलहौंदुसुंदरवचनभेदबेदयौंक हतुहे॥ ॥१४॥ १७॥ २९९॥

ब्रह्मकुला

लखेबकुंभंजनकरमनिकेबसिमोहिन चावें॥ बिधुंकुसंकटआइसलेप्रभकाकुको रकुककाकुसंतावें॥ संकरमूतधिसावनि केपतिपांनिकपालनीमुखबिललावें॥ याहि तेंसुंदरटगुनत्यागिसुनिर्मलएकनिरंज नध्यावें॥ ॥१॥ कोटिकबातबनाइकहेंकल होतभयासबहीमनरंजन॥ सास्त्रसंमृतबेदपुरा नबषानतहैंप्रतिसैलुकअंजन॥ यानीमेंबुकतपानीमलेंकतयारपकूंचतुरेमतिभंजन॥ सुंदर तौलगिआंधेकीजेवरीजौलोंनध्यावहेएकनि रंजन॥ ॥२॥ मंजनसोजुमनोमलमंजनसजन

अथविपर्युतउपमानंगठौग्रंगः२७ुर्थद्::

सोजुकहैगतिगुऊ: गंजनसोजुमस्योइंद्री
गहिगंजनरंजनसोजुबुऊवैग्रबुऊ: नंजन
सौजुमस्योरसमांहिबिदुजनसोकतरूंनग्रह
ऊ: व्यंजनसोजुबछैरूव्हिसुंदरग्रंजनसो
जुनिरंजनसुऊ: ॥२१॥ जायमुतैंजतपतिमइ
मइसोप्रभुहैगरइ सुखमारे: जोप्रभुहैसबकौसि
रऊपरितायभुकौहमकूं सिरिधारे: रूपनरेखग्र
लेयग्रलेयग्रअंकितनिन्हरहैंसबकारिजसारे:
नोमनिरंजनहैतिनकौपुनिसुंदरतायभुकैब
लिहारे: ॥२२॥ जोउपजैबिनसैगुनधारतसोप
हजोनकुंग्रंजनमाया: ग्रावैनजाइमरैनंही
जीवतग्रच्युतएकनिरंजनराया: ज्यूंतरूतब
रहैरसएकहिग्रावतजातफिरैयकुंछाया:
सोपरब्रह्मसदासिरऊपरिसुंदरतायभुसों
मनलाया: ॥२३॥ जोउपजैकछुग्राइजहांल
गसोसबनासनिरंतरहोई: रूपधर्योसुर
हैनहिनिश्चलतीनकुंलोकगनैकहाकोई:
राज

राजसतामससात्विक जे गुन देषत काल ग्रसै
पुनि सोई : आपु हि एक रहै जु निरंजन सुंदर
के मन मानत सोई : ॥६॥ देवनि कै सिर देव
बिराजत ईश्वर कै सिरि ईश्वर कहियै : लालनि कै
सिरि लाल निरंतर षुबन कै सिरि षूब सु लहियै :
पाकनि कै सिरि पाक सिरोमन देषि बिचारि उ
हे दृढ गहियै : सुंदर एक सदा सिर ऊपर औरक
छू हम कौं नहिं चहियै : ॥७॥ सेस महेस ग
नेस जहां लगि बिस्नु बिरंचि कु कै सिरि स्वांमी :
व्यापक ब्रह्म अषंड अनांवृत बाहरि भीतरि
अंतरजामी : वोर न छोर अनंत कहै गुन पार्
लै सुंदर है घन नांमी : औसो प्रभु जिनकौ सि
रि ऊपरि क्यूं परि है तिनकी कहि षांमी : ॥८॥

॥१५॥ २२७॥

आन की और निहारत ही जैसैं जात पतिव्रत ए
क वृती कौं : होत अनादर औसैं ही भांति जु पी
छै फिरै पुनि सूरसती कौं : राम हि दै तै गये
जन सुंदर एक रती बिन एक रती कौं : ॥१॥
जौ हरि कौं तजि आन उपासत सो मति मंद फ

जीहलहोई ॥ ज्यूं अपने भरतार हि छाडि गई बिभचारनि कामनि कोई ॥ सुंदर ताहि न आदर मांन फिरै बिमुख अपनी पति षोई ॥ बूडि मरै किन कूप मंझार कहा जग जीवत है सठ सोई ॥ ॥२॥ एक सहीसब कै उर अंतर ता प्रभु कौं कहि काहे न गावै ॥ संकर मांहि सहाइ करै पुनि मोअपनौ पति क्यूं बिसरावै ॥ चारि पदारथ औरजहां लग आवकुं सिधि नवौं निधि पावै ॥ सुंदर छार परौ तिनकै मुख जो हरि कौं तजि आंन हि ध्यावै ॥ ॥३॥ पूरनकांम सदासुष धांम निरंजन रांम सिरजनहारो ॥ सेवक होइ रह्यौ सबकौ नित कुंजर कीट हि देत अहारो ॥ भंजन दुष दरिद्र निवारनि चिंत करै पुनि संझ सवारो ॥ असौ प्रभु तजि आन उपासत सुंदर है तिनकौ मुष कारो ॥ ॥४॥ होइ अनंन भजै भगवंत हि और कछू मन मैं न हि राषै ॥ देवी रु देव जहां लग हैं डरिकै तिनसों कछु दीन न भाषै ॥ जोग रु जग्य व्रतादि क्रिया तिनसौं नहि तौ स्वपनै अ

नि

निलाषैः सुंदर अमृतपानकी प्रीत तौ ककु कौंन हलाहल चाखै ः ॥५॥

काहेकौं फिरत नर भटकत गैर गैर मागलकी दौर देवी देव सब जानिये ः जोग जग्य जप तप तीरथ ब्रतादि दांन तिनहूंकौ फल सो तो मध्याई बानिये ः सकल ज्याग्रत जिय करो मनांम तजि ग्राही तय देस सुनि कूदे मांहि आनिये ः ताही तै समझि करि सुंदर बिस्वास धरि और कोऊ कहै कछू ताकी न ही मांनसे ः ॥६॥ पतिहीसौं प्रेम होइ पतिहीसौं नेम होइ पतिहीसौं छेम होइ पतिहीसौं रत है ः पतिही है जग्य जोग पतिही है रस भोग पतिहीसौं मिटै रोग पतिहीको जत है ः पतिही है ग्यांन ध्यान पतिही है पुनि दांन पतिही है तीरथ न्हांन पतिहीको मत है ः पतिबिन पति नांहीं पतिबिन गति नांही सुंदर सकल बिधि एक पतिब्रत है ः ॥७॥ जलकौ सनेही मीन बिछुरत तजै प्रांन मणिबिन अहि जैसे जीवत नलहिये ः रविको सनेही पुनि कवल

सरोवरमैससिकोसनेहीऊचकोरजैसैरहिपे:
स्वांतबूंदकोसनेहीप्रगट्जगत्मांहिएकसी
पदुसरोन्चात्रगहुकहिपे: तैसैहीसुंदरएकप्र
भुकौसनेहीमोरिऔरकछुदेषिकाहूऔरन
हीबहिपे: ॥१२॥ १६॥ २३५॥

पीयकोअंदेसोमारीतो
सौंकहूंसुनिप्यारीप्यारीतोपरिगयेसुतौब्रज
कूंनआपेहै: मेरैतौजीवनप्रान निसदिन
रहैध्यानमुषसौंनकहूंआंननैंनकरलापेहैं:
जबतेगयेबिछोहिकलनपरतमोहितातें
कूंपुछततोहिकिनाबिरमापेहे: सुंदरबिर
हनीकैसौन्चसभीबारबारहमकौंबिसा
रिअबकौनकेकहापेहै: ॥१॥ हमकौंतो
रैनिदिनसंकमनमांहिरहैउनकीतौबातनि
मैंकिहूंनपाईपे: कबहूंसदेसमुनिअ
घिकउछाहहोइकबहूंकहोइरोइआंसू
नि

९७श्वामीरविंगमारबेदीसगा:
भवतामदेवइ

निबहाई पै: औरनकेरसबसहोइरहेप्यारे ७५

लालनआवनकीकहिकहिमकौसुनाईपै:

सुंदरकहततातिकाटियेजुकौन भांतिजुतौ

रूपआपुनेईहाथसौंलगाईपै:॥२॥

मोसौंकहैऔरसीहीवासौंकहैऔरसीहीजा

सौंकहैताहीकैप्रतीतिकैसैंहोतहै: काहूको

समाधकरैकाहूसौंउदासफिरैकाहूसौंतौरस

बसएकमेकमौतहै: दगाबाजीदुबिद्यातौ

मनकीनदुरिहोइकाहूकैअंधेरौघरकाहू

कैउद्दोतहै: सुंदरकहतजाकेपीरसौंकरेपु

कारजाकौदुषदूरिमयौताकैमईओतहै:॥३॥

हीयेऔरजीयेऔरलीयेऔरदीयेऔरकीयेऔर

कौनकउअनूपपाटीपढेहै: मुषऔरबैनऔर

नैनऔरसैनऔरलैनऔरमनऔरजंत्रमांहिक

ढेहै: हाथऔरपावऔरसीसऊश्रवनऔरनष

सिषरोमरोमकबलईसौंमढेहै: ऐसीतौकगैर

तासुनीनदेषीजगतमेंसुंदरकहतकाहूबयहीकैगढेहै:

पो० १

॥८॥ मईहौंश्रांतेबावरीबिरहश्रीबावरीचल
तऊंचौबावरीपरौंगीजाईबावरीः फिरतहौंउत
वरीलगतनंहींतावरीसुबाहीकोंबतावरीच
ल्यौलेजाततावरींयकिहेदोऊपावरीचछत
नहींपावरीपियारौनहींपावरीजहरबांटि
पावरीः दौरतनहींनावरीपुकारिकेसुनाव
रीसुंदरकौऊनावरीबूझतराधेनावरीः ॥५॥

॥९॥ २४०॥
मूल्यौफिरैभ्रमतैंकरतकछूश्रौरश्रौरकरत
नतापछ्रिकरतसंतापकोंः दछ्रूनपौरहेपु
निदछूपूजापतिजैसेदेतपरदछूएांनदछूएां
देश्रापकौंः सुंदरकहतश्रैसैंजोनैंनजुगतिकें
छुश्रौरजापजपैनजपतनिजजापकौंः बाल
नपौजुवानयौबपेबीतेबृद्धनपौबपरूपहो
इकेंबिसरिगयौबापकौंः॥१२

पांनउहेजुपीयुषपीवेनितदांनउहेजुदरिद्रहि
मांनेः कोनगहेसुसतोनरिझावतजोनउलेजे
मदीसहिजांने कानउहेमुनिपेजसकेसव
मांन

तथासवदरसनाविषेहुंनोःसबहरदीह

मोंनगहेकरिपेसतमांनैः तांनउहैसुरतांन
रिझावतजांनउहैजगदीसहीमानैः बानउ
हैमनवेघतसुंदरग्यानउहै उपजैनअग्यानैः
॥२॥ सूरवहैमनकौंबसिराषतकूरवहैमन
मोहतजेहैः रनमांहिलजेहैः त्यागवहैअनु
रागनहीकछुं मागवहैमनमोहितजेहैः तस्स
वहैनिजतत्वहिजांनत पत्तवहैजगदीसजजे
हैः रत्तवहैहरिसौंरतसुंदर मत्तवहैमगसंत
नजेहैः॥३॥ व्यापउहैकसिमेरिसैपकपरि
दापउहैदलकारहिमारैः छापउहैहरिआय
दईसिरथापउहैथपिओरनधारैः जापउ
हैजपिपेअजपानितथापउहैनिजथापवि
चारैः बापउहैसबकोप्रभुसुंदरपापहरेअरु
तापनिवारैः॥४॥ मोंनउहैमपनांकि
जांमहिगौनउहैफिरिहोइनगौनांः बोन
वहैबनिपेबिषियारसरौंनवहैप्रभुसौंन

हिरौना: मौन गहै जु लीपै हरि बोलत लौन
गहै सब औरअलौना: सौन गहै गुर संत
मिलै जब सुंदर सेकर है नंहि कौना: ॥५॥
कार गहै अबिकार रहै नित सार गहै जु असार
हि नाषै: प्रीत गहै जु प्रतीति धरै अर नीत गहै
जु अनीति न माषै: तंत गहै लगि अंत न टूट
त संत वहै अपनौं सत राषै: नाद गहै सु जिव्हा
दत जै सब स्वाद वहै रस सुंदर चाषै: ॥६॥
स्वास वहै जु उसास न छाडत नास गहै फिरि हो
इं न नासा: पास गहै सत पास लगै जम पास
कटै प्रभु के नित पासा: बास गहै जु उदास
रहै हरि दास सदा कहि सुंदर दासा: ॥७॥
श्रोत्र गहै श्रुति सार सुनै नित नैन गहै निज रूप
निहारै: नाक गहै हरि नाक हि राषत जीभ
गहै जगदीस उचारै: हाथ गहै करि पै हरि कौ
कृत पाव गहै प्रभु कै पंथ धारै: सीस गहै के
रि स्याम समरपण सुंदर यौं सब कारिज सारै:
॥८॥

॥८॥ सोवतसोवतसोइगयोसगरोवत रोवतकैबररोयो॥ गोवतगोवतगोइध स्योधनखोवतखोवतनैसबखोयो॥ जोव तजोवतबीतिगयेदिनबोवतबोवतलोबि बबोयो॥ सुंदरसुंदररामभज्योनहिछोवत छोवतबोफहिछोयो॥ ॥९॥ देषतदेषतदे षतमारगबूझतबूझतबूझतआयो॥ सो धतसोधतसुद्धभयोपुनितावतताबतकं चनतायो॥ जागतजागतजागिपर्योजबं सुंदरसुंदरसुंदरपायो॥ ॥१०॥ १९८॥

२५०॥

सोईसूरबीररुधिरहैजाइरनमें॥ सुनतन गारैचोटबिगसेकवलमुषअधिकउहहा॥ फूल्यौमाइफूंनतनमें॥ फेरेजबसांगितबै कौऊनहिधीरधरैकायरकंपायमानहोत देषिमनमें॥ टूटिकैपतंगजैसेपरतपावक मांहिऐसेटूटिपरैबहुसांवतकेमनमें॥

इहापरयुद्धकरतनिरीहमकुकुलतगतिगदुहि फेरितं ब्रह्मन्
अथसूरातनकौअंगः॥ सूर्यरातनकुं

मारिधामेंसांगकरिसुंदरजुहारैस्यांमसोई
सूरबीरसपिरसैजायुरलमैः ॥१॥ हाथमैंगं
होहैसगमरिबेकौंयकयमतनमनआपनौ
समरपनकीनौंहैः आगैकारिमीचकौंपरी
हैमांकिरनबीचिदूकटूकहोइकैनगाड़दल
दीनौहैः घाइलौंनस्यांमकौलरामसोरकै
सैहोइनांमजादजगलमैजीत्यौपनलीनौहैः
सुंदरकलतऐसौकोऊएकसूरबीरसीसकौं
उतारिकैसुजसजाइलीनौहैः ॥२॥ धरमां
हिसूरमांकलावतसकलहैः पावरोपिरहैरन
मांहिरजपूत कोऊ रूपगयमाजतजुरतजहां
दलहैः बाजतझुझाऊसहनाईसीधूराग
पुनिसुनतहीकायरकीछूटिजातकलहैः
ऊलकतबरछीतिरतरवारिबहैमारमार
करतपरतषलभलहैः ऐसेजुद्धमेंअडि
गसुंदरसुभटसोइधरमांहिसूरमांकलावत
सकलहैः ॥३॥ सूरमांकैदेषियतसीस
बिनधरहैः असनबसनबहु भूषनसंके

लग्गे आगं संपति बिबधि मां तिन स्यौं सब
घर है: श्रवन न गारौ सु निछि न कमे छो
रि जात न्ह्रै सैं न हीं जाने कछु आगे मो हि
मर है: मन मै उछाह रन मांहि टूक टूक हो
इ निरने निसंक वाकें रंच हून मर है: सु
दर कहत्य कौ ऊ देह कौ ममत्व नांहि सूर मा
के दे षियत सीस बिन घरहै: ॥८॥ श्रे
सो सूर बीर घीर मीर जाइ मारि है: कूफि
बे कौं चाव जाकें लाकि ताकि करें घाव श्रा
गै घरि पाव फिर पीछे न संमारि है: हाथ
लीयें हथियार तीछन लगा पो धार बार
नहि लागे सब पिसन प्रहारि है: लोट नहि
राषे कछु लोट पोट होइ जाइ चोट नहि
चूके सीस रिप कौ उतारि है: सुंदर कहत्त
ताहि नैकु हू न सोच पो चक्रे सौ सूरबीर
घीर मीर जाइ मारि है: ॥५॥ सोई सूर बीर

घीरस्यामकेरजूरि है: अधिक अजानबकु
मनमै उछाह्कीयें दीयेंगजगाहमुषबरष
तनरहै: काढैजबकरवालबालसब
गढहोइअतिबिकरालपुनिदेयतकरू
रहै: नैकुनउसासलेतफौजमैफिदोई
देतषेतनहिछांमैमारिकरैचकचूर है:
सुंदरकवितताकीकीरतिप्रसिधिहोइसो
ईसूरबीरघीरस्यामकेरजूरहै: ॥६॥
औसोसूरबीरकोउकोटिनमेएकहै:
ग्यानकौकवचअंगकाहूसौंनहोइ भै
गरोपसीसउलकतप्रेमबिबेकहै: तीन्हीं
ताजीअसवारलीयेंसमसेरसारआगैंहीं
कौपावघरैंमागनकीरेकहै: छूटतबि
दूकबांणबीचैजहांघमसांणदेषिकौपि
सुनदलमारलअनेकहै: सुंदरसकललोक
मांहिताकौजैजैकारऔसोसूरबीरकोउकोटिन
मैएकहै:

मैएकहैः ॥७॥ साधकौसंग्रामहैअ
धिकसूरबीरसौंः सूरबीररिपुकौनिमूनौं
देषिन्चोटकरेमारैतबताकीताकितरवार
तीरसौंः साधकआगैजांमबैगैमनहीसौंजु
धिकरैजाकैमुलमाथौनहिंदेषियेसरीरसौः
सूरबीरभूमिपरदौरकरैदूरिलगैसाधकौ
संग्रामहैअधिकसूरबीरसौंः सूंदरकल
तहांकांहूकेनपावटिकैंसाधककौसंग्राम
हैअधिकसूरबीरसौंः ॥८॥ साधकसौन
सूरबीरकोऊहमजान्यौहैः बैचिकरडीक
मांणज्ञानकौलगायौबांणमास्यौमहाब
लीमनजगजिनिराष्यौहैः ताकेअगिवांणै
पंचजौधाऊकतलकीयेअौररह्यौपलो
सबअरिदलभांन्यौहैः अैसौकोऊसुभट
जगतमैंनदेषियेतजाकेआगैकालहूसौ
कंपिकैपरान्यौहैः ॥९॥ कांमसौप्रबल

महाजीतिजिनितिनौंलोकसूतौएकसाध

केबिचारअप्रामैंहास्यौहै॥ क्रोधसौकराल

जाकेदेषततनधीरधरैसोऊसाधछिमां

केहथ्यारबिदास्यौहै॥ लोभसौसुनटसा

छतोषसौगिराइदीयौ मोहसौनिरपति

साधग्यानसौंप्रहास्यौहै॥ सुंदरकहतऐ

सौसाधकोकसूरबीरताकताकिसबहींपि

सनदलमास्यौहै॥ ॥१०॥ बेरीसबमारि

कैनचिंतहोइसूतौहै॥ मारकामक्रोधजिनि

लोभमोहपीसिमारेइंद्रीऊकतलकरिका

यौरजपूतौहै॥ मास्यौमयमंतमनमास्यौअ

हंकारमीरमारेमदमछरऊखैसौरनऊतौहै॥

मारेआसाइस्नांऊपापनीसापनीदोऊसब

कौंप्रहारिनिजपदइपिऊतौहै॥ सुंदरकहत

ऐसौसाधकोकसूरबीरबैरीसबमारिकैनि

चिंतहोइसूतौहै॥ ॥११॥ साधसूरबीरबैरी

जगत

जगतमैंआयेहै: कीयोजिनिमनहाथइं
द्रिनिकौसबसाध्यघेरिघेरिआपुनेईनाथसौं
लगायेहै: औरऊअनेकबैरीमारेसबजुद्धक
रिकामक्रोधलोभमोहआदिकैंबहायेहै: की
येहैसंग्रामजिनिदीसहेमगाइदलऐसेमहा
सुभटसुग्रंथनिमैंगायेहै: सुंदरकहतऔरसुर
बीरपौंहीखपिगयेसाधकवैसूरबीरवैईजगत
मैंआयेहै: १२॥ ऐसौकौनसूरबीरसाधककैस
मानहै: महामंतहाथीमनराख्योहैपकरिजि
निअतिहीप्रचंडऊजामैंबहुतगुमानहै: कामक्रो
धलोभमोहबांधेचारयौंपावजिनिछूटनैनपावै
नैंकप्रानपीलवानहै: कबऊजोकरैजोरसा
वधानसांऊभोरसदाएकहाथमैंअंकुसगुरग्या
नहै: सुंदरकहत्औरकाहूकेनबसिहोइऐसो
कौनसूरबीरसाधककैसमानहै: ॥१३॥१९॥

२६३॥
साधकौसंगसदाअतिनीकौ: प्रीतिप्रचंड
लगैपरब्रह्महिऔरसबैकछूलागतफीकौ:

सब साध को अंग॥ इति वचन ॥

सुद्धहूदैमतिहोइसुनिर्मलदैतप्रभाव्रमिरैस
वजीकोः गोष्टज्ञानअनंतचलैजहांसुदर्षे
सैप्रवाहनदीकोः ताहितैंजांनिकसैनिसबा
सरसाधकीसंमसदाश्रतिनीकोः ॥१॥ है
जगमांहिबकौसतसंगाः जोकौकुजाइमि
लैजनसौंनरहोतपवित्रलगैहरिरंगाः दो
षकलंकसबैमिटिजातजुनीचकुआइके
होतउतंगाः ज्यूंजलश्रौसमलीनमहाश्रति
गंगमिलैहोइजातहैगंगाः सुंदरसुषकरै
ततकालसुहैजगमांहिबकौसतसंगाः ॥२॥
साधकेसंगतेसाधइहोइः ज्यूंलटभृंगकरै
अपनैसमतासनिंनिनकहैनहिकोईःज्यूं
कुमश्रौरअनेकहिमांतनिचंदनकीछिगचं
दनहोईः ज्यूंजलकुमिल्लैजबगंगहिहो
तपवित्रउहैजलसोईः सुंदरजातिसुभाव
मिटैसबसाधकेसंगतेसाधइहोईः ॥३॥

संतनि

संतनिकौजुप्रभावहैऐसौः जौकोउआव्र
तहैउनकौपिगताहिसुनावतसबदसंदेसौः
ताहिकैतैसीहीऔषदिलावतजाहिकैरोगगहि
जानतजैसौः करमकलंकहिकाटतहैसबसु
घकरैपुनिकंचनतैसौः सुंदरबस्तबिचारतहै
नितसंतनिकौजुप्रभावहैऐसौः ॥४॥ जौप
रब्रह्ममिल्यौकोउचाहततौनितसंतसमा
गमकीजेः अंतरमेटिनिरंतरहोइकरिलै
उनकौअपनौमनदीजेः वैमुषद्वारउचारक
रैकछुसोअनयाससुधारसपीजेः सुंदरसूरप्रका
सतहैउरऔरअज्ञानसबैतमछीजेः ॥५॥ जा
दिनतैंसतसंगमिल्यौतबतादिनतैभ्रमभाजि
गयौहैः औरउपायथकेसबहीजबसंतनि
अदयज्ञानदयौहैः पोतिपवारहिकौंकरिछू
त्रतएकअमोलिकलालल्यौहैः कौंनप्रकार
रहैरजनीतमसुंदरसूरप्रकासभयौहैः ॥६॥
संतसदासबकौहितबंछतजानतहैंनरबू

मतकाछैं: देउपदेसमिटायसबे भ्रमकेक
रिताँनजिताजहिन्वाछै: एबिसया सुषनांति
नछामतज्यूंकपिमूठिगहेसवगाछैं: सुंदरसो
दुषकौंसुषमांनतहाटहि हाटबिकावतञ्रा
छै: ॥७॥ सोञ्रनसागतिरेभवसागरजो
सतसंगतिमैंचलिञ्रावै: ज्यूंकाणिहारनमे
दकरैकछुञ्राइचछैतिहिनावचछावै: ब्रा
ह्मणक्षत्रियवैसिक्षुसुद्रमलेछ्चेमालहि
पारलघांवैं: सुंदरबारकछुनहिंलागतया
नरदेहञ्रमैपदपावै: ॥८॥ संतनिकीग
तिकांकौकुजानैं: ज्यूंहमयांहिपिवेञ्ररु
ञ्रोढहितेसैंहिएसबलोगबषांनैं: ज्यूंजल
मैंससिकोप्रतिब्यंबहिञ्रापसमाजलजंत
प्रमांनै: ज्यूंषगछांहधरापरिदीसतसुंदर
पंषिगहेञ्रसमांनै: त्यूंसवदेहनिके सत
देषतसंतनिकीगति कांकोकुजांनें: ॥९॥

जौकछुसाधकरैसोइछाजे: जौअपराकरलैघर
कौलतमांगत नीयाहितौनहिलाजे: जौसुषसेज
पटंबरअंबरलावत चंदनतौअतिराजे: जौ
कोऊआइकलेमुषतेकछुजांनततौहिबपार
रिवाजे: सुंदरसंसयदूरिनयौसबजौकछुसा
धकरैसोइछाजे: ॥२०॥ एसबजांनकुसा
धकेलछन: कोऊकनिंदतकोऊकबंदतकौ
ऊकआइकैदेतहैभछन: कोऊकआइलगा
वतचंदनकोऊकमारतधूरततछिन: कोऊ
कहैयहमूरषदीसतकोऊकहैयहआहिबिच
छन: सुंदरकाहुसौरागनद्वेषसुएसबजांकुसा
धकेलछन: ॥२१॥ तातमिलेपुनिमातमिलेसु
तभ्रातमिलेजुबतीसुषदाई: राजमिलेगजबा
जमिलैसबसाजमिलेमनबंछितपाई: लो
कमिलेसुरलोकमिलोबिधिलोकमिलेबैकुंठह
जाई: सुंदरऔरमिलेसबहीसुषदुर्लभसंत

भयेतें

समागम नाई ॥१२॥ देवकूंभ
येतेंकहा इंद्रकूं भयेतें कहा बिधिकूं के
लोकतें बकुरि आई यहु है मनुष भयेतें कहा
नृपति भयेतें कहा द्विजकूं भयेतें कहा पारज
ई यहु है पसुकूं भयेतें कहाय छीकूं भयेतें कहा
पतंग भयेतें कहा कौंअघाई यहु है छूटिवेकौं
सुंदर उपाय एक साधु संगा जिनकी कृपातें अ
ति सुख पायहु है ॥१३॥ इंद्रानी स्यंगार
करि चंदन लगायौ अंग ताहि देखि इंद्र अति का
मबस भयौ है सूकरीकूं करदमके चहलमें
लोटि करि आगे जाइ सूकरकौ मन हरि लयौ है
जैसौ सुख सूकरकौ तैसौ सुख मघवाकौ तैसौ
सुख नरयसू पंखिनिकौं दयौ है सुंदर कहत जा
कै भयौ ब्रह्मानंद सुख सोई साधु जग मैं जन
म जीति गयौ है ॥१४॥ धूलि जैसौ धन जाकै
सूलसे संसार सुख भूल जैसौ भाग देखै अंतकं
सी यारी है पाप जैसी प्रभुताई साप जैसौ सन
मान

~~ममममममाई॥११३॥~~ मांनबकाईकूंबीछु
नीसीनागनीसीनारीहै॥ अगनिजेसौइंद्रलो
कबिघनजेसौ बिघिलोककीरतिकलंकजेसी
सिघिसीटिकारीहै॥ बासनांनकोऊबाकीग्रे
हीमतिसदाजाकी सुंदरकहततातिबंदनोहमा
रीहै॥११५॥ ग्रैसोकोऊसाधकसुनौरामजी
कौप्पारोहै॥ कांमहीनक्रोधजाकैलोभहीन
मोहताकेमदहीनमछ्छरकोऊनकोऊनबिका
रोहै॥ दुषहीनसुषमांनेपापहीनपुनिजांनेहर
षनसोकआंनेदेहहीतैंन्यारोहै॥ निंदानप्र
संसाकरैरागहीनदोषधरैलैनहीनदैनजाकै
कछूनपसारोहै॥ सुंदरकहतताकीअगमअ
गाधगतिग्रैसोकोऊसाधकसुनौरामजीकोप्या
रोहै॥११६॥ आगैंजांमजमनेमआगैंजां
मरहैप्रेमआगैंजांम~~धीरस्यानआगैंजांमतीर~~
~~थमेकसरहैस्नांनजूं~~ ~~ध्यानिजि~~ जोगजग्यकीयौ

बकुदानजू: आगैंजांमजपतपआगैंजांमली
यौब्रतआगैंजांमतीरथमैंकरतहैन्हांनजू:
आगैंजांमपूजाबिधिआगैंजांमआरतीडूआ
गैंजांमदंडवतसुमरनध्यांनजू: सुंदरकहत
तिनकीयौसबआगैंजांमसोईसाधजाकेउ
रएकभगवांनजू: ॥१७॥ साधहीकेसंग
तेसरूपग्यांनहोतहै: जैसेंआरसीकोमैलका
टतासिकलकरमुषमैंनफेरकोऊगहैंजाको
पोतहै: जैसेंबैदनैंनमैंसलाकमेलिसुद्धक
रैपटलमायेतेतहांज्योंकीत्यूंहीजोतिहै: जै
सैंबायुबादरबथेरिकैंउडाइदेतरबितोआ
कासमांहिसदाईउदोतहै: सुंदरकहतभ्रम
छिनमैंबिलाइजातसाधहीकेसंगतेंस्वरूप
ग्यांनहोतहै: ॥१८॥ संतजनआयेहैंकूपरउप
गारकों: मृतकदादुरजीवसकलजिवायेजिं

बर

बरषतबांनीमुषमेघकीसीधारकौं: देतउप ५४

देसकोकस्वारथनलवलेसनिसदिनकरतहै

ब्रह्महीविचारकौं: औरऊसंदेसुनिमिटावत है

निमषमांहिसूरजमिटावतहैजैसेंअंधकारकौं:

सुंदरकहतहंसबासीसुषसागरकेसंतजनआपु

हैसुपरउपगारकौं: ॥१९॥ संतनिकैसमकहौ

औरकहादीजिये: हीराहीनलालहीनपारस

नचिंतामनिऔरऊअनेकनगकहौकहाकी

जिये: कामधेनुसुरतरुचंदननदीसमुद्रनौ

काऊजिहाजवैविकवरूकछीजिये: पृथ्वीअपते

जवायुब्योमलौंसकलजमचंदसूरसीतलतप

तगुनहीजिये: सुंदरविचारिहमसोधिसबदे

षेलोकसंतनिकेसमकहौऔरकहादीजिये:

॥२०॥ संतनिकीमहिमाश्रीमुषसुनाईहै:

जिनितनमनदीनोसबमेरेहेतऔरऊममब

त्वबुधिआपुनीउठाईहै: जागतऊसोवत

ऊगाद्धतहैमेरेगुनिमेरौइ भजन ध्यांन दुसरी
नकाईहै॥ तिनकैमैपीछैलग्यौफिरतहौंनि
सिदिनसुंदरकहतमेरीजनतैंबकाईहै॥ वेहैं
मेरेप्रियमैहौंजनकौआधीनसदासंतनिकी
महिमांतौश्रीमुषसुंनाइहै॥ ॥२१॥ संतजन
निसदिनलेबोईकरतहै॥ प्रथमसुजसलेत
सीलक्रूंसंतोषलेतछिमांदयाधर्मलेतपापतै
डरतहै॥ इंद्रिनिकौंघेरिलेतमनहूंकौंफेरलेतयो
गकीजुगतिलेतध्यांनलैधरतहै॥ गुरकौवचन
लेतहरिजीकोनांमलेतआत्मांकौसोधिलेतभौज
लतिरतहैं॥ सुंदरकहतजगसंतकछुलेतनांहि
संतजननिसदिनलेबोइकरतहैं॥ ॥२२॥
संतजननिसदिनदेबोईकरतहैं॥ सान्वोउ
पदेसभलीभलीसीषदेतसमतासुबुधिदेत
कुमतिहरतहै॥ ज्ञांनदेतध्यांनदेतआतमांबीचा
रदेतब्रह्मकौंबताइदेतब्रह्ममेंचरतहैं॥ मार
गदिषाइदेतभावकुभगतिदेतप्रेमकीप्रती
ति

तिदेतग्रप्रराजरतहैं: सुंदरकहतजगसंत
कछूदेतनांहिसंतजननिसदिनदेबौईकेर
तहैं: ॥२३॥ साधकीपरक्षाकोऊकैसैंकरि
जांनिहैं: जगतब्योहारसबदेषतहैं ऊपरकौं
अंतहकरणकौंननैंकपहिचानिहैं: छाजन
कैभोजनकैहलनचलनकछुग्रोरकोऊक्रिया
कैतौसोइबौबषांनिहैं: आपुनेंईगुननिआ
रोपतअज्ञांनीनरसुंदरकहतताते निंदाईकौंगा
निहैं: भावमैंतौअंतरहैरातिग्ररुदिनकौ
सौसाधकीपरक्षाकोऊकैसैंकरिजांनिहैं:
॥२४॥ कूपमैंकोमैंडुकातौकूपकौसराहत
हैराजहंससौंकहैकितौकतेरौसरहैं: मसका
कहतमेरीसरभरिकौंनगरुमेरैआगेगरुरकी
कितीयुकजरहै: गुबरैंमागोलीकौंलुढाइकरि
मांनैमोदमधुपकौंनिंदतसुगंधजाकोघरहैं:
आपुनीनजानैंग तिसंततनिकौंनोमधरैसुंदर
कहदेषौऐसौमूरछनरहैं: ॥२५॥ को
ऊसाधभजनीकछुतोलयलीनग्रतिकबहूं

कप्राईघकरमहासाआयदयोहै: जैसैंको

ऊमारगमैंचलतेंआसुटिपरे फिस्करिजगैतव

जहैंपंथलयोहै: जैसैंचंद्रमांकीपुनिकला

कीनहोइगईसुंदरसकलल्लोकदृष्टितियाकौन

यौहै: देवकौंदेवातनगयौतौकलामयौबी

रपीतरिकीमोलसुतौनांहिकछूगयौहै॥२६

॥ संतनिंकीनिंदाकरैसुतौमहानीचहै: जही

दगाबाजजहीकुष्टीजुकलंकनस्यौजहीमहापा

पीजाकेनयसिवकीचहै: जहीगुरद्रोही गौब्रा

ह्मनकौहननहारवहीआत्मांकौघातीहिंसा

जाकेवीचहै: जहीअघकौसमुद्रजहीअघको

प्रहीसुंदरकहतवाकीबुरीभांतिमीचहै: जही

हैमलेछजहीचंडालबुरेतेंबुरोसंतनिकीनींदा

करैसुतौमहानीचहै: ॥२७॥ संतनिकौं

निंदैताकौसत्यानासजाइहै: परिबजागिता

कैऊपरअग्रवांनचकचूरिजिजाइकछूगैरन

हींपाइहै: पीछैकेऊजुगमहानरकमेंपरेजाइ

जपर

गपरतैंजमहूंकीमारवकुथाइहै: ताकैपीछै
भूतप्रेतयावरजंगमजोनिसहैगौसंकटतवयी
छेपछिताइहै: सुंदरकहतत्र्प्रौरभुगतेत्र्प्रंन
तदुषसंतनिकौंनिंदताकोसत्यानासजा
इहै: ॥२८॥ संतनिकोगुनगहेसोईबरु
भागीहै: ताहीकैभगतिभावउपजैहैत्र्प्रनया
सजाकीमतिसंतनिसौंसदात्र्प्रनुरागीहै:
त्र्प्रतिसुषपावैताकेदुषसबदूरिहौंहित्र्प्रौर
ऊकाहूकीजिनिनिंदामुषत्यागीहै: संसार
कीपासिकाटियाइहैपरमपदसतसंगहीतैं
जाकैत्र्प्रैसीमतिजागीहै: सुंदरकहततातौ
तुरतकल्यांनहोइसंतनिकौगुनगहैसोईबरु
भागीहै: ॥२९॥ संतनिकीसेवाकरैसोईनि
सतरिहै: जोगजग्यजपतपतीरथव्रतादिदां
नसाधनसकलनहीयाकीसरभरिहै: त्र्प्रौर
कोऊदेवीदेवउपसनात्र्प्रनेकभांतिसंकसब
दूरिकरितिनतैंनसरिहै: सबहीकेसीसपरया

॥श्रीरामजी

वंदेमुक्त होइसुंदर कलतसुतोजनमैंनमरिहैं॥ सबहींकेसीस मनबचक्रमकरिअंतरनरा थैकछ संतनिकीसेवाकरैसोईनिसतरिहैं॥

॥३०॥२०॥२९३॥

वेगतरामहिकुगतरामहि

बोलतरामहिरामरह्यौहै॥ जीमतरामहिपीव तरामहिधीमतिरामहिरामगह्यौहै॥ जागतराम हिसोवतरामहिजोवतरामहिरामलह्यौहै॥ दे तकुरामहिलेतकुरामहिसुंदररामहिरामकह्यौ है॥ ॥१॥श्रोत्रकुरामहिनेत्रकुरामहिबक्रकुरा महिरामगाजे॥ सीसकुरामहिहाथकुरामहि पावकुरामहिरामहिसाजे॥ पेटकुरामहिपीठकु रामहिरोमकुरामहिरामहिबाजे॥ अंतरामनिरं तररामहिसुंदररामहिरामबिराजे॥ ॥२॥

भूमिकुरामहिआपुकुरामहितेजकुरामहिबा युकुरामैं॥ व्योमकुरामहिचंदकुरामहिसूर कुरामहिसीतनघामैं॥ आदिकुरामहिअंति कुरामहिमधिकुरामहिपुंसनबामैं॥ आजु

अथग्रंथ विपर्ययलिख्यते॥ इंदवछंद॥

३

कुरामहिकालकुरामहिसुंदररामहिल्हांमै
धामैः ॥३॥ देषकुरामहिअदेषकुरामहि
लेषकुरामअलेषकुरामैः एककुरामअनेक
कुरामहिसेषकुरामअसेषकुरामैः मोनकु
रामअमौनकुरामगौनकुरामहिमौनकुरं
मैः बाहरीरामहिभीतरीरामहिसुंदररामहिहैं
जगजामैः ॥४॥ दूरिकुरामनजीककुरामहि
देसकुरामहिप्रदेसकुरामैः पूरबरामहिपछि
मरामहिदक्षनरामहिउत्तरधांमैः आगेराम
कुपीछेरामकुव्यापकरामहिहैबनग्रांमैः सुं
दररामदसौदिसपुरएस्वरगकुरामपतालकु
तामैं ॥५॥ आपकुरामउपावतरामहिभंजन
रामसंवारनरामैः दृष्टिकुरामअदृष्टिकुरामहि
इष्टकुरामकरैसबकामैः बरणकुरामअबर
णकुरामहिरक्तनपीतनसेतनस्यामैः सुनि
कुरामअसुनिकुरामहिसुंदररामहिनामअ
नामैः ॥६॥ २१॥ २९९॥

अवनकूंदेषिसुनै

पुनिनैनकूंजिह्वासूंघिनासिकाबोल: गु
दायाइइंद्रियजलपीवैंबिनहींहाथसुमेरहितो
ल: कंधेपाइमूकनीचेकौंबिचरततीनिलो
कमैंमोल: सुंदरदासकहैसुनिज्ञांनीमली
भांतिआश्चर्यहिमोल: ॥१॥ अंधातीनि
लोककौंदेषैबहरासुनैंबहुतबिघिनांद: न
करावासकवलकीलेवैंगूंगाकरैबहुतसं
बाद: टूटापकरिगवैंपरबतपंगलाकरैं
निरतिअहिलाद: जोकोकूं अरथबिचारैसुं
दरसोईपावैस्वाद: ॥२॥ कुंजरकौंकीरीगि
लिबैठीसंघहिषाइअघांनोस्याल: मछरी
अगनिमांहिसुषपावैंजलमैंकूतीबहोतबे
हाल: पंगुलचढ्योपरबतकेऊपरमृतकहिंड
रांनौंकाल: जाकौंअनभवैहोइसुजांनैसुंदर
औसाउलटाख्याल: ॥३॥ बूंदहिमांहिसमु

द

अथविपरजयसब्दकौअंग: सवइया छंद:

पाक्रो:

ऊसमांनौराईमांहिसमांनौमेरः पांनीमां
हिबुंद्धिकाबूडीयाहनतिरतनलागीबेरः
तीनलोकमैंभयातमोसासूरजकीयौसक
लअंधेरः मूरिषहोइसुअर्थहियाहैसुंदरकरै
सबदमैंफेरः ॥८॥ मछरीबगुलाकोंगहि
षायौमूसैषायौकारौसांपःसूवैपकरिबिल्ल
ईषाषाईताकेमूंयेंगयौसंतापः बेटीअपनी
मोगहियाईबेटैअपनोषायौबापः सुंदर
कहैसुनकुरसंतौतिनकौंकोऊनलागौपा
पः ॥९॥ देवमांहितेंदेवलप्रगटयौदेवल
महितैंप्रगटयौदेवः शिष्यगुरहिउपदेसनला
गौराजाकरैरंककीसेवः वंझापुत्रपंगुइकु
जायौताकौघरषोवनकीटेवःसुंदरकहैसु
पंडितज्ञाताजोकोऊपाकोंजानेभेवः ॥१०॥
कमलमांहितैंपानीउपज्यौपांनीमहितैंउपज्यो
सूरः सूरमांहिसीतलताउपजीसीतलतामैंसु

अमरपूर: तासुषकौंकूपहोइनकबकुंसदाए
करसनिकटनदूर: सुंदरकहैसतियकूपौंहीं
प्रामैंरतीनज्ञानकुंकूर: ॥७॥ हंसचढौ
बृह्माकेऊपरिगरुड चढौपुनिहरिकीपीठि:
बैलचढौहैसिवकेऊपरिसोहमदेष्यौअप
नींदीठि: देवचढौपातीकेऊपरिजरषचढ
छौआयनपरिनीठि सुंदरएकअचंभाहूवा
पानीमांहिजरैअगीठि: ॥८॥ कपराधोबी
कौंमांहिधौवैमांटीवपुरीघरैकुंभार: सुईबि
चारीदरजीलिसीवैसौंनाताबैपकरिसुनार:
लकरीनउईकौंगहिछीलैयालसुबैठीघडैलू
हार: सुंदरदासकहैसुनिज्ञांनीजोकोऊयाको
करैबीचार: ॥९॥ जाघरमांहिबहोतसुषपा
यौताघरमांहिबसैअबकौन: लागीस्वबैंमिग
ईवारीमीठैलाग्यौएकबहलौन: परबतऊडि
रुईथिरबैठीअैसौकोऊकबाज्योपौन: सुंदर

कहै

कहैनमानैकोइतातैपकरिबैमुयमौंनः ॥२०॥ ५८

रजनीमांहिदीवसहमदेष्योदिवसमांहिहमदे

षीरातिः तेलनस्यौसंपुरणतामैंदीपकजरैजरै

नहिबातिः पुरुषएकपांनीमैंप्रगट्योतानिगु

राकीकैसीजातिः सुंदरसोईलहैअर्थकौंजो

नितकरैपराइतातिः ॥२१॥ अनयोमेघघटा

चहुंदिसतैंबरषनलग्योअषंडितधारिः बु

झीमेरनदीसबसूकीकरलागयौनिसदिनए

कसारः कांसापस्यौबीजलीऊपरिकीयो

सकलकुंटबसंहारः सुंदरअर्थअनुपमयाः

कौंपंडितहोइसुकरैबिचारः ॥२२॥ बा[illegible]

मांहेमालीनीपज्योहालीमांहेनिपज्योषेतः

हंसहिउलटिस्यांमरंगलागोभंवरउलटिकीं

फूबेसेतः ससिहरउलटिराहकौग्रास्योसूर

उलटिकरिग्रास्योकेतः सुंदरसगुराकौंतजि

जाग्योनिगुरासेतीबांध्योहेतः ॥२३॥ अगनि

मथनकरिलकरीकाढीसोवहलकरीपांन

ऐप्रघार: पानीमथिकरिघस्वनीकास्योसो
ह्तमइपैबारंबार: इघदहीकीइंछाक्रागीजा
कोै — मथतसकलसंसार: सुंदरअवतौ
नसैंसुधारेचिंतारहीनएकलगार: ॥१७॥
पवमेहिं ओलीगहिराघीजोगीनियथ्या मांगनजा
इ: जागेजगतसौवूईगोरबअैसासबदसु
नांवैआइ: निफ्राफुरेबफुतकरितांकौंसोन
हि मथ्यचेलहियाइ: सुंदरजोगीजुगिजु
गिजीवैताजोगीकीइरिबलाइ: ॥१८॥ नि
र्दयहोइतिरैपसुघातकदयावंतबूझैनवमांहि:
लोभीलगैसबनिकौंप्यारौनिरलोभीकौंगह
रनांही॥मिथ्याबादीमिलेब्रह्मकौंसतिक
हैंतिजमपुरिजांहि॥ सुंदरघूपमांहिसी
तलताजलतरहेजेबेरछांहि: १८॥ मायबा
पतजिघीजमदांनीहरियतचलीषसमकेपास
:बहूबिचारीबमवषतावरिजाकेकहेंचल
तहेसास: माइठरीभलोहितकारीसबकूं
देव

टंबकौकीयौनोसः औसीविधि घरबस्यौ
हमारोकहिसमझावैसुंदरदासः १७॥
परधनहरैकरैपरनिंदापरधीकौरायेधरिमां
हिः मासखाइमदरापुनिपीवैताहिमुकति
कौसंसयनांहिः अकर्मग्रहेकरमसबत्यागे
ताकीसंगतिपापनसांहिः औसीकरैसुसंत
कहावैसुंदरओरगपजिमरिजांहिः १८॥
बढईचरखामलौसवारयौफिरनैलागो
नीकीभांतिः बहुमासकौकहिसमझावै
तुंमेरेढिगबैठीकातिः नांब्हौंतारनटूटैकब
हूंपूनीघटैदिवसनरातिः सुंदरबिधिसौं
बुनैजुलाहाखासानिपजेंगचीजातिः॥१९॥
घरघरफिरैकवांरीकन्यांजनेजनेसौंक
रतीसंगः बेस्यांसुतौभलीभईपतिबृता
एकपुरुषकैलागीअंगः कलिजुगमांहैंस
तजुगथाप्यौपापीगदैधरमकौभंगः सुंदर
कहैमुग्धथहिपावैजोनीकैंकालिजेग्र

नग ॥२०॥ बिप्रसोईकरनैलागौन्चोकाग्नी
तरिबेठेग्राय: लकरीमांहेचुल्लादीनौरोटी
उपरितवान्वाछायः धिन्वरीमांहिहेंमिया
गोधिसालनग्रायघउरायापुः सुंदरजीमत
ग्रतिसुषपायोग्रबकेभोजनकीयेग्रघा
पुः २१॥ बेलउलटिनाइककौलादोब
स्तुमांहिभरिगौनग्रपारः नलीभांतिकौ
सौदाकीयेग्रायदिसंतरयासंसारः नायम
नीन्पुनिहरषतकौलेमोहिमिल्यौनीकोन
रतारः पुंजीजायसाहकौसोपीसुंदरसिर
तैंउतस्यौभारः ॥२२॥ बनिकएकबनि
जीकौग्रायौपरेतावराभारीमैठिः भली
बस्तुकछलीनीदीनीघेविगवरियावांधीग्रे
ठिःसोदाकीयौन्चल्यौपुनिघरकौलेयाकी
यौबरीतरबेठिः सुंदरदासषुसीग्रतिहूवो
बेलगयोपुंजीमैपैठिः ॥२३॥ पहराइत

घर

धरमुस्यौसाहकौर ज्यौंकरनैंलागौचोर : कोतवालकनैंकरिबांधैंछूटैंनहीसांफ अरुभोर : राजागोवछो निकरिमांग्यो फूवौसकलजगतमैंसोर : परजासुषीभ ईनगरीमैंसुंदरकोईजुलमनजोर ॥२४॥ राजाफिरैबियतिकोमार्योघरिघरिदुकांनमां गतभीष : पायपयादोनिसदिनकोलेघोरा चालिसकैनहिबीष : आकअरंनकीलउ ढीन्हूयेछाकैवकुन्तरसमरेईष : सुंदरकोऊ जगतमैबिरलोयामूर्षकोलाग्रैसीष ॥२५॥ पांनीजरैपुकारैनिसदिनताकौंआगनिबुफा वैआइ : ज्यूसीतलहूंतपतनयौकरवारंवार कहैसमफाइ : मेरीलपटतोहिजोलागैंतो तूंभीसीतलहोजाइ : कवहूंजरनिफीरी नहिउपजैसुंदरसुषमैरहैस्माइ ॥२६॥ ष समपस्योजोरूकेपीछैकहौनमांनैमोहीरांक :

जितँतितफिरैमटकतीयौंहीतौंतौंकीयेजग
तमैंनांमः तौंकूंभूषनमागीतेरीनंगिलिवे
गीसारीमांमः सुंदरकहेसीषसुनिमेरीअब
नंघरघरफिरिबौछांमः ॥२७॥ पंथीमां
हिपंथचलिआयौसोवहपंथलष्यौनहि
जाइः वाहीपंथचल्यौजुगिपंथीनिरमयदे
सपहौंच्यौआइः तहांकुकालपरैनहिकब
हूंसदासरवनफूलहौंगलराइः सुंदरकुषीन
कोकुदीसैअषयसुषमेरहेस्माइः ॥२८॥
एकअहेरीवनमैंआयौसेलनलागौमलीसि
कारः करमैंधनुषकमरमेंतरकससस्यांसा
जधेरैवांसबारः मास्यौसंघव्याघ्रपुनिमा
स्यौमारीबहुमृगनिकीमारः असैंसकलमा
रिघरिल्यायौसुंदरराजहिकीयौजुहारः
२९॥ः शुककेबचनअमृतमयअसेकौकि

लक्ष्या रिरहै मनमांहि : सारौसुनै भागवन्त
कान्ह सारसतौ कपालै नांहि : हंसनु
गै मुक्ताफल भ्रस्यहि सुंदर मांनसरोवर
नांहि : काककवी स्वरब्वियई जेतेतेस
बदौ करकहि जांहि : ॥३०॥ नष्टहीं
हिंद्विज भ्रिष्टकी साकरिकष्टकीयैं नहिपा
वैगोर : महिमांसकल गईतिनकेरीरहत
पगनतरसब सिरमोर : जिततित फिरहि
नहिंकछू आदरतिनकौं कोऊ नघालत
कोर : सुंदरदास कहै समभाक्रेप्रसी कोऊ
करौमति औरः ॥३१॥ सास्त्रबेदपुरानंप
ढैकिनपुनिव्याकरनपढै जेकोइ : संध्या
करैगहै षटकरमहि गुनअरुकाल बिचा
रैसोइ : रासिकांमतवहीबनि आवैमनमें
सबतजिराखेदोइ : सुंदरदास कहै सुनिपं
डितरांमनांमबिनमुकतिनहोइ : ॥३२॥

पेकहि आपनौं भावजहां तहां बु
धिके भेदसौं भ्रिन्नम नासै: जौयह क्रूर
तौं क्रूरत्त हां पुनिपाके धिजेतौ तहां पुनि भासै:
जौयह साधुतौ साधुत्त हां पुनि पाके हसे तैं त
हां पुनि हासै: जैसौ ई आपु करे मुषसुंदर
तैसौ ई दपन मांहि प्रकासै: ॥१॥
जैसैं स्वान काच के सदन मधि देषि औरु मूं
कि मूंकि मरत करत अभिमान जु: जैसैं ग
ज फटक सिला सों अरि तोर दंत जैसैं स्यंघ
कूप मांहि उऊ कि मुलांन जू: जैसें कोऊ फे
री षात फिरत जगत देषत तैसैं हि सुंदर सब तौ
ई अग्यान जू: आपु ही को भ्रम सुतौ इसमें दि
षाई देत आपुकौं निवारै कोऊ इसरो न आ
न जू: ॥२॥ नीच ऊंच भलौ बुरौ सजन दुर
जन पुनि पंडित मूरष सत्रु मित्र रंक राव है:

॥२४॥ ३३१॥ अथ आपनैं भ्रमकौ अंग:
इंद्रव छंद:

सुं॰ वि॰

मीन

मोनऋपमोनपुनिपापसुषदुषदोऊस्वरग
नरकबंधमोक्ष द्वंकौचावहे: देवताअस्वर
भूतप्रेतकीटकुंजरऋपसुअरुपंक्षीस्वा
नसूकरबिलावहैः सुंदरकहतयह एकई
अनेकरूपजोईकछूदेषियेसुआपुतौईर
नावहैः ॥३॥ याहीकैजगतकामयाहीके
जगतक्रोधयाहीकेजगतलोभयाहीमोहमार
ताहै॥ याकौयाहीबैरीहोतयाकौयाहीमित्रहो
तयाकोयाहीसुषदेतयाहीदुषदाताहै॥या
हीब्रह्मायाहीरुद्रयाहीबिष्णुदेबिपतयार
हीकौदेवदैत्ययक्षसकलसंघाताहै॥याहीर
कौयुभावसुतौयाहीकौयाहीकोदिषाई
देतसुंदरकहतयाहीआतमांबिषाताहै॥९
॥ना याहीकौतौभावयाकौसेकउपजावत
है याहीकौतौभावयाकौनिद्राककरतहै॥या
हीकौतौभावयाकौभूतप्रेतहोइलगेयाही

कोतौ भाव याकी कुमति हरतु है ॥ याहीको
तौ भाव याको बापु कौ वघूरा करै याही कौ
तौ भाव याही धिकै धरतु है ॥ याही कौ तौ भा
व याको धार मे महाइ देत सुंदर याही को भा
व याही लैत रतु है ॥ ५ ॥ आपुही को भाव सु तौ
आपु कौ प्रगट होइ आपुही आरोपि करि आ
पु मन लायो है : देवी आदि देव कौ ऊ भाव के
उपासैता हि कहै मै तो पुत्र धन इन हीतै पा
यो है ॥ जैसै स्वान हाम कौ न्व चोर करि मार
नै मोद आपुही को मुख फोरि लोहू चाटियां
यो है ॥ तैसै ही सुदर यह आपुही चेतनि आ
हि आपुने अज्ञान करि औरसौ बंधायो है ॥
॥ ६ ॥ नीचे तै नीचे स ऊंचे तै
ऊपरि आगै तै आगै है पीछे तै पीछो ॥ दूरि तै
दूरि नजीक तै नीर ही आम तै आमो है ती छे तै ती
छो ॥ बाहरि भीतरि भीतरि बाहरि ज्यों कौ ऊ जा
नै

नैं त्यौंही करिई छौ: जैसौही आपुनौ नाव
है सुंदर तैसौंही हे दूग बोलि कै बीछौ: ॥७
~~आपुने नाव है सुंदर तैसोई~~
आपुने नाव तैं सूर सो दीसत आपुने नाव तैं
चंद्र सौ भासै: आपुने नाव तै तार अनंत जु
आपने नाव तैं बिजुलता सै: आपुने नाव
तै तूर है तेज है आपुने नाव तै जोति प्रकासै:
तैसौ हि ताहि दिखावत सुंदर जैसौ ही होत
है जाही कौ आसै: ॥८॥ आपुने नाव तै स
बक साहिब आपुने नाव सबै कौ कहावै:
आपुने नाव तै अनि ऊपासत आपुने ना
व तै जगतिकुं गावै: आपुने नाव तैं कुस रस
धारत आपुने नाव तै बाहरि आवै: जैसौ
हि आपुनौ नाव है सुंदर ताहि कौ तैसो ना
व दिखावै: ॥९॥ आपुने नाव तै दूरि ब
तावत आपुने नाव नजीक बषान्यौ:

आपुने भावतें इष्ट पितायो जु आपुने भा
वतें बीगल जान्यो : आपुने भावतें वारिमु
ज आपुनि आपुने भावतें सींग सो मान्यो : सु
दर आपुने भाव को कारन आपुहि पुरन
ब्रह्म पिछान्यो : ॥१०॥ आपुने भावते हो
इ उदास जु आपुने भावते प्रेम सों रोवै : आ
पुने भाव मिल्यो पुनि जानत आपुने भावते
अंतर जोवै : आपुने भाव रहे नित जागत
आपुने भाव समाधि में सोवै : सुंदर जो
सोही भाव है आपुनौं तैसो ई आपत हां
त होहोवै : ॥११॥ आपुने भावतें भूलि
पस्यौ भ्रम देह स्वरूप नयो अभिमानी :
आपुने भावतें वें चलता अति आपुने भा
वतें बुधि थिर आनी : आपुने भावतें आप
बिसारत आपने भावतें आतम ज्ञानी : (
सुंदर जैसो ई भाव है आपुनौं त सोही होइ ग

यो

जेसैंकोऊपुरषकैकेगलैसौप॥ ३४३॥
तफिरतकछूअैसोम
बयुकरिनान ... तप्रति ... रहजेसीहीताघटचेतनतै
कहै ...
॥ईरीसेः हाथीकीदेहमैहाथीसोमानत
चीटीकीदेहमैचीटीकीरीसेः स्वंघकीदेह
मैंस्वंघसोमांनतकीसकीदेहमैंमानतकीसेः
जैसीनपाघिमईजहांसुंदरतेसोहीहोइरह्यो
नषसीसेः॥१॥ जैसेंहीपावकहकाठकेजो
गतैंकाठसोहोइरह्योइकठोरः दीरघका
ठमैंदीरघलागतचौरैसेकाठमैंलागतचौरोः
आपनौंरूपप्रकासकरैजबजारिकरैतबर
औरकोऔराः तैसैंहीसुंदरचेतनिआपसु
आपुकौनांहिनजानतबौराः॥२॥

प्रश्न आपुहीकौंआपुमूलिगयौसुतौकाहतैं
अजरअमरअबिगतिअबिनासीअजकहत
सकलजनश्रुतिअरगाहतैंः निरगुणनिर्मल
अतिसुधनिरबंनितअैसोऊकहतऔरग्रंथनि

मनहर

प्रथमदृष्टांतविषमगतकौअंगः १७दृष्टांत

केयाहेतेः ॥ यद्यपिवायोस्तुआपुनेमा
रनहैसुंदरसकलरमित्रापुनेमावतेंवारिमु
जमदाउहोतयाहीतैं सो मान्योः सु
उत्तरः आपुमूलिगयौसुतौकाहेत ॥३॥
आपुहीकौंआपुमूलिगयौसुषचाहेतेःजे
मीनमासकौंनिगलिजातलौनलागिलौह
कौकंटकनहिजानतउमाहेतेंःजैसैंकपिगा
गरिमेमूठीबांधिराखेसरछाकिनहिदेतसुतो
स्वादहीकेचाहेतेंःजैसैंबकनालियस्वुच
मारिलरकतसुंदरसहतइयदेषियाहीलाहे
तेंः देहकौंमंजोगपाइकेंइनिकेंवृथापसौ
आपु इदव आपुहीकौंमूलिगयौसुषचाहेतें ॥४॥
देषकुचेतनमानतकेसोःज्यौंको
ऊमदिपीयेंअतिछाकतनाहिकछूसुधिहै
भ्रमऔसोःज्यौंकोऊखाइरहेंगमूरहिजा
नेनहिकछुकारनतैसोःज्यौंकोऊबालकैसं
करपावतकेंपिउरेअरुआनतमेसोःतैसैं
हिसुंदरआपुकौंभूलिसुदेषकुचेतनमानत
केसोः ॥५॥ मूलिगयौभ्रमतेंभ्रमआयेः
ज्यौ

जैसैंकोऊपुरषकैकैग[illegible]यैतवैसीहीनां
तफिरतकछूऐसौम[illegible]लहालतहेलगिपें
बयुकरिबान[illegible]तिप्रीतिश्यबहिकांपे : देहकेम
कहेंइनिकेजेरूतमांनतहेसबमोहिकोंं
व्यापेः सुंदरपेवपस्योअतिसेकरिमूलिग
यौभ्रमतेभ्रमआपे : ॥६॥ ज्यूंद्विजकोऊक
छ्याकिमहात्मसूद्रभयोकरिआपकौमान्यो:
ज्यूंकौऊनृपतिसोवतसेजसुरंकभयोस्वप्नै
मैंजान्यो : ज्यूंकोऊरूपकीरासिअतिरूपकरूपक
हैभ्रमभैवकआंन्यौं : तैसैहिसुंदरदेहसोंकैक
रिपाभ्रमआपुहिआपुभुलान्यौं : तैसैहिसुंदर
देहसों ॥७॥ एकईब्यापकबस्तुनिरंतरबि
स्वनहीयहब्रह्मबिलासे : ज्यूंनटमंत्रनिसों
दिखांवतहेकछूओरईओरईनासे : ज्यूंर
जनीमहिबूझिपरेनहिजोलगिसूरजनांहि
प्रकासे : त्यूंयहआपुआपुनजांनतसुंदरछ्रैर
हैसोसुंदरदासे : ॥८॥ नूतनिमैं
नूतनिमिलिनूतनहोरहोहे : इंद्रिनिकोंपे

रमुनिवृंदनिकेपद्मपिवायोज्युआपुनेभा
करिआपुतनगहीहे आपुनेभावतैवारिमु
कटकछूपरेआइमोइ इमा त्यो: सु
डुकसह्योहे: नूमतनमतक कुनमपा
आरेओरचिरंकालबीत्योपेस्वरूपकोनल
ह्योहे: सुंदरकहतदेखौचमकीप्रबलताई
नूतनमैनूतमिलिनूतसोझेरह्योहे:॥१९॥
आपुहिकोनूलिकरिआपुहीबंधायोहे: जे
सैंसुकनलिकोनछाडिदेतचुंगलतैजोनैका
हूआरैमोहिबांधिलटकायोहे: जैसेकपिमु
जनिकोढरकरिमानैआगिआगेधरितापैर
कछुसीतनगमायोहे: जैसैंकोऊदिसानू
लिजातकुंतोपुरबकोंगलटिआपूगेकेरिप
छिमकोआयोहे: तैसैहिसुंदरसबआपुहि
कोनरमनयोआपुहीकोनूलिकरिआपहीब
धायोहे: ॥२०॥ औसोभ्रमआपुहीकोआपु
करिलयोहे: जैसेकोऊकामनीकेहीये
परनूंछैबालसुपनमैंकहेमेरोपुत्रकाहूह्योहै:
जैसे:

जैसैंकोऊपुरषकेकेग्रवियेकुतीमनिछू
तफिरतकछूऐसोभ्रमभयोहे: जैसेंकोऊ
बपुकरिनावरोबकत मोलैश्रौरकीश्रोरई
कहेसुघिभूलिगयोहे: तैसेंहिसुंदरनिजरू
पकौंबिसारिदेतऐसोचमश्रापुहींकौश्रापुक
रिलयोहे: ११॥ भूलिकैंस्वरूपकोंग्रनाथ
सोकहतुहे: दीनहीनछीनसोंह्वैजातछि
नछिनमांहिदेहकेसंजोगपराधीनसोरहतुहे
॥ श्रंचसीतलगेघांमभूषलगेप्यासलगेसोक
मोहिमांनिश्रतिषेदकौलहतुहे: श्रंधमयो
पंगुनयोमूकह्वैनघिरनयोऐसोमांनिमांनि
भ्रमनदीमेंबहतुहे: सुंदरअधिकमोहियाही
तेंश्रवंमोश्राहिभूलिकैंस्वरूपकौंश्रनाथसो
कहतुहे: ॥१२॥ जैसेकोऊसुपनेमेंकहेमे
तोकूंटनयोजागिकरिदेषेवहेमनबस्वरूपहे:
॥ जैसेंकोऊराजापुनिसोइकैंभिषारीहोइश्रा
पिघरतैंमलाभूपनकोंभूपहे: जैसैंकोऊमे
चकसौंकहेमेरोसिरकहांगेचकरायतेंजानें
सिरकौंरदूपहे: तैसैंहिसुंदरपरब्रह्मकरिभू

लौआपुभ्रमकेगयेतैंयहआत्माअनूपहे :
॥१३॥ जैसैकाहूपोस्तीकीपागपरीभूमि
परहाथलेकैंकहेएकपागमैंतौपाईहे : (
जैसेसैषचल्लीहूंमनोरथनिकीयोघरकहे
मेरोघरगयौगागरिगिराईहे : जैसैकाहूभू
तलग्योबकतहेआकबाकसुधिसबहरिन
ईओरमतिआईहे : तैसैंहिसुंदरयहभ्रम
करिभूलौआपुभ्रमकेगयेतेंयहआतमासदा
ईहे : १४॥ आपुहीचेतनियहइंद्रिनिचेतनि
करिआपुहीमगनहोइआनंदबढायोहे :
जैसेनरसीतकालसोवतनीहालीकोफिआ (
पुहीतपतकरिआपुसुषपायोहे : जैसैंबाल
लकरीकौघोराकरिमंकिन्चढेआपुअसवार
होईआपुहीकुदायोहे : तैसैहीसुंदरयहजगम (
कौसजोगपाइपरसुषमोनिमोनिआपुहीभूला
योहे : १५॥ कहूंभूलौकामरतकहूंभूलौसा
धिजतकहूंभूलौगृहमधिकहूंबनबासीहे :
कहूंभूलौनीचजोनिकहूभूलौकूंचमोनिकै

कू

हूं भूलो मोह बाधिक हूं तौ उदासी है : कहूं
भूलो मौन धरि कहूं बकबाद करि कहूं भूलो |
मक्के जाइ कहूं भूलो कासी है : सुंदर कहत
अहंकार ही तें भूलो आपु एक आवै रोज अ
रूढ जैव बसि हासी है : ||१६|| मै बहुत सुख पा
यो मैं बहुत दुख पायो मैं अनंत पुनि कीये मेरे घोर
तै पाप है : मैं कुलीन बिख्यात पंडित प्रबी
न महा मेतौ मूढ अकुलीन हीन मेरौ बाप है : |
मैं तौ राजा मेरी आनि फिरै चहु चक मोहि मैं तौ
रंक इ बिहीन मोहि तौ संताप है : सुंदर क
हत अहंकार ही तें जीव नयौ अहंकार गयें य
ह एक ब्रह्म आपु है : ||१७|| देह ही सपुष्ट ल
गै देह ही दुबरी लगै देह ईकौ सीत लगै देह ईकौ
तावरौ : देह ईकौ तीर लगै देह कौ तुपक लगै
देह कौ रूपा न लगै देह ईकौ घावरौ || देह ई
सरूप लगै देह ई करूप लगै देह ई जोबन

लगैहेबृधमावरो ॥ देहईसौंबांधिहेत
आपुविषैमानलेत सुंदरकहत ऐसोबुधिही
नबावरो ॥ २८ ॥ आपुहीचे

तनब्रह्मअषंडित सोभ्रमतैंकछु आनिपरे
षे ॥ ढूंढतताहिफिरैजितहीतित साधत
जोगबनावतभेषे ॥ औरऊकसटकरैअ
तिसेकरिपूतऊआतमतत्वनपेषे ॥ सुंदरभू
लिगयौनिजरूपहि हैकरकंकणदर्पनदेषे
॥ २९ ॥ सूत्रगरेमहिमेल्हिनयौ द्विजब्राह्म
नजांन्यो ॥ क्षत्रियह्वैकरिछत्रधस्योसिरहे
गयपैदलसौंमनमांन्यो ॥ वैस्यभयौवपुकी
वयदेषतभूतप्रपंचवनजहिंगान्यो ॥ सुद्रभ
यौमिलिसद्रसरीरहिसुंदरआपुनहिंपहच्या
न्यो ॥ ३० ॥ ज्यूंरविकौंरविढूंढतहैकहूंत
पतिमिलैतनसीतगवांऊ ॥ ज्यूंससिकौंस
सिचाहतहैपुनिसीतलह्वैकरितपतिबुझांऊ
॥ ज्यूं

ज्यूं कौऊ सोंनि मयेन रटै रत है घर मैं अपने
घर जांऊं ॥ त्यूं यह सुंदर भूलि सरूप हि ब्र-
ह्म कहै कब ब्रह्म हि पांऊं ॥ २१ ॥ आपन
देखत है अपनौ मुख दूपन काटल ग्यो अ-
ति भूला ॥ ज्यूं दृग देखत तैं रहि जात न सोज
वही पुतरी परि फूला ॥ छाई अज्ञांन रह्यौ
अति अंतरि जांनि सकै नहि आतम मूला ॥
सुंदर यौं न पज्यौ मन कै मल ज्ञांन बिनां नि
ज रूप हि भूला ॥ २२ ॥ देह स सरूप भ
यौ मुख बोलै । दीन भयौ बिललात फिरै नि
तई जिनि के बसि छीलक छोलै । स्यंघ नही
अपनौं बल जांनत जंबुक ज्यौं जित ही तित ड-
ोलै ॥ चेतनता बिसराइ निरंतर लै जड़
ता भ्रम गांठि न खोलै ॥ सुंदर भूलि गयौ नि
ज रूप हि देह सरूप भयौ मुख बोलै ॥ २३ ॥
देह सरूप भयौ अभिमांनी ॥ मैं सुखिया

ने

सुषसेजसुषासमेहैगयभूमिमहारजधानी ॥हौंदुषियाषिनरैनभरौंदुषमोहिविपतिप रीनहीछांनी: ॥हौंअतिउत्तमजातिबमेकुल हौंअतिनीचकुरूपाकुलहोनी: ॥सुंदरस्वेततन तानसंभारतदेहसरूपभयोअभिमांनी: ॥ २८॥ प्रमबिछैरतपतिभईपुनिजनमलीयो सुसुधिनजांनी: बालकुमारकिसोरजुवा दिकबृधभयेअतिबुधिनसांनी: ॥जैसीही नौतिभईबपुकीगतितैसोहीहोइरह्योपह प्रांनी: ॥सुंदरस्वेतनतानसंभारतदेहसरू पभयोअभिमांनी: ॥२९॥ ज्यूंकोऊत्यागक रैअपनौघरबाहरिजाईकैभेषबनावे: मूंड मुडाइकैकानफराइबिभूतिलगाइजटाअब धावै: जैसोईस्वांगकरैबपुकौपुनितैसोई मांनितिसौकैजावे: त्यूंयहसुंदरआपुनजा नतभूलिसरूपहिऔरकहावे: ॥२६॥

क्षिति जल पावक पवन नभ मिलि करि सब्द
स्पर्स रूप रस गंध ज्ञः श्रोत्र त्वक चक्षु घ्राण र
सना रसको ग्यान बाकि पाणी पाद पायु उप
स्थ बेध ज्ञः मन बुधि चित अहंकार ए चौबी
स तत्व पंचिं बिस जीव तत्व करत है धंध ज्ञः स
उ बिसकौ है बंह्म सुंदर सु निह करम ब्यापक
अखंड एक रस निरसंध ज्ञः ॥१॥ श्रोत्र दिक
त्वक वायु लोचन प्रकास रबि नासिका अस्व
नी जिह्वा बरंग बखानियें: बाक अगनि है
स्त इंद्र चरन उपिंद बल मेढ्र प्रजापति गुदा मी
त्र कौ गनियें: मन चंद बुधि बिधि चित
बासदेव आहि अहंकार रुद्र कौ प्रभाव करि
मानियें: जा कीस ता पाइ सब देवता प्रकास
त हैं सुंदर सु आतमा हि न्यारो करि जानियें:
॥२॥ श्री गुरु नंद गदेव तहै सन्तो

रो॥२४॥ अथ दश दिसा बिश्वानी कौं अंग: मनहर छंद

इंद्रव छंद

रसघ्रांणसुगंधपियारो॰ कौमलतात्वकजांन
तहेपुनिबोलतहेमुखसबदउचारो॰ पांनिग्र
हेपदगौनकरैमलमूत्रतजेउनयअधद्वारो॰
जोकेप्रकासप्रकासतहेसबसुंदरसोईरहे
घटन्यारो॰॥३॥ बुधिन्रमैमनचित्तन्रमैंअ
हंकारन्रमैकहाजानतनांही॰ श्रोत्रन्रमैत्वक
घ्राणन्रमैरसनांदृगदेखिदिसौदिसजांही॰
बाकन्रमैकरपादन्रमैगुदद्वारन्रमैकहूंकां
ही॰ तेरन्रमायेन्रमैसबहीगुनसुंदरउंकूं
न्रमेइनमांही॰॥४॥ बुधिकोबुधिरुचित्त
कोचित्तअहंकोअहंमनकोमनसोई॰ नेर
नकोनैनहेबैनकोबेनहेकानकोकानत्वका
त्वकहोई॰ घ्राणकोघ्राणहेजीभकोजीभहे
हाथकोहाथहेपगौपगहोई॰ सीसकोसीस
हेप्राणकोप्राणहेजीवकोजीवहेसुंदरसोई॰
॥५॥ कैसेकैजगतप्रहर

मौ

उपसंथ

मनहरग्रंथ प्रश्न॰

च्यौं है जगतगुर मोसौं कहौ प्रथम ही कौन तत कीनौ है: प्रकृति कि पुरुष कि महतत्व अहंकार कि धौं उपजाये सत्व रज तम तीनौ है: किधौं व्यौम वायु तेज आपु के अवनि कीनै किधौं पंच बिषय पसार करि लीनौ है: किधौं दस इंद्री की धौं अंतह करन कीन सुंदर कहत किधौं सकल बिहीनौ है: ॥६॥

उत्तर

ब्रह्म तैं पुरष अरु प्रकृति प्रगट भई प्रकृति तैं महतत्त पुनि अहंकार है: अहंकार हू तैं तीनौ गुन सत्व रज तम तमहू तैं महाभूत बिषय पसार है: रजहू तैं इंद्री दस पृथक पृथक भई सतहू तैं मन आदि देवता बिचार है: ऐसे अनुक्रम करि सिषि सौं कहत गुरु सुंदर सकल यह मिथ्या भ्रमजाल है: ॥७॥

प्रश्न:

मेरौ रूप भूमि है कि मेरौ रूप आप है

किमेरोरूपतेजहे किमेरोरूपपौनहे : मे
रोरूपव्योमहे किमेरोरूपइंद्री हे किअंतहक
रणहे कि बेगहे कि मोनहे : मेरोरूपरगु
न की अहंकारमहतत्वप्रकृतिपुरषकि थौर
बोलेहकि मोनहे : मेरोरूपमूलहे कि तुति
आहिमेरोरूपसुंदरपुछतगुरुमेरोरूपकोन
हे : ॥९॥ उतर तूकछुभूमिनांहिआपते
जबायुनांहिव्योमपंचविखेनांहिसोतोब्रम
रूपहे : तूंतोकछुइंद्रीअरुअंतहकरणन
नांहि तीनोंगुणकंतूं नांहि सोकछोहब्रूपहे
॥ तूंतोअहंकारनांहि पुनिमहतत्वनांहिप्र
कृतिपुरुषनांहि तूंतोसुअनूपहे : सुंदरबि
चारिअैसेंमिथ्यसोकहतगुरुनांहिनांहि
करतेंरहेसुतेरोरूपहे : ॥१०॥ तेरोतोसरू
पहेअनूपचित्तनेंरघनदेहतोमलीनजम
पाबिबेककीजिये : तूंतोनिहसंगनिराका
र

कारण बिनासी अज देहतौ बिनास वंत ता ७२

हिन हि थी जियै : ज्यूं तौ घट उर मीर रहत सदाए

कार सदेह के बिकार सब देह सिरा दीजियै :

सुंदर कहत यौं बिचारि आपु निंन जानि पर

कौं उपाधि कहा आप पे लीजियै : ॥१०॥

देह ई नरक रूप दुष कौन वारपार देह ई स्व

रग रूप झूं गे सुष मान्यो है : देह ही कौं बंध

मोक्ष देह ही अप्रोक्ष देह ई के कर्म शुभा

शुभ गन्यो है : देह ई मैं और देह सुसी हो निला

सक रै ताही कौ समुझि बिन आतमा बषान्यो

है : दोउ देह तैं अलिपत दोऊ कौ प्रकासक

है सुंदर चेतन रूप न्यारो करि जान्यो है ॥११॥

॥ देह हलै देह चलै देह ही मैं देह मिलै देह षा

इ देह पीवै देह ई मरत है : देह ई हिवारे भरै

देह हिं पावक जरै देह रन मांहि जूझै देह ई प

रत है : देह ई अनेक कर्म करत बिबिध नां

तिचेवककीसंतापाइलोहज्यूंफिरन्हैः
आत्माचेतनिरूपव्यापकसाक्षीअनूपसुं
दरकहतसुतौजनममैंनमरन्हैः१२॥ देह
कौनदेहकछूदेहकौममत्वछाडिदेहतौ
तमोमोदीयेदेहदेहजातहैः घटतौघटतघ
टीघटीघटनासहोतघटकेगयेंतेंघटकीन
फेरिजातहैःप्यंमप्यंमाहिप्यंमप्यंमकौ
नपावतहैप्यंमप्यंमजातपुनिप्यंमहीकौ
पातहैः सुंदरनहोइजासौंसुंदरकहतजग
सुंदरचेतनिरूपसुंदरबिख्यातहैः॥१३॥

प्रश्नोत्तर

देहयहकिनकोहैदेहपंचभूतनिकोपं
चभूतकौनतेंहैप्रकृतिमझारतैंः अहंकारकौ
नतेहैजासोमहतत्वकहैंमहतत्वकौनतेंहैं
प्रकृतिमझारतैंःप्रकृतिहूंकौनतेंहैपुरुष
हैजाकौनामपुरुषसोकौनतेंहैंब्रह्मनिरधा
रतैंः ब्रह्मअबजान्योहमजान्योहैतौनिश्चे

करि

तेसमताकौंपाते ते

करि निश्चै हम कीयो है तौ चुप मुख द्वारतें ॥
१४॥ एक घट मांहि तौ सुगंध जल भरि राख्यौ
एक घट मांहि तौ दुरगंध जल भर्यो है ॥ ए
क घट मांहि पुनि गंगोदिक राख्यो आनि ए
क घट मांहि आंनि मदिरा कूं कर्यो है ॥ एक
घृत एक तेल एक मांहि लघु नीति सब ही मे
सविता को प्रतिबिंब पर्यो है ॥ तैसैंहि सुंद
र ऊंच नीच मधि एक ब्रह्म देह भेद देखि भि
न्न भिन्न नांम धर्यो है ॥१५॥ भूमि परें आप
आप हूं के परें पावक है पावक कै परें पुनि
बायु हूं बहतु है ॥ बायु परें व्योम व्योम हूं के परें
इंद्री दस इंद्रिनि के परें अंतःकरण रहतु है ॥
अंतह करण परें तीनो गुण अहंकार परें मह
तत्व को लहतु है ॥ महतत्व परें मुल माया माया
परें ब्रह्म ताही तें परात पर सुंदर कहतु है ॥
१६॥ भूमि तौ बिलीन गंध गंध हूं बिलीन

मि

अपअपहूं बिलीनरसरसतेजमातहे: तेज
रूपरूपवायुवायुहूं स्पर्शलीन सोसपर्श व्यो
मसब्दतमहि बिलातहे: इंद्रीदसरुमन
देवता बिलीनसत्वतीनगुनअहंमहतत्व
मिलिजातुहे: ममतत्वप्रकृतिप्रकृतिहूं पु
रुषलीनसुंदरपुरुषजाइब्रह्ममेसमातहे:
॥७॥आतमांअचलअखंडएकरसरहेसदा
देहबिवहारनिमेंदेहहीसोजानियें: जेसे
ससिमंमलअनेगनहिनेगहोइकलाआवे
जाइघटिबढि सोबघानियें: जैसेहुमसु
थिरनदीकेतटिदेखियतनदीकेप्रवाहमां
हिचलतोसोमांनियें: तसेआतमांअतीत
देहकोप्रकासिकहेसुंदरकहतयोबिचारि
मनमानियें: ॥१८॥आतमासरीरसोंऊ
एकमेकदेखियतजबलगअंतहकरनामे
अ

अज्ञान है: जैसे अंधियारी रैनि घर मैं अंधारौ
होइ अरु विन कौ तेज ज्यौं कौ त्यूं ही बिदिमान है
॥ जदि पि अंधेरे मो हिनै न कौन सूजै कछू तदि
पि अंधेरै सौं अलिपत बषान है: ॥ सुंदर कहत
तो लौ एक मेक जानत है जौ लौं नहि प्रगट प्रका
स ग्यांन भौन है: ॥१९॥ देह जरु देवल मैं आत
म चेतनि देव याही कौं समुझि करि मासौं मन
लाईये: देवल कौं बिन सत बार न ही लागै क
छू देव तौ सदा अभंग देवल मैं पाईये: देव की
सक्ति करि देवल की पूजा होइ भोजन बिबधि
भांति भोग कूल गाईये: देवल तैं न्यारौ देव
देवल मैं देषियत सुंदर बिराजमान और कहा
हां जाईये: ॥२०॥ प्रीत सौ न पाती कोऊ प्रेम
से न फूल और चित सौं न चंदन सनेह सौं न से
हरा: हिरदै सौं न आसन सहज सौं न संघा
सन भाव सौं न सैज और सुनि सौं न गेहरा:

सीलसौसनोननौहिध्यानसौनधूपऔरन्ता
नसौनदीपकअज्ञानतमकेहराः मनसीन
मालाकौकुसोहंसौनजापऔरआतमांसौ
देवनौहिदेहसौनदेहराः ॥२१॥ आपुकोर
नजनसुतौआपहीकरतुहैः स्वासोस्वास
रातिदिनसोहंसोहंहोइजापयाहीमाला
बारबारदिढकैधरतुहैः देहपरैइंद्रीपरै
अंतहकरणपरैएकहीअखंडजापताप
कौहरतुहैः कागकीरुद्राक्षकीसूतहू
कीमालाऔरइनकेफिरायेकौनकारज
सरतुहैः सुंदरकहततातैंआतमांचेतनि
रूपआपुकौनजनसुतौआपुहीकरतुहैः
॥२२॥ क्षीरनीरमिलिदोऊएकठैहोइरहे
नीरछाडिहंसजैसैंक्षीरकौंगहतुहैः कंच
नमैंऔरधातमिलिकरिबांनपरयोसुधिकरि
कंचनसुनारज्यूंलहतुहैः पावकहूंदारम

घित्तरहीसौंहोइरह्योमथिकरिकाढेताही
तारकौंदहतुहे: तैसैहीसुंदरमिल्योआतमा
अनातमांजुभिंनभिंनकरियेसुतौसांख्यक
हतुहे:॥२३॥अनमयकोसमुतौप्रंग
हैप्रगटयहप्रानमयकोंसपंचबायुह्रंब
षानिये:मनोमयकोसपंचकरमइंद्रियहै
प्रसिधिपंचज्ञानइंद्रिविज्ञानकोसजानिये:
॥जाग्रतस्वप्नबिषैकहिये चत्वारकोससुखु
पतिह्रंमोहिकोसअनमयमानिये:पंचर
कोसआतमाकोजीवनामकहियतुहैसुंदर
संकरमारव्यासाषियहआनिये:॥२४॥जा
ग्रतअवस्थाजैसेसदनमाहिबेठियततहो
कछूहोइताहिभलीभांतिदेखिये:सपन
अवस्थाज्यूंचौबारेमेंबेठेआयरहेरहे उहांकू
कौबसतकसबलेखिये:ब्योमअनसतघर
चौबारेमौंहरमोंहिसुंदरसाषीस्वरूपतुरिया

विसेषियेः सुषुप्ति मौंहरमैं बेगतैंनसूझि परैं
महाअंधघोरतहांकछूवयेषियेः ॥२५॥
जाग्रतकैविषैजीवनैनननमैंदेषियतविविधि
व्योहारसबइंद्रिनग्रहतुहेः स्वप्नैंहूमोहिपु
निवैसेहीव्योहारहोतनैंननितैंआइकरिकै
गमैरहतुहैः सुषुपति हृदेमैंविलीनहोइजा
तजबजाग्रतस्वपनकीतौसुधिनरहतुहैः
तीनहूंअवसथाकौसाक्षीजबजानैंआप
तुरियास्वरूपवहसुंदरकहतुहैः ॥२६॥
जाग्रतरूपलीयैंसबतत्वनिइंद्रियदुवारक
रैविवहारैः स्वपनसरीरमैंनवतत्वकौमा
नतहैसुषदुषआपारैः लीनसबैगुनहोतसु
षोपतिजानैनहीकछूघोरअंधारैः तीनौंकौ
साषिरहैतुरियातत्वसुंदरसोईसरूपहमारैः
॥२७॥ भूमितैंसुषिमआपकौजानहुआपु
तैंसूक्ष्मतेजकौअंगाः तेजतैंसूषिमवायुब
हैनितवायुतैंसूक्ष्मव्योमउतंगाः व्योमतैंस

षिमहै गुन तीनि तिन्हतें अहंमहतत्वप्रसंगा:
ताह्तें सूषिममूलप्रकृतिजुमूलतें सुंदर षुलन
अनंगा: ॥२८॥ ब्रह्म निरंतरव्यापक अगनि
अरूप अषिंन्नतहे सबमांही: ईश्वर पावक रा
सिप्रवेकजु सोग उपाधिलीयेंबरतांही: जीवअ
नेंतमुसाल चिराक सुदीप पतंगअनेंक दियांही:
सुंदर रंग उपाधिमिटै जइश्वर जीवजुएक छूनांही:
॥२९॥ ज्यूं नर पावक लोहतं तत पावक लोह
मिले सुदिषांही: चोट अनेंक परैघनकीसि
रि लोहबंधे कछू पावक नांही: पावक लीनं
नमयौ अपनैंघर सीतल लोह नयौतबतां
ही: त्यूं यह आतम देह निरंतर सुंदर भिन्नरहैमि
लिमांही: ३०॥ आतम चेतन सुधि निरंतर भि
न रहै कहुं लिपतन होई: जैज म चेतन अंतह
करनजु सुधअसुध लियें गुन दोई: देह अमु
धमलीन महाजम हालिनचालिसकेंपुनि वोई:

ईति
पा

सुंदर तीन बिभाग कीये बिन भूलि परे भ्रम
तैं सब कोई ॥३१॥ स या ६ ॥ ब्रह्म अरु
पत्र रूपी पावक ब्यापक जुगल नदी सतरंग
॥ देह सरावै प्रगट देखियत अंतःकरण अग्नि
द्वै अंग तेज प्रकास कल्पना तो लगि जो लें
गि रहै उपाधि प्रसंग जहां के तहां लीन पुनि हो
ई सुंदर दोऊ सदा अभंग ॥३२॥ देह सराव तेल
पुनि मारुत बाती अंतह करण बिचार प्रगट
जोति यह चेतन दीसै जातें भयो सकल उजया
र ब्यापक अग्नि मथन करि जो ये दीपक
बहुत भांति बिसतारि सुंदर अद्भुत रचना
तेरी तु ही एक अनेक प्रकार ॥३३॥ तिल मे
तेल दूध मै घृत है दार मांहि पावक पहचानि
पुहप मांहि ज्यूं प्रगट बास नाई ईक्षु मांहि रस
कहत बषानि पोसत मांहि अफीम निरंतर
बनसपती मैं सहत प्रवानि सुंदर भिन मिल्यो
५

पुनिदीसतदेहमोहियौंआत्मोंजानि: ॥३४॥
जागतस्वप्नसुषुपतितीनौंअंत:करणअव
स्थापावे: प्राणचलैजागतअरुस्वप्नसुषो
प्तिमैंपुनिअहनिसिधावे: प्राणगयितैंरहैनको
ऊसकलदेषतैंथारविलावे: सुंदरआत्मत
त्वनिरंतरसोतौंकतहूंजाइनआवे: ॥३५॥
पंडतत्वस्थूलकुंनमैंसूक्ष्मलयंगनसोज्यूंतोय:
उहाजीवउहांआभासीसैब्रह्मइहुप्रतिब्यंबे
दोइ: घरफूटेंजललगयौविलैह्वैअंतहकर
णकहैनहिकोइ: तबप्रतिब्यंबमिलैससि
ब्यंबहिसुंदरजीवब्रह्ममयहोइ: ॥३६॥

प्रथमश्रवण

करिचितएकाग्रधरिगुरसंतआगमकहैसु
उरधरिये: दुतियमननबारबारहीविचारि
दैयेजोईकछुसुनैताहियकेरिकैसंभारिये: त्रि
तियताहीप्रकारनिदध्यासनीकैकरैंनिहसं

स्या ॥१४॥ अथविचारकौअंग: सव

गबिचरतअपुनपौतारियै: साक्षातकार
याहीसाधनकरतहोइ सुंदरकहतहै तबुधि
कौनिवारियै: ॥१॥ देखैतौबिचारकरिसु
नेतौबिचारकरिबोलेतौबिचारकरिकरेतौ
बिचारहै: खाइतौबिचारकरि पीवैतौबिचा
रकरिसोवैतौबिचारकरि तौहीतौ ज्वारहै
बैठेतौबिचारकरिऊठेतौबिचारकरिचलै
तौबिचारकरिलेइतौ बिचारकरि सौईम
तसारहै: देइतौबिचारकरिलेइतौबिचार
करिसुंदरबिचारकरियाहीनिरधारहै: ॥२॥
॥एकहीबिचारकरिसुषदुषसमजानेंएक
हीबिचारकरिमलसबधोइहै: एकहीबि
चारसेसारसमुद्रतिरैएकहीबिचारकरिपा
रंगतहोइहै: एकहीबिचारकरिबुधिनोना
नावतजेएकहीबिचारकरिइसरोनकोइहै:
एकहीबिचारकरिसुंदरसंदेहमिटेएकहीबिचा

री करि एक ब्रह्म जो इहै: ॥३॥

रूप कौ नासी भयौ कछु दिषियै रूप तौ रू
पही मांहि समावै: रूप के मधि अरूप अनं
जित सौ तौ कछु कहुं जाइ न आवै: बीचि
अज्ञान भयौ नव तत्व कौ बेद पुरांन सबै कौ
ऊ गावै: सो ऊ बिचार करै जब सुंदर सो
धत ताहि कहूं नहिं पावै: ॥४॥ भूमि सु
तौ नहि गंध कौ धाम तनीर सु तौ रस तैं नहि
न्यारौ: तेज सु तौ मिलि रूप रह्यौ पुनि बायु
स्पर्श सदा सु पियारौ: व्योम रु सब्द सुं दे
नहि होत सु ऐसे हि अंतह करण बिचारौ:
॥ए नव तत्व मिलै इम तत्व निसुंदर भिन्न स
रूप हमारौ: ॥५॥ झीणं सपुष्ट सरीर कौं
धर मंजुसी तहूं जल जरा मृति गनै: भूय
र माग गुन प्रांन कौ ब्यापत सोक रु मोह उ
भै मन आनै: बुधि बिचार करै निस बास

रचितचितै सु अहं अनिमांनैं: सरबकौ।
प्रेरकसरबकौसाक्षीयसुंदरआपकौंन्या
रोहीजांनैं:॥६॥ एकहिकूपकेनीरतेंसी
चतइ सु अफीमहिअंबअनारा: होतउ
हैजलस्वादअनेकनिमिष्टकटूकमटाअ
रूषारा: त्यौंहीउपधिसंजोगतैंआतमदी
सतआहिमिल्योसौबिकारा: काढिली
यैंजुबिचारबिवेसतसुंदरसुधसरूपहमा
रा:॥७॥ रूपपराकौनजांनिपरेकछूऊ
गतहैजिहिमूलतैं बांनीं: नाभिबिषेमिलि
सप्तसुरनिपुरुषसंजोगपसंतीबषांनीं:॥
नादसंजोगहदैपुनिकंठजुमधिमांयाही
बिचारतैंजांनीं: अक्षरभेदलियेमुषद्वा
रसुबोलतसुंदरबेषरीबांनीं:॥८॥ ज्यूं
कौऊरोगभयोनरकैंघटबेदकहैयहबा

पुविकारा: कौऊकहै ग्रह ग्राइलगे स
व पुनि कीयें कछु होइ ग्वारा: कौऊ कहे
रहि चूक परी कछु देखन दै सकीयौ निर
धारा: तैसे हि सुंदर तंत्रनि के मत भिन्न
हि भिन्न कहैं जु बिचारा:॥१९॥ जो बिस
रैतिम पुरि रहे तिन कौं रजनीम हि बादर
छायौ: कौऊ मुमुक्षु कीयें गुरदेव तिन्हें
मयें जु ताजु सबद सुनायौ: बादल दूरि
नये रन के पुनि तारनि सौं रजनी प्रगटायौ
यौ: सुंदर सूरय कास तहां भ्रम दूरि भयौ
रजुको रजु पायौ:॥२०॥ करम सुभासु
न कीरजनी पुनि अर घत मौ म यौ अघ
जारी: मन कि सुतौ यह हैं अरलौ दय
अरु ति निसा दिन संधि बिचारी: ग्यान सु
भौन सदो दित बासर बेद पुरान कहे जु पु

कारी: सुंदरतानिपुनतावक्खानि नतयौंनि
तत्वेसमझे बिधिसारी: ॥१२॥
देह हीकौंआपुमांनि देह ईसौ होइरह्योजन्म
तात्रअज्ञानतमसोईजांनिये: इंद्रिनिके व्यापा
रनिअत्यंत निपुनितमोरजदत्तं कखिसिद्ध
प्रमानिये: अतह करन मांहि अहंकार बुधि
जाकैरजोगुणबरधमांनकत्रीपहिचांनियें: स
त्वगुणबुधिएक आतमांबिचारजाके सुंदरक
ह तवह ब्रह्मणबखानिये: ॥१२॥ आतमां
के बिषैदेहआइकरिनासहोइ आतमांअ
षंड सदाएक ईरहतुहै: जैसें द्रुमहंकै सापु
कंचुकीकौलीयैरहकौऊदिनजीरनउतारि
करिनूतनगहतुहै: जैसेद्रुमहूकैपत्रफूल
फलआइहोत तिनके गयेतेंद्रुमऔरऊल
हतुहै: जैसेव्योममांहिअभ्रहोइ कैबिला
इजात ऐसो सोबिचार कछूसुंदरकहतुहै:
॥१३॥ यरीकीमरीमोंअकलिखिकैबिचार
यत

सुंदरविलास

पुतलिषत लिषतत्वहक्तरीयसिजातहै : लेयोसमझ्योहैजबसमझिपरीहैतबजोई कछूसहीभयोसोईगहरातुहै : दारहीसोंद रमथिपावककप्रगटभयोतुहैदारजारिपुनि पावकसमातुहै : तैसेहिसुंदरबुधिब्रह्म कौबिचारकरिकरतकरतत्वहबुधिकूं बिलातुहै : ॥१४॥ आपुकौसमझिदेषि आपुहीसकलमांहिआपमैंसकलजग तदेषियतुहै : जैसेब्योमव्यापकअषंड परपुरनहैबादलअनेकनांनांरूपलेषि यतुहै : जैसेभूमिघटजलतरंगपावकदे पवायुमैंबघूरायोहीबिष्टरेषियतुहै : अै सेहीबिचारतबिचारकूंबिलीनहोइसुंद रहीसुंदररहतपेषियतुहै : ॥१५॥ देह कौसंजोगपांइजीवअैसौनामधस्योघर कौसंजोगघटाकासजूंकहायोहै : ईश्व

रसकलबिराटमैंबिराजमानमठकेसंजोग
मठकासनामपायोहै: महाकासमांहि
सबघटमठदेषियतबाहरभीतरएकग
गनसमसोहै: तैसेहिंसुंदरब्रह्मईश्वरअ
नेकजीवत्रिबिधिउमाधिभेदयेंथभिमैंगा
यो है: ॥११६॥

प्रश्न: देहडुषपावैकिधोइं
द्रिडुषपावैकिधौंप्रानडुषपावैजबलहैन
अहारकों: मनडुषपावैकिधौंबुधिडुष
पावैकिधौचितडुषपावैकिधौंडुषअहं
कारकों: गुणडुषपावैकिधौसुत्रडुषपा
वैकिधौप्रकृतिडुषपावैकिधौंपुरुषअधा
रकौं: सुंदरपुछतकछुजानिनपरततातैं
कौनडुषपावैगुरुकहोयाबिचारकौं: ११७

उत्तर ॥ देहकौतौडुषनांहिदेहपंचभूतनि
कीइंद्रीनिकौडुषनांहिडुषनांहिप्रानकौं:
मनहूकौडुषनांहिबुधिहूकौडुषनांहिचि

त

तहूंकोंदुषनोहिनोहिंअभिमानकोंःगु
णनिकोंदुषनोहिसुतहूंकोंदुषनोहिप्रकृ
तिहूंकोंदुषनोहिदुषनपुमानकोंःसुंदरबि
चारिअैसैसियसौंकहतगुरदुषएकदेषि
यतबीनकेअज्ञांनकोंः॥२८॥पृथ्वीमां
जनअंगकनककटकपुनिजलहूंतरंगदे
षदेषिकैबषानियेंःकारणकाजएतौ
प्रगटहीथूलरूपताहीतेंनजरमांहिदेषि
कहिआनियेंःपावकपवनव्योमएतौन
हीदेषियतदीपकबधूरअरुसूतरूपमां
नियेंःआतमांअरूपअतिसूक्ष्मतैसूक्षि
महेसुंदरकारणतातैदेहमेंनजांनियें॥४९॥
जैनमतवहैजिनिराजकौनमूलिजाइतांनत
पसीलसाचीमांवनातेंतिरियेःमनबचका
यसुधसबसौंदयालरहेदोषबुधिदूरिक
रिदयाउरधरियेंःजौधनांमतबजबमन

कौंनिरोधहोइबोधकौंबिचारिसोद्यात्मां
कौंकरिये : सुंदरकहतऐसैंजीवतहीमुक्ति
होइमुयेतैंमुक्तिकहेतिनकौंपरहरिये : ॥२०
॥देहज्ञोदेषियेतौदेहपंचभूतनिकीब्रह्मा
अरुकीटलगदेहईप्रधानहे : प्रानज्ञोरदे
षियेतौप्रानसबहीकौंएकक्षुधापुनित्रृषा
दोऊव्यापतसमानहे : मनज्ञोरदेषियेतौ
मनकौस्वभावएकसंकल्पबिकल्पकरि
सदाईअज्ञानहे : आतमांबिचारकीयेंआ
त्मांहीदीसैएकसुंदरकहतकोऊदूसरो
नआनहे : ॥२१॥

एककौंकहतागाइब्राह्मनकौदेतदांनएक
कौंऊदयाहीनमारतनिसंकहे : एककौंऊ
तपसीतपस्यामांहिसावधानएककौंऊ
कांमीक्रीडेकांमनीकैआकहे : एककौंऊ

रूपवंत अधिक बिराजमान एक कोऊ
कोठीको छवूलतकरैकहे ः आरसीमें
प्रतिबिंबसबहीकोदेषियतसुंदरकह
तऐसैब्रह्मनिःकलंकहे ॥१॥रबि
केप्रकासतेंप्रकासहोतनेत्रनिकौंसब
कौऊसुन्नासुनकरमकौंकरतुहे ः को
ऊजग्यदांनजपतपजमनेमव्रतकोऊ
इंद्रीवसिकरिध्यानकोधरतुहे ः कोऊ
पूतारापधनकौंतकतजाइकोऊहि
साकरिकरुद्रकौंमरतुहे ः सुंदरकहत
ब्रह्मसाक्षिरूपषकरसबाहीमैंनपजि
करिबाहीमैंमरतुहे ः ॥२॥ जैसैंजल
जंतुजलहीमेंउतपनिहोइजलहीमेंबि
चरतजलकेअधारहे ः जलहीमेंकीड
तबिबधिबिवहारहोतकामक्रोधलोभ
मोहजलमैंसंहारहे ः जलकौंनलगे

कछु जीवनके रागदोष उनहीं केऊ या

कर्म उनहीं के लार है: तैसै ही सुंदर य

ह ब्रह्म मैं जगत सब ब्रह्म कौं न लागे कछु

जगत बिकार है: ॥३॥ स्वेदज जरा

यज अंडज उद्भिज पुनि चारि योनि ति

नके चौरासी लक्ष जंत है: जलचर थल

चर व्योमचर भिन भिन देह पंचभूतनि

की उपजि खपंत है: सीत घाम पवन गग

न मैं चलत आइ गगन अलिपत जो मैं मै

घ हूं अनंत है: तैसे ही सुंदर यह सिद्धि ए

क ब्रह्म मोहि ब्रह्मनि: कलंक सदा जा न

त मरंत है: ॥४॥

हे दिल मैं दिलदा

र सही अंखियां उलटी करि ताहि चितइ

ये: आब मैं बाद मैं खाक मैं आतस जोनि

मैं

मैंसुंदरजानिजनईये: नूरमैंनूरहैतेन
मैंतेजहैजोतिमैंजोतिमिलेमिलिजईये:
क्याकहियेकहियेनबनैकछूजोक(
हियेकहतेंहीलजईये:॥१॥ जासौंक
हूंसबमैंवहएकतौसौकहैकैसोहैआं
खिनिदिखाईये: जोकहूंघूपनरेषदि
सैकछूतौसबजूगकैमांनैकहईये:
जोकहूंसुंदरनैननिमांफतौनैननहूंबैन
गयेपुनिहईये: क्याकहियेकहतेंनब
नैंकछूजोकहियेकहतेंहीलजईये:॥२॥
होतविनोदजुतौअभिअंतरसोसुषआ
पमैंआपहीपईये: बाहरकौउमग्यो(
पुनिआवतकेतेंसुंदरकेरिघईये:
स्वादनबेरनबेस्यौनजातमनोगुरगूंगे
हींज्यूंनितषईये: क्याकहियेकहतेंन

बनै कछू जो कहिये कहतें ही लजईये:

॥३॥ व्योमसो सो मिश्र अनंत अखंड जित

आदिन अंत सु मधिक होहे: कोपरि

मान करै परपुरन दैत अद्वैत कछू न ज

होहे: कारणकारज भेद नहीं कछू आ

पु में आपु ही आपु त होहे: सुंदर दीसत

सुंदर मोहि सु सुंदरता करि कोन ज होहे:

प्रश्नोत्तर: ॥४॥ एक कि दोइ न एक न दोइ

ग ही कि इ हीन उहीन इ हीहे: मूनि कि थू

लन मालख ही कि म हीन वहीन म हीहे:

सूनि न थूल ज ही कि त हीन जहीन त हीहे:

मूल की मालन मूल न मालख ही कि म ही

न वहीन म हीहे: जीव कि ब्रह्म न जीव न

ब्रह्म तो है कि नहीं कछू है न न हीहे: ॥५॥

एक कहूं तो अनेक सो दीसत एक अनेक

नही

नहीकछूअैसी: आदिकहूं ताहिअैतहूं
आवत आदिनअंतिनमधिसुं केसी:
गोपिकहूं तोअगोपिकहायहगोपिअ
गोपिनकू मौनबैसी: जोईकहूं सोईहै
नहिसुंदर हैतौसहीपरिजैसैंकौतैसी:
॥६॥ एककेकहैं जोकोऊ अने
कआभासैताहिजाकै एकहीप्रकासतहैदोइ
केकहैं कोऊ दूसरोऊ देषिये: अनेक कहै
जोकोऊ अनेकआभासैताहिजाकेजैसो भाव
ताकौ तसोहीवसषये: बचनबिलासकोऊ
कैसैंहीबषांनिकहोब्योममांहिचित्रकहूंके
सैंकरिलेषिये: अनमोकीयतैं एकदोइन
अनेककछूसुंदरकहतकछूहे तूंहीताहिपेषि
ये:॥७॥ बचनईवेदविधिवचनईसास्त्र
पुनिबचनईस्मृतिअरूबचनपुरानजू: ब
चनईऔरगंथबचनईव्याकरणैबचनईका
विछंदनाटिकबषानजू: बचनईसंसकृ

तवचनईपराकृतवचनईताषासबजग
तमैजानजूः बचनकैपरैसुबचनमैत्र्याईनां
हिसुंदरकहतवहूप्रनभेप्रमोनजूः॥९॥
इंद्रिनहिजांनिसकैअलपज्ञानइंद्रिनिकौ
प्रानहूनजोनसकैसुन्योसोबतइहैः चि
तअहंकारपुनियऊनहिजांनिसकैसबद
हूंनजानिसकैअनुमांनपाइहैः मनहूंन
जोनिसकैसकल्पबिकल्पकरैबुधिहून
जोनिसकैसुन्योसोबताइहैः सुंदरकहा
ताहिकोऊनहिजांनिसकैदीवाकरिदेषिये
सुक्रैसीनहीलाइहैः॥१८॥ श्रोत्रन
जोनतवहूनजोनतजोनतनोहिजुसूंघतघ्रा
नेः ताहिसपरसउचानसकैपुनिजोनत
नोहिनजीनबषानेः नोमनजानतबुधिनजा
नतचितअहंकहिकौपहचानेः सदहूं
सुंदरजांनिसकैनहिआत्मांआपुकौआपु
हीजानेः॥१९॥ सूरकेतेजतेंसूरजदीस

ताचंद

श्रोत्रमाविजाइहैः॥

रसनाहैः

तचंदकेतेज तैं चंद्र उजासैः तारे केतेजतै
तारेऊदीसत बिजुल तेजतैं बिजुवकासैः
दीपकेतेज तैंदीपक दीसत हीरेकेतेजतैं
हीरोईभासैः तैसेहि सुंदर आत्मजांनऊं
आपुकेतेजतैं आपुप्रकासैः ॥११॥ को
ऊकहै यह सहिंहि सुभावतैं कोऊ कहै यह
कर्मतैं सृष्टी॥ कोऊ कहै यह कालऊ पा
वतकोऊ कहै यह ईश्वर तिष्टी॥ कोऊ
कहै यह ऐसैंही होत है क्यूं करि मांनियें बा
तअनिष्टीः सुंदर एककीयें अनमो बि
नजांनिसकैनहि बाहिजदृष्टीः॥१२॥
कोऊ तो मोक्ष अकास बतावत कोऊ क
है मोक्ष पतालके मांहीः कोऊ तो मोक्ष
कहै पृथ्वीपरि कोऊ कहै कहूं और कहां
हींः कोऊ बतावत मोक्ष सिलापरि को
ऊ कहै मोक्ष मिटै परछांहीः सुंदर आत्म

केअनुमौबिनओरकऊंकोऊमोक्ष हि
नाही॥ ॥१३॥ मूयेतेमोक्ष कहेंसबपं
मितमूयेतैमोक्ष कहैपुनिजैनां॥ मूयेतेमो
क्ष कहैंरिखितापसमूयेतेमोक्षकहैंसिव
सेनां॥ मूयेतैमोक्षमलेछकहैतेऊ धोये
हिधोयेबषानतबेनां॥ सुदरआतमकौ
अनमौसोईजीवनमोक्षसदासुषचैनां॥
॥१४॥ जाग्रततोनहिमेरेबिषेकछुस्वप
नसुतोनहिमेरेबिषेहे॥ नाहिसुषोपति
मेरेबिषैपुनिबिस्वकऊतैजसप्रौनपयेहे॥
मेरेबिषैतुरियानहिदीसतयाहीतैमेरोस
रूपअषेहे॥ इरतेइरपरेतेपरेअतिसुं
दरकौऊनमोहिलषेहे॥ १५॥

कौऊतोकहतब्रह्म कहै ब्रह्म नाभिकेक
वलमधिकोऊतोकहतब्रह्मकोऊतो
कहतब्रह्म ईरमैप्रकासहे॥ कोऊतो
कहत

करतकंगनाझिकाकेअग्रनागकौक
तौकरतब्रह्मभृकुटीमैंबासहै: कौक
तौकहतब्रह्मदसये द्वारकेबीचकौक
तौकहतभौंरगुफामैंनिवासहै: प्रेम
तैब्रह्मंमतैनिरंतरबिराजैब्रह्मसुंदरस्वयं
मजैसैव्यापकप्रकासहै: ॥१६॥ क्रोध
रनिहाथीदियऊगरामचायौहै: पावनि
निगह्यौसुतौकहतहैक्रपसौंपुछजिनि
गहीतिनिलावसौसुनायौहै: मूंनिजि
निगहीतिनिदगलीकीबोहकल्यौदातिं
जिनिगह्यौतिनमूसरदिखायौहै: कान
जिनिगह्यौतिनिसूपसौबनाइकह्यौपी
ठिजिनिगहीतिनिबिटौरौबतायौहै: जै
सौहैसौतैसौताहिसुंदरसयांयौजानैआ
धरनिहाथीदखिऊगरामच्यायौहै: ॥१७॥
न्यायसास्त्रकहतहैप्रगटईश्वरबादि

मीमांसक सास्त्र महि कर्मबाद कह्यौ है:

बैसेषक सास्त्र मुनि कालबादी है प्रसि(

धि पातंजल सास्त्र महि योगबाद लह्यौ

है: सांषि सास्त्र महि मुनि प्रकृति पुरष

बाद बेदांत सास्त्र ति निब्रह्मबाद गह्यौ है:

॥सुंदरकहत षट सास्त्र महि न्यौ बाद जा

के अनुभवज्ञान मुतो बाद मैं न बह्यो है:॥

१८॥ प्रज्ञांन मांनंद ब्रह्म ऐसैकू ग्वेद क

हत अहं ब्रह्मास्मि इति जुजरवेद यौं क

हे: तत्वमसि इति स्याम बेद यौं बषानत

है अयमात्मा हि ब्रह्म बेद अथरबन लहै:

एकएक बचन मैं तीन पद है प्रसिधि तिन

कौ बिचार करि अरथ तत्वकौं गहै: चा(

रि बेद जिन जिन सबकौ सिधांत एक सुंदर

समझि करि चुप चाप ह्वै रहै: ॥१९॥

इंद्रि निकौ भोग जब चाहत बजाइ रहै ना

मवेत

सब्रततातैंतुछ्यानंदयोसुनायोसुनायोहैः
देवलोकइंद्रलोकबिधिलोकशिवलोक
वैकुंठकेसुखलौंगलितानंदगायोहैः अ
रूयैअखंडएकरसपरपूरनहैताहितेंपुर
नोनंदअनुभौतैंपायोहैः याहीकेअंतर
भूतआनंदजहांलौंऔरसुंदरसमुपमां
हिसबजिलआयोहैः॥२०॥ एकतोमा
साक्तिसजगतपुंचप्रहचारियोनिमे
दपाइचेतमासिरहोहैः दूसरौबिषैबि
लासइंद्रिनिकीबिषैपंचसहद्रूंसपरस
रूपरसगंधगस्योहैः तीजोबाबुकबिला
ससुतोसबबेदमांहिनरनिकेजहांलगव
चनतैंकस्योहैः चौथोब्रह्मकौबिलास
तिहंकोअमावजहांसुंदरकहतब्रह्मअनु
भवतैंलस्योहैः॥२१॥ जीवतहींदेवलो
कजीवतहींइंद्रलोकजीवतहींजनतप

सतिलोकआयोहै : जीवतहींबिधिलोक
जीवतहीशिवलोकजीवतबैकुंठलोकजी
अकुंठपायोहै : जीवतहींमोक्षसिलाजी
वतहीमिस्तिमांहिजीवतहीनिकटिपरम
पदपायोहै : आतमोकोअनुभवजिनकौं
जीवतभयौसुंदरकहतजिनिसंसयमि
टायोहै : ॥२॥ इंद्रहीनप्रकृतिनमहत
त्वअहंकारत्रिगुनगनव्योमआदिसबदादि
कोइहै : श्रवणादिबचनादिदेवतानमन
आदिसूक्ष्मनथूलपुनिएकहीनदोइहै :
स्वेदजनअंडजजरायजनउदभिजपसुहीन
पंछीहीपुरषहीनजोइहै : सुंदरकहतब
हजौंकोत्यौंहीदेखियतनकछ्रतनतौ
कछुभयौअबहैनकछुहोइहै : ॥२३॥
कृतिभ्रमजलभ्रमपावकपवनभ्रमव्योम
भ्रमतिनकोसरीरभ्रममानियै : इंद्रीदस

तेऊ

तेऊ भ्रमअंतहकारण भ्रम तिनहीकेदेख तासु
भ्रमतैंबयांनिये: सत्वरजतमभ्रमपुनिअहें(
कारभ्रममहतत्वप्रकृतिपुरषभ्रममांनिये:
जोईकछूकहियेसुंदरसकलभ्रमअनु(
भौकीयेतैंएकआत्मांहीजांनियें॥२४॥भू
मिऊंबिलीनहोइआपुऊंबिलीनहोइतेजऊं
बिलीनहोइअहंजोकहतुहे: महतत्वबि
लीनहोइप्रकृतिबिलीनहोइपुरषबिली(
नहोइदेहजोगहतुहे: व्योमऊंबिलीनहो
इइगुनबिलीनहोइसबदबिलीनहोइअ
हंजोकहतुहे: सुंदरकहतजोजोकहिये
सोलीनहोइआत्मांकैअनुभवैआत्मारह(
तुहे:॥२५॥ मायाकीअपेक्षाब्रह्मरात्री
कीअपेक्षादिनजमकीअपेक्षाकरिवे(
तनिबयांनिये:अज्ञांनकीअपेक्षाज्ञान(
बंधकीअपेक्षामोक्षद्वैतकीअपेक्षासु(

तौ अद्वैत प्रमांनि करि मांनियें ॥ दुष की अपे
क्षा सुष पाप की अपेक्षा पुनि क्रूर की अपेक्षा
ता हि सति करि मांनियें ॥ सुंदर सकल प्रह
ब-चन बिलास भ्रम ब-चन अब-चन रहित ८
सोई जांनियें ॥ ॥ २६ ॥ आत्मां कहत गुरु सु
धनि तिस सति करि मांनैं सु तौ सबद प्रमान है ॥
जैसें व्यौम व्यापक अप सम परिपुरन है व्योम
उपमां तैं उपमांन सो प्रमांन है ॥ जाकी सता
पाइ सब इंद्रीय चेतनि होइ याही अनुमांन
अनुमांन हू प्रमांन है ॥ अनुभव जांनें तब
सकल संदेह मिटैं सुंदर कहत यह प्रतक्ष
प्रमांन है ॥ ॥ २७ ॥ एक घर द्वेइ घर तीन घ
र चारि घर पंच घर त जे तब छ मे घर पाइ
है ॥ एक एक घर के अधार एक एक घर एक
घर निरधार आपु ही दिषाइ है ॥ सु तौ घर ८
सा की रूप घर घर मैं अनुप ताहि घर मधि

कौ क

कोऊक दिन रहत हे : ताकै परे साक्षी
न अ साक्षी न सुंदर कछु बचन अतीत क
हूं आइहै न जाइहै : ॥२८॥ एक तौ श्रवन
ज्ञांन पावक ज्यूं देषियत माया जल परस
त बेगि बुझि जात हे : एक है मनन ज्ञांन बिजु
ल ज्यौं घन मधि माया जल बरषत तामैं न
बुझात हे : एक निदिध्यास ज्ञांन बडवानल
सम प्रगट समुद्र मांहि माया जल षात हे :
आतम अनुभव ज्ञांन प्रलय अग्नि जैसे
सुंदर कहत द्वैत प्रपंच बिलात हे : ॥२९॥
चकमक गोके तें चमतकार होत कछु अ
सो है श्रवन ज्ञांन तबहीं लौं जानियें : क
फ मनन लागे जब प्रगट पावक ज्ञांन सिल
गत जाइ वहे मनन बषानियें : बढ़मो
न भयें का ग कर मैं निज रावत है वहै नि
दिध्यास ज्ञांन ग्रंथन मैं गानियें : सकल

प्रपंच यह जारिकैं समाइ जात सुंदर कहत
वह अनुभैं प्रमो निये : ॥२७॥ भोजनकी बा
त सुनि मन मैं मुदित होत मुष मैंन परै जौलौं
मेलिये न ग्रास है : सकल सामग्री आनि पा
क कौं करन लाग्यो मनन करत कब जीं
मह श्रास है : पाक जब भयौ तब भोजन
करन बैठै मुष मैं मेलत जाइ उ है निदिध्या
स है : भोजन पूरन करि तृपति भयौ है जब
सुंदर साछात कार अनभौ प्रकास है : ॥२८॥
श्रवन करत जब सो उदास होइ चित एका
ग्र आनि गुर मुष सुनिये : बैठिकै एकंत
गै रस्रं तह करन मो हि मनन्कर त फे रि
है जोंन गुनिये : ब्रह्मकौ परोक्ष जो निकह
त है अहं ब्रह्म सो हं सोहं होइस दा निदिध्या
स धनिये : इहै अनुभव यह है कहि ये ॥

ज्ञातकारसुंदरपाले तैं गलि मोनी होइ मुनियें॥
॥३२॥ जबहीं जिज्ञास होइ चित एक गेर आंनि
मृगज्यौं सुनत नाद श्रवन सो कहियें॥ जैसें
स्वाति बूंद हूं कौं चात्रक रटत पुनि औसें हीं म
नन करैं एक बूंद लहियें॥ जैसैं राहू हू ंचकी
र बेंदरमो कौ धरैं ध्यान औसें सो जो निनिदि
ध्यास दृढ करि गहियें॥ सुंदर सा ज्ञातकार
कीट जैसें होइ मृगगहै अनुभवै गहै स्वस्वरू
परहियें॥ ॥३३॥ काहू कौं पूछत रंक धन
कैसैं पाइयत कांन दै सुनत श्रवनन सो ई जो
नियें॥ उनकह्यौ हमधन देख्यौ है फुलांनी
गेर मनन करत मयौ कब घरि आनियें॥
फेरि निवकह्यौ धन गयौ तेरे घर मांहि यांद
मल ग्यो है तब निदिध्यास गनी है नियें॥
धन निकस्यो है जब दरिद्र गयो है तब सुंदर

साक्षात्कारनृपतिबखांनिये॥३४॥

प्रश्नोत्तर

देहयहकिनकौहैदेहपंचभूतनिकौपंचभूतकौनतैंहैं तामसाहंकारतें॥ अहंकारकौनतेहैंजासोमहतत्वकहेमहतत्वकौनतैंहैंप्रकृतिमंजारतें॥ प्रकृतिहूंकौनतेहैपुरुषहैजाकौनोमपुरुषसोकौनतेहैब्रह्मनिरधारतें॥ ब्रह्मअबजांन्योंहमजान्योहेतोनिश्चैकरिनिश्चैहमकीयौहैतौचुपमुषधारतें॥३५॥

जाकेहृदेमहिज्ञानप्रकासततोकोस्वभावरहैनहीछानो॥ नैनमैबैनमैंसैनमैंजानियेऊगतबेगतहैअलसानो॥ जूकछुमर्ह्नकीयेंउदगारतकेसैहूंरातिसकैनअघानों॥ सुंदरदासप्रसिधिदिषावततधानकौठेतपयारतेजानो॥१२॥

॥स्तां॥८प्लमछमपानोकीछ्वगा॥ इदबहरै

ग्यांन

ज्ञांनप्रकास भयो जिनकै उर खै घटकूं हूं छिपे
नरहै गः गोफलमांहि उरैन हीदीपक जदपिवै
मुखमौन गहै गः ज्यूं घनसार हि गोपि छिपा
वततौहूं सुगंध हितज्ञलहै गः सुंदर औरक
हाकौ ऊ जानत वागै की बात वराऊ कहै गः
॥२॥ बोलत चालत बैगत ऊगत पीवत या
तहूं सूंघत स्वासै: ऊपर तै व्यवहार करै सब
भीतर स्वप्न समान सौ भासै: लै करि तीर प
तालकौं साधत मारत है पुनि फेरि अकासै:
सुंदर देह ऊ यास बदेषत कौ कन पावत ज्ञां
नीकौ आसै:॥३॥ बैठै तौ बैठै चलै तौ चलै
पुनि पीछे तौ पीछेहीं आगै तौ आगै: बोलै तौ
बोलै न बोलै तौ मौन हि सोवै तौ सोवै तौ
जागै तौ जागै: खाइ तौ खाइ नहीं तौ नहीं जु
ग्रहै तौ ग्रहै अरु त्यागै तौ त्यागै: सुंदर

ज्ञानीकीऐसीदसायहजोनैनहीकछूराग

बिरागे:॥४॥ देषतहैपेकछूनहिदेषत

बोलतहैनहिबोलबषानैः सूघतहैनहिसू

घतघ्राणसुनैसबहैनसुनैयहमानैः नकू

करैअरुनोहिनषेकछूमेरतहैनहिमेरत

प्रानैः लेतहैदेतहैदेतनलेतहैसुंदरज्ञानी

कीज्ञानीहीजानैः॥५॥ काजअकाजभलो

बुरौकछूउत्तमम्धिमदृष्टिनआवैः काय

कवाचकमानसकरमसुआयुबिषैनति

कैंगहरावैः हौंकरिहौंनकियोनकरौंअ

बयौंमनइंद्रिनिकौबरतावैः दीसतहैबि

वहारविषैनितसुंदरज्ञानीकीकौंऊनपा

वैः॥६॥ देषतब्रह्मसुनैपुनिब्रह्महिबोल

तहैसोऊब्रह्महिबानीः भूमिऊंनीरऊं

तेज

तेजकूं बायुकूं ब्योमकूं बलजहीलगप्रानी:
आदिकू अंतिकूं मधिकूं ब्रह्महिहै सबब्र
ह्मइहै मनिगानी: सुंदर ज्ञेअरू ज्ञानकु ब्रह्म
सु आपुकूं ब्रह्महि जानत ज्ञानी: ॥७॥ कु
गतकेवलब्रैगतकेवल बोलतकेवलबा
तकहीहै: जागतकेवलसोवतकेवलजो
वतकेवलद्रष्टिलहीहै: भूतकूं केवलभव
षिकूं केवलबरततकेवलब्रह्मसहीहै: सब
हीहै अधऊरधकेवलसुंदरकेवलज्ञानगही
है: ॥८॥ केवलज्ञानभयोजिनकै गरतेअध
ऊरधलोकनजाहीं: व्यापकब्रह्मअखंड निरं
तरवाबिनऔरकहूं कछुनाहीं: ज्यूं घटना
सभयोघटव्योमसुलीनभयोपुनिहैनभमां
हीं: त्यूं मुनिमुक्ति जहांबपुछाडत सुंदरमोक्ष
सिलाकहूंकाहीं: ॥९॥ आदिकु तीन हिअ

तरहै न हि मधि सरीर नयो भ्रम रूपा: जास
तहै कछु और कौ और इ जूं रज मैं अहि सी मस्व
रूपं: देषि मरीचि जौ नि चि बि भ्रम जांनत
नांहि गहैर बिधूपं: सुंदर ग्यांन प्रकास भयो
जब एक अषंडित ब्रह्म अनूपं: ॥२०॥
जाही के बिबेक ग्यांन ताही के कुसल भई जा
ही ओर जाइ वाकौं ताही ओर सुष है: जैसे को
ऊ पाइ न पैंजार कौं चषाइ लेत ताकौ तौ न को
ऊ कांटे षेरे कौ दुष है: भावै कोऊ निंदा करौ
भावै तौ प्रसंसा करौ वाकौं तौ दृषै आरसी मैं आपु
नौ ई मुष है: देह बिवहार सब मिथ्या करि
जांनत है सुंदर कहत एक आतमां कौ रूप
है: ॥२१॥ अंतह करण जाकै तमगुन छा
इ रह्यौ जम ता अग्यांन वाकै आलस मैं त्रास
है: रजगुण कौ प्रभाव अंतह करण जाकै
बिबधि करम वाकै कोमनो कौ बास है: स

त्वगुण

त्रगुणतें अतीत करणा जाके वैराग्य तद्रूपा करि सुध ताके भगति को निवास है : त्रगुण अतीत मानी त्रियास्वरूप जो निसुंदर कहत ताके ज्ञान को प्रकास है : ॥१२॥ तमोगुणी बुधि सुतौ तत्ताके समान जैसें ताके मधि सूरजकी स्वछ न जोति है : रजोगुणी बुधि जैसें आरसी कौं ओघौं तौर ताके मधि सूरजकौ कछूक उदोत है : सतोगुणी बुधि जैसें आरसी की सूधी त्रौर ताके मधि प्रतिव्यंब सूरज कौ पोत है : त्रिगुण अतीत जैसें प्रतिव्यंब मिरजात सुंदर कहत एक सूरज ई होत है : ॥१३॥ सब सौं उदास होइ काढि मन ताहि निकरे ताकौ नाम कहियत परम वैराग है : अंतहकरण हूं की वासना निरवरत होइ ताकौ मुनि कहत है उहै वमी त्याग है : चित एक ईश्वर सौं नेकहू न न्यारौ होइ उहै भक्तिक

हियतनुहै प्रेममागहे : आयुबलजगतकै

एककरिजोनैजबसुंदरकहतनुहै जोनप्रेम

मागहे : ॥१४॥ कौकनृपफलनकीमेज

परिसूतीआइजबलगजाग्योतोलौअतिसु

षमान्योहे : नींदजबआईतबवाहीकोस्वप्न

नयौजाइपर्यौनरककेकुंभमेयोंजान्योहे

: अतिदुषपरिनिकस्योनकहूहीजाइजागि

जबपर्यौतबस्वप्नबषान्योहे : इहकूगै

वहकूगजागतसप्नतोकुसुंदरकहतसंसा

नौसबभ्रमजान्योहे : ॥१५॥ स्वपनमेराजा

होइस्वप्नमेरंकहोइस्वप्नमेसुषदुषसति

करिजान्योहे : स्वप्नमेबुधिहीनमूढसमके

नकछुस्वप्नमेपंडितबहुग्रंथनिबषान्योहे :

स्वप्नमेकामीहोइइंद्रिनिकेबसिपर्यौस्वप्नमे

जतीलोइअहंकारआन्योहे : स्वप्नमेजाग्योज

बसमझिपरीहेतबसुंदरकहतसबमिथ्याकरिमा

न्योहे :

न्योहै ॥१६॥ बिधिन निषेधकछूभेदनअ
भेदपुनिक्रियासोकरतदीसैयोंहीनितप्रति
है काहूकोंनिकरतकाहूकौंनांइरिभाष
है काहूसौनीरैनइस्थिसीजाकीमतिहै
रागहीनदोषकोऊसोकननछाहदोऊआसी
विधिरहैकहूंरतनविरतहै बाहरिब्योहार
ठनैंमनमैंस्वप्नजानैंसुदरज्ञानीकीकछूअ
द्भुतिगतिहै ॥१७॥ कोमीहैनजतीहैनसूम
हैनसमीहैनराजाहैनरंकहैनतनहैनमनहै
सोवैहैनजागैहैनपीछेहैनआगेहैनग्रहैहैन
त्यागैहैनघरहैनबनहै थिरहैनडोलैहैन
मौनहैनबोलैहैनबंधहैनखोलहैनस्वामीहै
नजनहै ऐसोकोऊहोइजबवाकीमतिजा
नैंतबसुदरकहतज्ञानीसुधज्ञानघनहै ॥१८॥
सुनतश्रवनमुखबोलतबचनघ्राणसूंघत

न

लनसरूपदेयतत्तगनहै:त्वकुसपरसनर
सनोंग्रसनकरग्रहतग्रसनग्ररूचलतप
गनहै:करतगबनपुनिबेगतभवनसिम
सोवतरखनतनत्रोठतनगगनहै:जोजोक
छूविताहारजानतसकलधमसुंदरकहत
ज्ञांनीगगनमगनहै:॥१९॥करमबनबि
कर्मकिरेमावनग्रमावधरेसुनकुग्रसुनपरै
यातैनिधरकहै:बस्तीनसूनिजाकेपापही
नपुनिताकेग्रधिकनन्यूंनवाकेस्वरगनरे
कहै:सुषदुषसमदोऊनीचहीनऊंचको
ऊग्रैसाबिधिरहेसोऊमिल्योनयरकहै:
एकहीनवोइजांनैबंधमोक्षभ्रमजांनैसुंद
रकहतज्ञांनीज्ञांनमैंगरकहै:॥२०॥
ग्रज्ञांनीकोदुषकौसमूहजगजोनियत
ज्ञांनीकौजगतसबग्रानंदसरूपहै:

नैनहीनकौंतौघरत्याहरिनसूझैकछूजहांजहां
जाइतहांतहांअंधकूपहै:जाकैचक्षुहैप्रका
सअंधकारनयौंनासवाकौंजहांरहैतहांसूर
जकीधूपहै:सुंदरअज्ञानीज्ञानीअंतरबहुत
आहिवाकैसदारातिवाकैदिवसअनूपहै:
२१॥ज्ञांनीअरुअज्ञांनीकीक्रियासबएकसीही
अज्ञआसाऔरज्ञांनीआसननिरासहै:अज्ञसो
ईसोईकरैअहंकारबुधिधरैज्ञांनीअहंकारबिन
करतउदासहै:अज्ञसुखदुखदोऊआपुबिषैमां
निलेतज्ञांनीसुखदुखकौंनजांनैमेरैपासहै:आ
नकौंजगतयहसकलसंतापकरैसुंदरज्ञांनीकौं
सबब्रह्मकोबिलासहै:॥२२॥ज्ञांनीलोकसं
ग्रहकौंकरतब्योहारबिधिअंतहकरणमैंस्वप्न
कीसीदौरहै:देतउपदेसनांनांभांतिकेबचन
कहिसबकोऊजांनतसकलसिरमोरहै:हल
नचलनपुनिदेहसौंकरावतहैज्ञांनमैंगरक

नितिलीयेंनिजगौरहैं : सुंदरकहतजैसेंदंतग(
जराजमुषिषाइवेकेंऔरइदिषाइवेकेंऔर
इदिषाइवेकेऔरहैं : ॥२३॥इंद्रिनिकोंज्ञान(
जाकैसुतौपसुकैसमांनदेहअभिमांनषान(
पांनहीसौंलीनहैं : अंतहकरणज्ञांनकछूक
बिचारजाकेमनुषब्योहारसुभकरमनिआधी
नहैं : आतमांबिचारज्ञांनजाकेनिसबासरहै(
सोईसकलहीबातमैंप्रवीनहैं : एकप्रतमांको
ज्ञांनअनुभवजाकेसुंदरकहतवहज्ञांनउत्तमछी
नहै॥२४॥धोषौनरहतकोऊज्ञांनकेप्रकासतैं
॥जाहीगेररबिकोउदोतभयौताहीगेरअंधका
रभागिगयोगृहबनबासतैं : नतौकछूबनतेंउ
लटिआवैघरमांहिनतौबनचलिजाइकनकआ
ग्रासतैं॥जैसैंपंषीपांषद्वूटिजाहीगेरपलौआ
इताहीगेरगिररह्योउभिबेकीआसतें : सुंदर
कहतमिटिजाइसबदौरधूपधोषोनरहतकोऊ
ज्ञांन

ज्ञानकेप्रकासतैं ॥२५॥ जैसैंकाहूदेसजाईं
न्याथाकहैंग्रौरसोंहीसमझैनकौऊवासोंक
हैंकाकहतुहे : कौऊदिनरहिकरिबोलीसी
खैउनहींकोफेरिसमझावैंतबसबकोलह
तुहे : तैसैंज्ञानकहेतैंसुनतबिपरीतिलगै
ग्रापग्रापनोईंमतसबकोगहतुहे : उनहींकों
मतकरिसुंदरकहतज्ञानतबहीतोज्ञानवूर
गहराइकैंरहतुहे : ॥२६॥ ज्ञानीकर्मनिमैंत
तपरदेखियतभगतिकोप्रनावनोहिज्ञान
मैंगरकहे : एकज्ञानीभगतिकौग्रतांतप्रना
वलीयैंज्ञानमोहिनिश्चैकरिकरमसौंतस्कै
हे : एकज्ञानीज्ञानहीमैंज्ञानकौंउचारकैं
भगतिग्ररुकरमइनिदहूंतैंपरकहे : क
रमभक्तिज्ञानतीनोंबेदमैंबषानिकहेसुंद
रवतायोमग ताहीमैंलरकहे ॥२७॥

जैसैंपछीपगनिसौंचलतअरुनिआइतैसैंज्ञा
नीदिहकरिकर्मनिकरतुहे: जैसैंपछीखूंव
करिचुगतअहारपुनितैसैंज्ञानीउरमैंउपा
सनाधरतुहे: जैसैंपछीपंखनिसौंउमतगगन
मांहितसैंज्ञानीज्ञानकरिब्रह्ममेंचरतुहे:
सुंदरकहतज्ञानीतीन्ंमांतिदेखियतअैसी
विधिजांनेंसबसंसयहरतुहे: ॥२६॥

एकक्रियाकरिकिरषिनिपावतअदिरु
ग्रंतिममतबंध्योहे: एकक्रियाकरिपाकक
रेकछुभोजनलौंकछूअन्यंरध्योहे: एकक्रया
मलत्यागतहैलघुनीतिकरैकछुनांहिफंध्योहे:
त्यूंयहजांनिक्रयाअरुसंग्रहसुंदरतीनिप्रका
रसध्योहे: ॥२८॥ तोइजननेमिलिन्वोपरिषेल
तसातिधरैपुनिछारतपासा: जीततहैसुखुसी
मनमैंअतिहारतहैसुमरैजुउसासा: एक
जनो

सुंदरदास

जनोंदकुवोरहिघेलतहांनिजनीतिकरैजुतमा
सा:तेयेंअज्ञांनीकेचेतमयोभ्रमसुंदरज्ञां
नीकेंएकप्रकासा:॥३०॥

जीवनरेसअविद्यानिंद्रासुखसज्यासोयौ
करिहेत॥करमगरासपुटपरीलाईतातें
बहुविधिमयोअचेत॥जगतिप्रधांनजगा
योकारनहिआलसमयोजेमाईलेत:॥स्
देरअविनिंद्रावसिनोहींज्ञांनजागरनसदा
सुचेत:॥३१॥ज्ञांनीकरमकरैनांनांविधि
अहंकारयातनकोषोवे:करमनिकोफ
लकछूवनबंछेअतलकरणवासनोधार
वे:जगकोकुचेतीकोलेजोततलेकरिबी
जभूनिकरिबोवे:सुंदरकहैसुनकुदृष्टां
तहिनागोन्हाइसुकहानिचोवे:॥३२॥

नावेदेहछूटिजाकुकासीमांहिंगमातटमा

वैदेह छूटि जाकु षेत्र मगहर मैं : भावैं देह छूटि जा कु बिप्र के सदन मधि भावैं देह छूटि जाकु बन मैं नगर मैं : सुंदर ज्ञांनी के कछु संसै नहि रह्यौ (कोई स्वरग नरक सब भाजि गयो भ्रमैं : ॥१॥

भावैं देह छूटि जाकु आज ही पलक मांहि भा वैं देह रहौ चिरकाल जुग अंतजू : भावैं देह छू टि जाकु आज ही पलक मांहि ग्रीषम पावस रि तु सरद सिसर सीत छूटत बसंतजू : भावैं दक्षना यन कूं भावैं उतरायन कूं भावैं देह सरप सौं घबि जुली हनंतजू : सुंदर कहत एक आतमां अषं म जांनियाही भांति निरसंसै भये सब संतजू : ॥२॥

कै यह देह धरौ बन परबत कै यह देह नदी मैं बहौ जू : कै यह देह धरौ धर तीमहि कै यह देह कृसांन दहौ जू : कै यह देह निरादर निंदकु कै यह देह सराह करौ जू :

सुंदर

सुंदरसंसयइ हरिनयौसबकै यह देह चलौ किरहौजूः ॥३॥ कैयह देह सदा सुखसंपति कैयह देह विपतिपरौजूः कैयह निरोगर हौनितकैयह देह हिरोगचरौजूः कैयह देह कुतासनपै गहुकैयह देह हिंवारेगरौजूः सुंदरसंसयइ हरिनयौसबकैयह देह जीवौ किमरौजूः ॥४॥३०॥५०१॥

प्रीतिकीरीतिन हींकछुरासतजांतिनपातिन हींकुलगारौः परमकेनेमक छूनहींदासतलाजनकांनिल जौसबसारौः लीननयौहरिसौंअमिअंतरि आगकुं जोमरहेमतिवारौः सुंदरसंसय इरिनयौसबकै यह देह जीवौ किमरौजूः सुंदरकौकुनजानिसकैयह गोकलगांवर कौपैंमौहिन्यारौः॥१॥ जोनरयौगुरदे

अथ प्रेम पतिव्रता कौ अंग ॥ १४ ॥

त्रदयाकरिहरिकोये भ्रमयोलिकियारोः
औरकुयाकहिकोनकरैभ्रनचितलमोप
रब्रह्मपियारोः पावबिनाचलिकेतिहिग
हरंपगुनयेमनमितहमारोः सुंदरकोऊ
नजोनिसैयहगोकलगावकोपैमोहीन्यारो
॥२॥ एकअखिंमतजूंनमिव्यापकबाहरिमी
तरिहैइकसारोः दृष्टिनमुष्टनरूपनरेयनसे
तनपीतनरक्तनकारोः चकुतहोइरसो
अनुभौबिनजोलशीनांहिनज्ञानउजारोः सुं
रकोऊनजांनिसकैयहगोकलगावकोपै
मोहीन्यारोः ॥३॥ द्वंदबिनाबिचरैबसु
धापरिजाघटआतमज्ञानअपारोः कांम
नक्रोधनलोभनमोहनरागनदोषनम्हारो
नयारोः जोगनभोगनत्यागनसंग्रहदेह
दसानटकोनउघारोः सुंदरकोऊनजा

नि

निसकैयुह गोकुलगोवकोपेमोहीन्यारो: ॥४॥ लकुअलकुअरकुनदकुनपकुअप कुननुलनमारो: कुगनसाचनवाचनवा-चनकेचनकाचनदानउद्दारो: जानअजो ननमानअमाननजीतननहारो: सुंदरको कुनजांनिसकैयुहगोकुलगोवकोपेमोही न्यारो: ॥५॥३१॥५०६॥

हो तुम कौन हौ ब्रह्म अयंमित देहमैं कौन हौ देहके नेरें: बोलतके सेहौन हि बोलत जांनिये कै मै अज्ञान है तेरें: हरि करो तुम निश्चै धारि कहो गुरदेव कहो निं(तेरे: हो तुमत्र्यैसै ई त्रुं पुनि त्र्यो सोई दोइ भये नहि वतहे मेरें: ॥२॥ हौं कछू और कि तुं कछू और कि है कछू और कि सो कछू औरें: हौ असकेयुह है कछू सोपु नि बुधि बिलास मयौ

अथ स्वतजगांनकोअंग उदाह्व:

ऊकझोरै: हौंनहितुनहिहैकछूसोनहिबु
झिबिनांजितहांतितदौरैः हौंपुनितुपुनिहै
कछूसोपुनिसुंदरव्यापिरह्योसबमोरै:॥२॥
उतममधिमऔरसुनाहुमभेदअभेदजहां
लगजोहै: दीसतभिन्नतवोअरुदर्पन
बस्तुबिचारतएकहीसोहै: जोपुनियेअरु
दृष्टिपरैपुनितावीनऔरकहौंअबकोहैः सुं
दरसुंदरव्यापिरह्योसबसुंदरहौंमैसुंदरसो
है:॥३॥ज्यूंबनएकअनेकनयेद्रुमनोम
अनंतनिजातिहूंन्यारी:बापीतराकरूकूप
नदीसबहैजलएकहिसुदेखोनिहारी: पाव
कएकप्रकासबहैबिधिदीपचिराकमसा
लहुबारी:सुंदरब्रह्मबिलासअखंडितभे
दितभेदकीबुधिसुटारी:॥४॥ =एकसरी
रमैंअंगभयेबहुएकधरापरिधामअनेको

एकसिलामहिकोरिकीयेसबचित्रबनाइधरेतिकेकोः

एकसमुदरतरंगअनेकनिकेसैकेकोजि १००
ये मीनबिबेका: द्वैतकहूनहिदिपियेसु
दरब्रह्मअथंफितएककोएको:॥५॥ज्यु
मृतकायटनीरतरंगहितेजमसालुकयिजु
वकृता: बायुबघूरनिगोगिपरीबकुबादल
ब्योमसुब्योमनिमृता: बृक्षसुबीजहैबीजसु
बृक्षहैपूतसबापहैबापसपूता:बस्तुबिचा
रतएकहीसुदरतानैंसबोनेंदेषियेमृता:
॥६॥ भूमिक्षुचेतनिआपुक्षुचेतनब्योमक्षु
चेतनिहैजुप्रवंमा:बायुक्षुचेतनिब्योमक्षु
चेतनिसबदक्षुचेतनिपामब्रह्ममा:हेम
नचेतनिबुधिक्षुचेतनिचित्तरक्षुचेतनि
आहिजुमंमा: जोकछूनामधरेसोईचेतनि
चेतनिसुंदरब्रह्मअथंमा:॥७॥एकअपंफि
तब्रह्मबिराजतनामजुहोकरिबिस्वकहावे:

॥श्रीरामजी

एकहीगुणपुरानबखांनतएकहीदरसनव
सिष्टिसुनावे: एकईश्वरगुनगथवसौंक
हिकरूपाकरिकेसमुझावे: सुंदरवे
तकछमतिजोनकुंएकईब्यापकबेदबता
वे: ॥१८॥ शिष्यपूछे
गुरसेंगुरकहेपूछिशिष्यमेरेएकसंसय
हैकौनपूछैअबहीः तुम्हकस्योएकब्रह्म
अबकूंमैकहूंएकएकतोअनेकताकांय
हतोतुमसबहीः भ्रमयहकौनकोहेभ्र
महीकोभ्रमभयोभ्रमहीकोभ्रमकैसेतुन
जानैंकबहीः केसेंकरिजानोप्रभुगुरक
हैनिश्चेधरिनिश्चेहमधार्योअबएकब्रह्म
तबहीः ॥१९॥ अबहैगेरकोगेरदूसरोनकोऊ
औरवस्तुकौबिचारकायेंवस्तुपहचांनियें:
पंचतत्वतीनगुणबिस्तेरेबिबधभांतिनो

मरूपजहांलगें मिथ्या मायामांनिये ॥९॥
सेवनां गमआदि दै कै बैकुंठ गोलोक पुनिबव
नविलाससब भेद भ्रम मांनिये : नतौकौ(
कुंठर ज्यौन सुरज्यौ कहौ सु कौंन सुंदर सकल
यह कुवाबाई जांनिये : ॥१०॥ प्रथमहींदेह
मैतैं बाहरि कौं बौंकि पसौ इंद्रियब्यापार सुष(
सतिकरिजान्यौहै : कौंनकुं संजोगपाइ सद्गुरु
सौ भेट भई उन उपदेस दै कैं भीतर कौं आन्यौहै :
भीतर कै आवतहीं बुधि कौ प्रकास भयौ है कौंन(
देह कौंन जगत किन मांन्यौ है : सुंदर बिचार
तयौं उपज्यौ अद्वैतग्यान आपु कौं अखंडब्रह्म
एकप्रह्चानि लि : न्यौ है : ॥११॥
सकल संसार बिसतारकरि वर नियौ स्वरगपा
ताल मृतिपुरि भ्रमर ह्यौ है : एकतें भिन्न भिन्न
नजाई ये सोल गे फेरि करि एक को एक ही ग

सतगुरु

ज्ञौहै : यहनहियहनहियहनहियहनहि रहे
अवसेषयोबेदयोंकह्यौहै : सुंदरसहीसो
बिचारिकैअपनपोअपुकोंआपुहीलयौ
है : ॥१२॥ एकदुंदोइदुंतीनदुंचारिदुंपंच
दुंतत्ततैजगतकीयौ : नामरूपक्लेकुत
बिधिबिसतयोंब्रह्मबिनोंऔरकोंऊनोहि
बीयौ : रावरंकनृदानिदुंहीनतदुंदोइकरि
मिलितैंदीयौलीयौ : सकलयहसिष्टि
ब्रह्ममांहिउपजैषपैकहतसुंदरबमोबिपु
लहीयौ : ॥१३॥ तोहीमैंजग
तयहदुंहीहेजगतमांहितोमैंअरुजगतमैं
भिनताकहांरही : ज्यूंमिहींतिमांजनअनेक
भांतिनामरूपभाजनबिचारिदेषेंएकहेएक
हेमही : जलतैंतरंगमईफेनबुदबुदाअने
कसोऊतोबिचारिंवहएकजलहेसही :
हपुर

सवसर्वा

महापुरुषजेतेहैंसबकौंसिधांतएकसुंदर
बलिविदब्रह्मअंतबेदहैकहीः॥१७॥जेसैंई
षुरसकीमिगईमोतिमोतिभईयैकरिकरि
गारेंईषुरसहिलहैनुहैःजेसैंघृततथीजकैंम
रौसोबेधिजातकेरिपुनिपघरेतैंवहघृतई
रहतुहैःजेसैंपानीजमिकैपषानहूसौं
यूतसोपषानधेरिकरिपानीह्वैबहतुहै
तैसैंहिसुंदरयहजगतहैब्रह्ममय महेपु
गतमयबेदयोंकहतुहैः॥१७॥ नाभे॥
कौरितामैंपूतरीबनाइराषेनमेहैपरिवि
षियेतोवहैएकतारहैःबेदयकौंक
मनिकाकमतहींकेमावेः॥१९॥नूमि
तहीं हूतैसेहींसैं हूतैसेहींतैसेहींपो
तैव्योमहूतेसैंहीआहिआर्यमितितैसैं

तैसेहिसुंदरयहजगतसोब्रह्ममयब्रह्मसो
जगतमययाहीनिरधारहै ॥१६॥ जैसेए
कलोकहकेहथ्यारनोनो विधिकीहेआदि
अंतिमधिएककंचनईजो नियेः लोह
ईपुवानियेः जैसेएककंचनकेभूषनअनेक
रेआदिअंतिमधिएककंचनइजो नियेः जे
कमैनकेसवारेनरहाथीहयआदिअंति
मैनईबयानियेः तैसैहिसुंदरयहज
क्रमों
तमयब्रह्मसोजगतमयनिश्चेकरि
लहीयो
॥ ब्रह्ममैजगतयहअैसीबि
तयहहहींहैजग
बधिदषियतफलरीमही
निनताकहरह
लमकुलीचेमैंअनेकनाना
नोतिनोमरूपम
रतरूनरीन्चीरमेः जे
हैमहीः जलतैतर
टपरदेषि तजैसीबि
कसोकतौबिचारो
यहएकजलहैहाथ
महापुरु

मनहरछंद

परदेखियतजैसीनिधिदेखियतसीत
ासरीरमैं॥१८॥ब्रह्मअरुमायाजैसैं
सिवअरुसक्तिपुनिपुरषप्रकृतिदोककहि
केसुनायेहैं:पतिअरुपतनीईस्वरअरु
ईस्वरीकुनारायणलक्ष्मीमैंद्वैबचनकर
येहैं:जैसेंकोकुअरधनांटेस्वररूपधर
एकवीजतैंदोइदालिनामपायेहैं:तैसैं
सुदरवस्तुज्योहैत्यूंहीएकरसउभयरूप
रहोइआपुहीदिखायेहैं॥१९॥ [illegible] मैंहैपु
ब्रह्मनिरीहनिरामयनिरगु [illegible] नआवै॥
औरनभासै:ब्रह्मअबिनचेत्तमैहैपरवि
हरितीतविश्वप्रकासै:सबदथकोक
जनेतागमब्रह्महिसाहिनावै॥१९॥नूनिद
औरव [illegible] अप्पुहूंतेसेहीत [illegible] हूंतेसेहीतेसेहीपी
माए
व्योमहूंतेसेंहीआहिअग्निहूंतेसें

।धेकहीक सूक्ष्मो रकहावे : कारणकारजनी मध
रैजुग कारजकारणमाहिसमावे : कारजदेषिन
योबिचिविभ्रमकारणदेषिविभ्रमबिलावे :
सुद्रयानिहचेअनिश्रतरिवैतगर्यौकिरधैतन
आवे : ॥२२॥ ब्रह्मअरुमायाकैतो
..धेनहिसंगहै : द्वैतकरिदेषैजबद्वैतहींदि
..ईद्वैतएककरिदेष्यैतबनरहैएकअंगहै : सूर
मि... वेजबसूरिजप्रकासरह्योकिरणिको
रूमा... रणनोनारगहै : भ्रमजबभयौतब
लहीयो ... सोभ्रमकेगयेतैंएकब्रह्म
तयहब्रह्महीहेजग... कहतयाकोद्वैषिहीकोफेरि
भिनताकहाँरह... कैतोमाधेनहिसंगहै :
नौतिनोमरूपमो... माहिबिराजतब्रह्महिव
हैमहीः जलतैतर... ...जरकी
कसोकतोबिचारिवहएकजलहैकाल

सुन्दरविलास

...हापुर

कुबुल्लस मानुकुबुल्ल हिकमं कु जीवुकुबुल्ल

मानौ : सुंदर ब्रह्म बिनां कछू नां हिं न ब्रह्म हि

जां निसबै नुम मानौ : ॥२१॥ श्रोत्र कछू और

नां हिं नेत्र कछू और नां हिं नासा कछू और नां हि

रसनां न और है : त्वक कछू और नां हि बाक

कछू और नां हि पाय कछू और नां हि और नां

हि पावुनकी दोर है : मन कछू और नां हि

कछू और नां हि चित्त कछू और नां हिं अहं को

तौ रहै : सुंदर कह तएक ब्रह्म बिन मैं है पु

हि आप ही मैं आप व्यापर हो र ... न आवै ॥

॥३२॥ ५३०॥ ... वेत्तम है पर वि

जगत कौ नाम सुनि जगत न बद थ को क

न बिचार कछू ... र रवि बतावे : ॥ ९ ॥ ... नि

नि के अंगुरि है तैसे ही तेज है तैसे ही तैसे ही पौ

... व्योम है तैसे ही आहि अय मित तैसे

ऊनहींआयौहै : वेदहूंबरनिकैंजगततरुग

ढोकीयौअंतपुनिबेदजरमूलतैंउगयौहै : तै

सैंहीसुंदरयाकौकोऊएकपावैंभेदजगतकौ

नामसुनिजगतमूलायोहै : ॥१॥ऐसोईअ

ज्ञानकोऊआइकैंप्रगटभयोदिबिदृष्टिहरि

लईदेषैचमदृष्टिकौं : जैसैंएकआरसीमहा

बं[illegible]यमांहिरहैसामहैंनदेषैफेरिफेरिदेषैपि

मिलैं : जैसैंएकव्योमपुनिबादरसौंछाइरह्यो

मांहिदेषतदेषतबकुदृष्टिकौं : जैसैंएक

लहीयो : [illegible]सौंछाइरह्योव्योम तैसैंएकब्र

तयहहूंहीहेजगसुंदरहैब्रह्मकौंनदेषैकोऊ

निनताकहांरहा ॥२॥अनछतोजगतअज्ञान

नांतिनामरूपभो[illegible]एकवेतालदेषिक

हैमहीं : जलतैंतरं[illegible]सुपथावैंपाइ

कसोऊतौबिचारिवहहएकजलहैसैं

[illegible]हापुर

हरेहै : सुधअसुधकहैपुनिकौनजुसुंदरबोलै
नमौनधरेहै : ।। ७ ।। खोजतखोजतखोजिरहे
अरुखोजतहेपुनिखोजिहैआंने ।। गावतगा
वतगाइगयेवहुगावतहैअरुगाइहैगांने ।।
देयतदेयतदेयिथकेसबदीसैनहींकहूंगे
रगीकानैं : बूझतबुझतबूझिकेसुदरहेरत
हेरतहेरिहिरानें : ।। ८ ।। प्र्येमसैहैपरिप्र्येमलि
पैनहींप्र्येमपरेपुनितूंहींरहावै : श्रोत्रमैंहैपु
निश्रोत्रसुनैंनहींदृष्टिमैंहैपरिदृष्टिनआवै ।।
बुधिमैंहैपरिबुधिनजानतचित्तमैहैपरिचि
त्तनपावै : सबदमैंहैपरिसबदथकोक
हिसबदहूंसुंदरइरिबतावै : ।। ९ ।। नूमिह
तेसैंहिआपुहूंतेसैहीतेजहूंतैसैहीतेसैहीपौ
नौं : व्योमहूंतेसैंहीव्याहिअयिमितेतेसै

हि ब्रह्म सो जरि तैना: देह संजोग बिजोग
भयो जब आयौ सु कौंन गयौ पुनि कौंना:
जो कहियै तौ कहैन बनै कछु सुंदर जो निगही
मुखमौना: ॥१०॥ एक हि ब्रह्म रह्यो भरपूर तौ
दूसरौ कौंन बतावन हारौ: जो कोउ जीव कहै
प्रवान तौ जीव कहा कछु ब्रह्म तैं न्यारौ: जो क
हैं जीव भयौ जगदीस तें तौ रवि मोहि कहा को
अंधारौ: सुंदर मौन गही यह जानि कै कोउ नक
ह्यौ तिन होइ निरधारौ: ॥११॥ जो हम खोज करैं
आनि अंतर तौ वह खोजन रै ही बिलावै: जो ह
म बाहरि कौं उठि दौर त तौ कछु बाहरि हाथि
न आवै: जो हम काहू कौं पूछत हैं पुनि सोऊ
अगाध अगाध बतावै: ता ही तें कोउ न जानि
सकै तिहि सुंदर कौन सौ गैर रहावै: ॥१२॥

कौन

कौनकहैउसकीमुषबातैं : नैननबं
नश्रासनबासनस्वासनप्पासनग्रातैंम
सीतनघांमनगैरनगमनपुंसनबांमनबा
पनमातैं : रूपनरेषनसेस्नसेषनस्वेतन
पीतनस्यांमननतातैं ।। सुंदरमौनगहीसिध
साधिककौनकहैउसकीमुषबातैं ।। २३ ।।
बेदथकेकहितेंनथकेकहिग्रंथथकेनिस
बासरगातैं : स्रेसथकेसिवइंद्रथकेपुनिषो
जकियौबहुभांतिबिधातैं : पीरथकेश्रोर
मीरथकेपुनिधीरथकेबहुबोलिगिरातैं : सुं
दरमौनगहीसिधसाधिककौनकहैउसकी
मुषबातैं : ।। २४ ।। जोगीथकेकहिजैनथ
केऋष्पतापसथाकिरहेफलयातैं : न्या
सीथकेबनबासीथकेउदासीथकेबहु
फेरिफिरातैं : सेषमसायषश्रोरऊलाइक

करहेमनमैमुसकातैं : सुंदरमोनग
हीसिधसाधिककौनकहैउसकीमुषबातैं:
॥२५॥ इतिआश्चर्यकौअंगसंपुरण अंग
३४॥ सवईया ५५२॥ इतिसुंदरदासजीकासवईया
संपुरण:

~~मीतीमांगशीवदी६~~ संवत १८६५ ॥

[illegible]

109



राम

श्रीगणेससायनम॥दोहा॥मोहितूम्हेवाछिवि
हसिकोजीतैजदुराज॥अपनेअपनेविरद
कीदूहुंनिवाहनलाज॥१॥कानंकूवतम
मुकुटलितातजुंनदीनदपाल॥दुषीहो
हुगेसरलहियेवसतत्रिभंगीलाल॥२॥

राम

रागबिलावल

रेषता॥ लहरदार सिरचीरा सजिकै दिलकूं पे
चमेउआया है॥ जुल्फफंदके अरिगारे विच
अटंतेग सूंमारया है॥ हुसन उजारा है प्यारे
दिलदा अंदर का राहै॥ व्रिजनिधवें सीधरी अ
धूरपर तांनसी नाफाउ है॥ पद्रजेवा
नी॥ आनंदीअ षंडी सरबव्यापक जेवानी
रानी॥ तुही गुरग्यानी विग्या तूही वाकबानी॥
तुहीरिधसिध नकतमूकतकी नीसानी॥ ते
रोनाव सुमरत सूरनर मूनीग्यानी॥ तोसमान
कोउनो ही तूहीयेक अनमानी॥ कीजियेक्रि
पामोपैसांचीयेक महरवानी॥ राधाव्रिजनि
धकी राखूंहुपीकदानी॥

रेखता॥वंसीवारेप्यारेमुसैंक्यामगरुरीकरनींहे॥तूफरजंदनंनदातूऊसेक्यासनमुख होअरनींहे॥तेनेंवोउसयतवयतमेंली याहमारासरनींहे॥व्रिजनिधप्रांनपियारे तूऊसेंअवकाहेकोंउरनाहे॥२॥ ८

ईसइीस्ककेदरदकाअवक्याउपायक रनां॥महवूवकेविरहसेंसवरोजदुष (र) कंन्नरनां॥आतसलगीहेदिलकेविच (र) सूऊताहेमरनां॥व्रिजनिधपियारेज्यांनी अवईस्कसेंक्याटरनां॥ रेखता

नेदफरजेदसेंप्रारीलगीदिलजोमिलावेगा॥जूब नमसतीलीयेतनमेंबिदरदीजोनिभावेगा॥अजी पुवहूसनहेउसकाअदांसेंमुषदिषावेगा॥कीसी नूंसवदनअेसानपायाहेनपावैगा॥ वीप्याउ

कचस्मोदीसजनैलियोमेंआवेगा ॥ निजर
नरदेखिकेजानीतपततनकीबूझावेगा।
खूसीदीलआनमहलोमेवहकेसरपानषा
वेगा ॥ मजेमेंईस्कदीबातेसनेगाओरसु
नावेगा ॥ खूबमहबूबहैमेरा मरूछतियो
लगावेगा ॥ सूरतदोहोयगीहासीलबिर
हुबदूरजावेगा ॥ जिगर बिचदरदहैमारी
उसीबिन कोन मिटावेगा ॥ जयमकीयादि
वानेमेंवहीबेदनगमावेगा ॥ रसकनो बिद
प्यारेसेकोईमऊकूमिलावेगा ॥ कर कूरबा
नजिंदगानीमेरावहजीवजिलावेगा ॥

पद नैसखी ॥ जिलकपडीद्विगबोकेकी ॥ मोर
मूकरसिरधरैत्रिभंगी ॥ हियेचूनीछिबकोके
की ॥ कर लकूरी लियेंआऊंठाऊं ॥ घोरसां
करीनांकेकी ॥ दधकोदानलेतव्रिजनिधजी ॥
गाररसीलीहांकेकी ॥ पद जैरू ॥

वलकेमोर भागजागेसांवैरासजन आपा ॥
सोहनीसूरतरसभरीअखियासदिलकोरंग
सवापा ॥ सोदेभीनेबालसजनकेसषीयो
गरललाया ॥ मनकीमूरादपूजीजीवघरस्वा
लपाया ॥ तनमनधनसत कीचीपाजीवरल
बोलगवाया ॥ पद धनासरी

अरेदिलजानीछोलनोआमी ॥ तूंदेखण नूंचाव
घनेरा टूकमूखऊंउघलामी ॥ मेरीगली तरआरेस्या
नेनेसीफेरसुनोमी ॥ कूरबानीजीदहीब्रजनिधपर
नाहकजिदतरसामी

॥श्रीराम॥

112

रागभैरवी दिलदामहबूब दिलमेंप्यारे॥ ग्यानजत्तीपगलीयेंहाथमें परगट दीसेबदनमें॥ चरमतफिरेंभेदनहींपावे सतगुरबतायेपलमें रे आतूर होकरमिलले पीवसें मिलबैठोउस रंगमेंरे भगवानदासयहपीवदामला चसें रायतरमेंरे॥ रागकाफी

किस्नांयारहमारा तूज बाजूमानूं औरजीगरस कलविकारा॥ मादरपदरबिरादरतूहीअनी जखेस हमराहीमराहेतूहीसकजिगरनेस॥मो रमूकरकरनकूंउलसूबनीजारा॥मीरमा घोसरनआयेदासतूम्हारा॥

सवैया मयहेरतदीठिहिराइगईजवतो तूमआवनआधिवदी॥ वरसौकित्तसहू घनआनंदप्यारेवछावतहेप्रतिसोचनदी हिवराप्रतिओटिठदेगकीआंचचूवावन ओसनमैंनमदी कविओसरिआयमीलोगेस जानतोवैसवहीरलोजातछदी

113

114

श्रीरामजी

ग्राम धसत: प्रौपद की ६६ ३ र ६ पा

न ठ पं ल ।।तां धीकी मुगहीकरणी

सराहाम घरणी ह्रस ६ मघरणा

फकुझासी ।।३ पार ।।। का बारम

बाटकां ननशपा म छिंद्र यूंक राजन को

ए पर मात रा ~~पंडीतत~~ लीकतां लीलाक

रणी मा ही पर राम रा ६ धा ।।। र

सिर चार्काल ।।। बाणवसी ।।।

॥श्रीरामजी

॥ यारधासत संवत्‌ पइस्याकी
नघद्धीकाप्यकी ग्रन्थ [illegible] कार्ज
फकजासी [illegible] का ज्ञ धातुराम
वर कक [illegible] पहरटताई पांधरीका
दामभरकुम [illegible] मधरउपकु
कक [illegible] धरद्दा र्जकपुफमटी ३ नद्दा ग
गपामभव [illegible] णहजी [illegible] णाद्धणामध
रश्राधानीचराव जाजन्नताराम [illegible]

117

॥श्रीराम॥

पीनराग ॥ देयेरीनेनातेरे चंचलचं
वालमीनषंजन वारफेरे सीपसूतल
मैंछमौंछ जंबुजामनेरे जलयरिकें
जकंजयरिअलिमुसिसनघराघन
घेरे कहीनजातगततेरी मृगछौनान
रकीनेन्वेरे नीजामदीनकेलालतेरी
छिबपरि वीन्यारन आवेनीरे
रामोवीन कोईमोलीरे बीनोरामरद्यनाथ
...इनोलीरे सोहाकरलेमूरलेमत
...लमीधारी प्रतेरासोराव
...आवेहारी सोनेहा

गरु लेकथीर सोनेद धरवार

पेकरती सोनां ना [illegible]मीगारेना

बुगमरतीवार [illegible]हल कवीरस

नोजाइसाधो पापद हेनिरबाणी

पापदवी सोनीद्राकरहे सोनरतन

रकमसमांना ॥ ट ३ जीवन

केकारनै तानु क्यालगीमनमसती चा

वेलातेरादेष देष करमोतनीमालाहस

ती गाफिल होयजलानो होगापलपल

घावेक सती दोलतदुनियांमालध

जानोजोडजोड कीयामसती [illegible]

सबद बीचारोमनमे घाउक

118

आतम राम सकल में दीसै कहे कबीर

गसती ।।

छपै
कवत॥ जपतपसंजमजातजात
गुरज्ञानगउतम मउकरमधरम
पुनिजाततूरतनगिजातनछ्रुपन॥
प्रितजानपरतीतजातचूजरंगरूपश्री
रूवीजवल॥ श्रीचंदश्रीपालके
स्रौनसकलश्रीरसरमसव प्रना।
मिनजवकीजयेजातवसतयेतीतरन॥

...पलपव
...मालप
...ती...
...उछ